# आत्मिक साधन

फरवरी 2010

समकालीन अगुवाई चुनौतियाँ

## वि ष य - सू ची

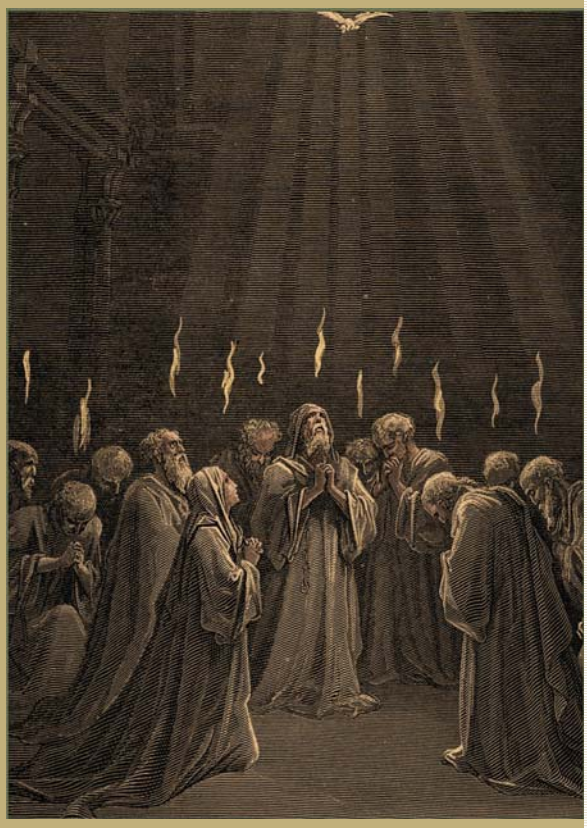


1. **आत्म–अगुवाईः भीतर बाहर से नेतृत्व** 3
   *द्वाराः एरिक डी. रस्ट*
   *क्या प्रचार-कार्य उस वर्तमान सामाजिक असमंजसता पर ध्यान दिये बिना निरन्तर जारी रह सकता है जिसका सामना लोग कर रहे हैं? भूतकाल का प्रश्न (और उसका वैसा ही जवाब) कैन की आवाज़ में अभी भी भेदनेवाला है: ''क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?''*

2. **प्रभावशाली व्यक्तिगत गवाही के लिये बाइबल सम्बन्धी सिद्धान्त और प्रथाएं** 6
   *द्वाराः रेण्डी हर्स्ट*
   *ये सिद्धान्त व्यक्तिगत सुसमाचार-प्रचार की शिक्षा देने के लिये एक ऐसे बाइबल सम्बन्धी ढांचे को उपलब्ध कराते हैं जो किसी भी विश्वासी की जीवन पद्धति का एक अनिवार्य भाग बन सकता है।*

3. **आगे बढ़ने में असफलता** 10
   *द्वाराः मार्क बैटरसन*
   *यदि हम अपनी असफलताओं को स्वयं को सीमित करने का अवसर देंगे तो वे हमारा नाश कर सकती हैं। परन्तु असफलताओं का सही रीति से संचालन वह श्रेष्ठ चीज़ है जिसे किया जा सकता है।*

4. **निर्णयों को योगफल में बदलना और योगफल को शिष्य-निर्माण में (नई परिवर्तितों की देख-रेख)** 14
   *द्वाराः जिम हॉल*
   *यदि कलीसियाओं को अपने में आत्मिक मृत्यु की सूचना को नियन्त्रण में रखना है तो नये विश्वासी को शिष्य बनाना अनिवार्य है। उन व्यावहारिक चरणों पर ध्यान दें जो निर्णयों को योगफल में बदलेंगे और योगफल को शिष्य बनाने में।*

5. **जीवन के आरम्भ को महत्व देनाः जैविक और पूर्व-वैवाहिक परामर्श** 19
   *द्वाराः क्रिस्टीना एम. एच. पॉवेल*
   *नव दम्पत्तियों की परिवार नियोजन विषयों पर मार्गदर्शन करते हुए सहायता करना, पास्टरों के पास एक मसीही घर की नेव रखने का विशेषाधिकार है।*

6. **नये तरीकों से आत्मा के बपतिस्मे को संप्रेषित करना** 23
   *द्वाराः गेरी गोर्गन*
   *याजकीय देख-रेख की सबसे बड़ी चुनौतियाँ*

7. **चमत्कारों का अवसान?** 26
   *द्वाराः डबल्यू. ई. नुन्नेली*
   *बाइबल सम्बन्धी, अतिरिक्त बाइबल-सम्बन्धी, थियोलोजिकल, और तार्किक परिप्रेक्ष्यों से प्रेरितों का युग*


Life Publishers International

एक याजक ने सुना कि उसकी कलीसिया के उपयाजक (डीकन्स) उसे सम्मिलित किये बिना ही सभा कर रहे हैं, जो कि कलीसिया के नियमों के विरुद्ध किये जाने वाला कार्य था।

*क्यों?* वह हैरान था। क्या वे *मेरी अगुवाई* से असंतुष्ट हैं? *क्या वे चाहते हैं कि मैं अपने पद को छोड़ दूँ?* उसने सोचा, *उन्हें ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है।*

उसने बिना बताए उनकी सभा में भण्डा–फोड़ करने का निर्णय लिया। ''क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुम मुझे बताए बिना सभा क्यों कर रहे हो?'' उसने पूछा।

शर्मिन्दगी के साथ एक डीकन (उपयाजक) ने जवाब दिया, ''पास्टर, आपका जन्मदिवस निकट है। हम आपके लिए एक विस्मय में डालने वाली पार्टी और उपहार देने की योजना बनाना चाहते थे।''

अब शर्मिन्दा होने की बारी पास्टर की थी। उसकी पूर्वधारणा पूर्ण रूप से गलत रही थी, जिसके कारण उसने गलत निष्कर्ष निकाला।

कठिन समयों में हम परमेश्वर को लेकर जो सोचते हैं वह सत्य नहीं होता। क्या आप गहन परीक्षा का सामना कर रहे हैं? आप एक या दो पूर्वधारणाएं बना सकते हैं: परमेश्वर असफल होगा या वह आपकी आवश्यकता को पूरा करेगा।

**जॉर्ज ओ. वुड**

*आपके हृदय में एक भजन*


# लाईफ पब्लिशर्स इन्टरनेशनल



© Copyright Life Publishers 2009



लाईफ पब्लिशर्स, स्प्रींगफील्ड, मिसौरी, यूएसए, द्वारा प्रकाशित



सर्वाधिकार आरक्षित।


अब आप ऑनलाइन 'आत्मिक साधन' को 13 भाषाओं में प्राप्त कर सकते हैं। 'आत्मिक साधन' की वैबसाइट तक पहुँचकर उचित झण्डे को दबाएं। आप अपनी मनचाही भाषा का चुनाव 13 भाषाओं में से कर सकते हैं: तमिल, बंगाली, मलयालम, हिन्दी, फ्रैंच, रूसी, रोमानी, हंग्रेन, क्रोटिएन, जर्मन, स्पैनिश, पुर्तगाली या यूक्रेनी।

आप 'आत्मिक साधन' को ऑनलाइन पढ़ने का अवसर पा सकते हैं या आप अपनी सुविधानुसार फाइलों को डाऊनलोड भी कर सकते हैं। आप निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं: http://www.enrichmentjournal.ag.org

किसी प्रश्न के जवाब या अतिरिक्त जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
EnrichmentJournal@lifePublishers.org.

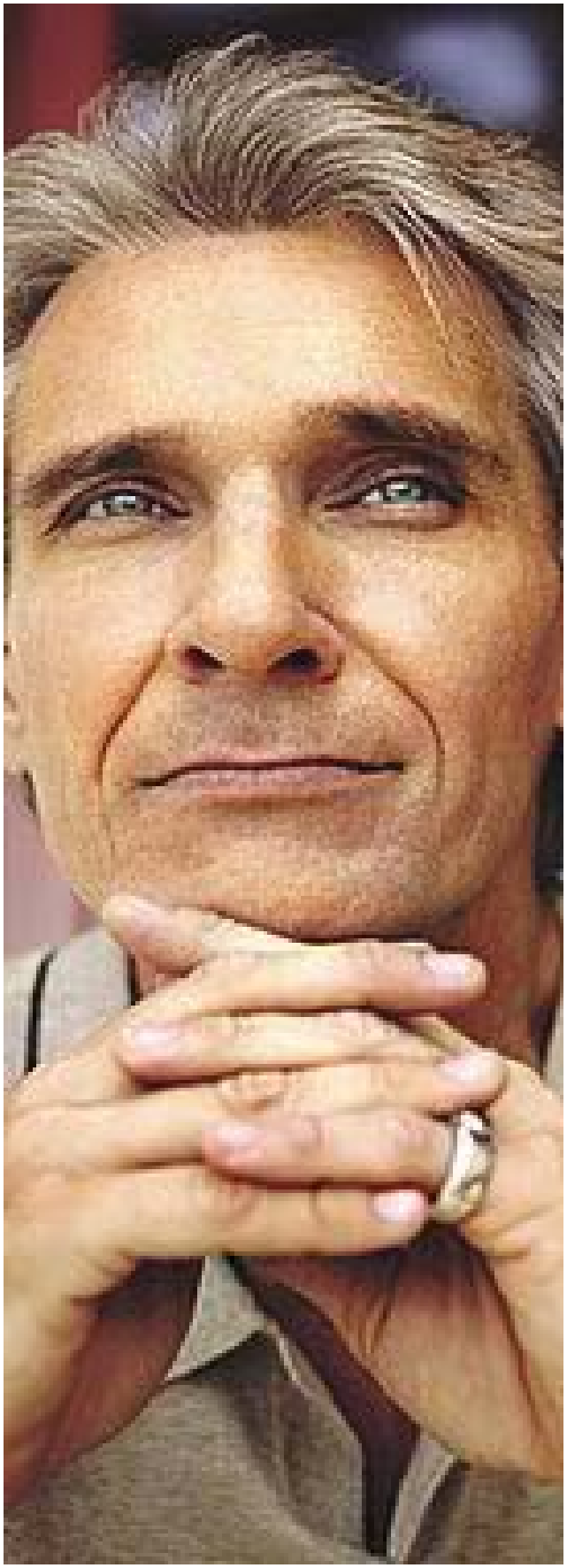

# आत्म-अगुवाई: भीतर बाहर से नेतृत्व

द्वारा: एरिक डी. रस्ट

आत्मिक दान प्राप्त अगुवों के साथ गोल मेज़ पर अगुवाई का वचन कहना और इससे बातचीत के अवसर उस कार्य में परिवर्तित हो जाएंगे जिसे अगुवों को दूसरों का नेतृत्व करने में करना है। कलीसियाई अगुवे अपना अधिकांश सप्ताह नेतृत्व करने में बिताते हैं। तौभी हमारे श्रेष्ठ अगुवे बनने के प्रयास में, हम प्राय: सबसे बड़ी अगुवाई चुनौती को अनदेखा कर देते हैं जिसका सामना कभी हमें करना होगा—हम स्वयं। हम प्राय: स्वयं को व्यवस्थित करने की अवहेलना करते हैं क्योंकि आत्म-अगुवाई दूसरों का नेतृत्व करने की तुलना में अधिक कठिन है।

अभी यह सुने बिना एक सप्ताह बीत भी नहीं पाया है कि हम दूसरे अगुवे के अगुवाई से अयोग्य होने के बारे में सुनते हैं। हम इसका दोष यौन समझौते, वित्तीय अनुपयुक्तता, शक्ति प्राप्त करने की इच्छा और एक बेकार अगुवाई पर देते हैं। वे असफलताएं, तथापि, एक गहन व्यक्तिगत असफलता के केवल सार्वजनिक लक्षण हैं। यदि हम समस्या की ओर आगे देखें, तो सामान्यता हम अगुवे को अपने व्यक्तिगत जीवन की उपेक्षा करते हुए पाते हैं।

अपनी पुस्तक *'भीतर बाहर से नेतृत्व'* में सैमूएल रीमा कहती हैं: ''जिस तरह से एक अगुवा अपने व्यक्तिगत जीवन को संचालित करता है, वास्तव में, इसका प्रभाव उसकी प्रभावी सार्वजनिक अगुवाई पर अभ्यास करने की योग्यता पर पड़ता है। आत्म-अगुवाई और सार्वजनिक अगुवाई के बीच एक पारस्परिक संबन्ध है।''

नये नियम का लेखक-पौलुस, इस विषय को अच्छी तरह से समझ गया था: ''मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं'' (1 कुरिन्थियों 9:27)। पौलुस समझ गया था कि परमेश्वर ने उसे अपने जीवन को क्रम में रखने के लिये बुलाया है।

## आत्म-अगुवाई का महत्व

अगुवों को पोषण के प्रति सावधान रहने के साथ-साथ अपने व्यक्तिगत जीवनों को व्यवस्थित करना चाहिये। अगुवाई चक्रों में इसे आत्म-अगुवाई के रूप में जाना जाता है। प्रभावशाली अगुवों को अन्य किसी क्षेत्र में विकसित होने की अपेक्षा अपनी अगुवाई निपुणता को विकसित करने के लिए उर्जा का अधिक निवेश करना चाहिए।

अगुवाई विशेषज्ञ डी हॉक का कहना है कि आत्म-अगुवाई को एक अगुवे के समय का 50 प्रतिशत लेने की आवश्यकता है। यदि कलीसियाई अगुवे हॉक की सलाह को गंभीरता से लेंगे और अपना आधा सप्ताह आत्म-अगुवाई में निवेश करेंगे तो क्या होगा? परमेश्वर चाहता है कि एक श्रेष्ठ अगुवा बनने के लिए हम अपने स्वयं के जीवनों में व्यक्तिगत मास्टरी का विकास करें।

## चरित्र रचना

व्यक्तित्व और प्रतिभा (वरदानों) की पहचान, मान्यताओं का स्पष्टीकरण, बल और कमज़ोरियों का सूक्ष्म परीक्षण, संप्रेषण, निपुणताओं में सुधार और प्रभावशाली समय व्यवस्था; वे महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जहां अगुवों को अपनी शक्ति को केन्द्रित करना ज़रूरी है। जबकि अगुवाई के दर्जनों पहलू हैं, उनमें से कोई भी अगुवे के चरित्र के समान जटिल नहीं है। चरित्र के बिना अगुवे कुछ नहीं हैं। हमारा चरित्र हमारे विषय में बताता है। केवल यह निर्धारित करने के बाद कि हम कौन हैं हम जान सकते हैं कि कैसे बढ़ना है। मसीही अगुवों के लिए चरित्र एक खेल की गेंद के समान है।

एक नैतिक चरित्र के बिना अगुवे का सर्वनाश हो जाएगा। वित्तीय कमी को पूरा किया जा सकता है। वे अगुवाई निर्णय जो अगुवे द्वारा की गई प्रतिज्ञा के अनुसार कार्य नहीं करते, उन्हें बचाया जा सकता है। परन्तु चरित्र-दोष एक अगुवे का नाश कर सकता है। नैतिक और नीतिपरक समझौते से उबरना असंभव हो सकता है। एक बार एक अगुवे के पथभ्रष्ट हो जाने पर उसका ठीक होना बहुत ही कम होता है। लोग उन ही अगुवों का अनुसरण करेंगे जिनमें उच्च स्तर की निष्ठा होगी।

एण्डी स्टैनली ने इसे स्पष्ट रूप में कहा है: ''हम उस चीज़ के नाश से सर्वदा एक निर्णय, एक शब्द, एक प्रतिक्रिया की दूरी पर होते हैं जिसे विकसित होने में वर्षों लगे होते हैं।''परमेश्वर के लिए की गई 20 या 30 वर्ष की सेवकाई एक समझौते का निर्णय लेने से नष्ट हो सकती है।

जब एक अगुवे का त्रुटिपूर्ण चरित्र प्रगट होता है, तो समस्या सामान्यता उसकी निष्ठा की कमी से उत्पन्न होती है। आप के भीतर की निष्ठा ही आपके बाहरी रूप को प्रगट करती है।

एरविन मैकमानस निष्ठा की व्याख्या करने को एक तरबूज़ की समीक्षा का प्रयोग करते हैं।आपने संभवत: एक तरबूज़ खरीदा हो। जब आप तरबूज़ उत्पादन के स्थान पर हाथ में तरबूज़ लिये खड़े हों, तो आपको तरबूज़ का केवल ऊपरी छिलका ही दिखाई देता है। छिलके को देखने के पश्चात् ही आप अपना कठिनाई से कमाया हुआ धन खर्च कर देते हैं। घर पहुँच कर जब आप इसे काटते हैं, तो आप इसके भीतर क्या देखने की अपेक्षा करते हैं? तरबूज़! आपने तरबूज़ की निष्ठा (ईमानदारी) पर भरोसा किया। यदि तरबूज़ को काटने पर आपको उसमें केला दिखाई दे तो क्या होगा? ऐसा कभी नहीं होगा क्योंकि तरबूज़ में निष्ठा अथवा ईमानदारी है। एक तरबूज़ भीतर से वही होगा जो वह बाहर से होने का दावा करता है।

आपके बारे में क्या? यदि कोई आपके बाहरी छिलके को उतारे, तो उसे क्या मिलेगा? क्या वह आपके भीतर वो पाएगा जिसके होने का दावा आप करते हैं? यहां हम लोगों के एक प्रतीक के रूप में तरबूज़ को देखते हैं—अपनी प्रकृति से ही तरबूज़ में निष्ठा होती है। ईमानदारी अथवा निष्ठा लोगों तथा यहां तक कि अगुवों में भी स्वाभाविक रूप से नहीं आती है। इसे विकसित किया जाता है।

आत्म-अगुवाई पर अभ्यास करने वाले अगुवे अपने जीवनों में सामंजस्यहीनता के प्रति जागरूक रहते हैं। इन सामंजस्यहीनता के छोटे होने पर उनकी अवहेलना

***एक तरबूज़ जैसा दावा अपने बाहरी रूप के लिए करता है वैसा ही वह भीतर से भी होता है। क्या आप भी ऐसे हैं?***

करने के बजाए वे इस बात का मेल करने का चुनाव करते हैं कि जैसा वे विश्वास करते हैं उसके अनुसार वे कौन हैं। वे समझ जाते हैं कि जीवनों को छोटे सन्दूकों में कक्ष बनाकर नहीं रखा जा सकता है। हमें पूर्ण प्राणी के रूप में बनाया गया है। जो हम नीजि रूप में हैं उसे हमारे सार्वजनिक रूप में होने से अलग नहीं किया जा सकता है।

अगुवे होने के कारण, हमें निर्धारित करना चाहिए कि हम क्या बनना चाहते हैं और उसके बाद अपने जीवनों को इस प्रकार से रखें कि हम वैसे ही हो सकें। यह सरल नहीं है क्योंकि यदि आप वैसा व्यक्ति नहीं बनना चाहते हैं तो यदि अपनी युक्ति पर ध्यान दें तो आप स्वाभाविक रूप से वैसे ही व्यक्ति बन जाएंगे। यीशु ने कहा, ''क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपने प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा'' (मत्ती 16:25)। आत्म-अगुवों को अपने भीतर पाई जाने वाली उन प्रवृत्तियों के लिए मरना होगा ताकि वैसे बन सकें जैसा होने के लिए परमेश्वर ने उन्हें बनाया है। परमेश्वर हमें भीतर-बाहर अगुवे होने के लिए बुला रहा है—वे अगुवे जो बाहरी रूप के बजाए भीतरी रूप के आधार पर परिभाषित किये जाते हैं।

कलीसियाई अगुवों के उपाधि प्राप्त करने के कारण; उनके जीवनों में घमण्ड का आना स्वाभाविक हो जाता है। कलीसियाई अगुवों के यौन पाप या शक्ति खेल में गिरने पर, उसकी जड़ प्राय: घमण्ड ही होती है। रोमियों 12:3 हमें स्मरण कराता है, ''जैसा समझना चाहिए, उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार विश्वास दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।'' पहला पतरस 5:5 हमें सावधान करता है: ''परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।''

कलीसियाई अगुवों को यह स्मरण कराया जाए कि सेवक के आत्मिक अनुशासन पर अभ्यास करते हुए वे जानें कि वे कौन हैं। जब अगुवे सेवा में अपने घुटनों पर आते हैं और सेवा का तौलिया उनके कंधे पर होता है, तब वे इस बात को स्मरण करते हैं कि यीशु ने सेवक होने में महानता को पाया। यीशु ने अपनी धार्मिकता पर कभी घमण्ड नहीं किया; उसने अपने स्तर को सेवक होने में ही पाया। अपने छोटेपन में वह महान बना। छोटापन और सेवक होना अगुवों के लिए सुविधाजनक शब्द नहीं हो सकते हैं, परन्तु ये वे शब्द हैं जो हमारे अगुवे के लिए सुविधाजनक थे।

अपनी कमज़ोरी को स्वीकार करना घमण्ड को दूर रखने का दूसरा सर्वश्रेष्ठ तरीका है। अपनी कमी को स्वीकार करने के लिए व्यक्तिगत सुरक्षा और दीनता की आवश्यकता होती है। आत्म-अगुवाई पर अभ्यास करने वाले अगुवे अपनी कमज़ोरियों को मानने के लिए तैयार रहते हैं। अपनी कमज़ोरी का ढांककर घमण्ड का आनन्द उठाने के बजाए वे उसे स्वीकार करते तथा उन लोगों को अपनी कमज़ोरी को व्यवस्थित करने के लिए बुलाते हैं जिनमें एक पूरक की क्षमता होती है।

## हमारे चरित्र का रक्षा-कवच

पारितोषिक अधिक होने के कारण अगुवों को स्वयं का विशेषज्ञ बनना चाहिये। व्यवसायी अगुवों के लिए, डॉलर संतुलन को दिखाता है। कलीसियाई अगुवों के लिए भावी सेवकाई और अनन्तता संतुलन को दिखाते हैं। जैसा कहा भी कहा गया है कि एक व्यापारी और राजनेता अपनी लापरवाही के कारण पीड़ा में गिरते हैं, एक कलीसियाई अगुवे के गिरने का मूल्य हमेशा बहुत बड़ा होता है।

ऑरलेण्डो मैजिक के प्रमुख राष्ट्रपति और मसीह के अनुयायी, पेट विलियम्स हमारे चरित्र के सुरक्षा-कवच के लिए छह विचारों को देते हैं। ये छह मार्गदर्शिकाएं उस अगुवे के लिए एक उपयोगी ग्रिड को देती हैं जो सर्वश्रेष्ठ रूप में अपना स्वयं का नेतृत्व करना चाहता है।

**1. देह और प्राण के पुन:स्थापन और अनुचिन्तन के लिए समय लें।** कुछ कलीसियाई अगुवे अपनी सेवकाइयों में इतनी तीव्रता से कदम लेते हैं कि उनके पास स्वयं के लिए समय नहीं होता। यीशु ने भीड़ से अलग होकर पिता के साथ एकान्त समय बिताने के द्वारा इसका एक नमूना दिया। आत्म-अगुवे नियमित आधार पर प्रार्थना करने व वचन को पढ़ने का समय निकालते हैं। एक अगुवा अपने अनुयायियों को एक सुव्यवस्थित हृदय सर्वोच्च उपहार के रूप में दे सकता है।

इसके अतिरिक्त, अगुवों को अपनी देह की देख-रेख करने की आवश्यकता है। कई पास्टरों के लिए स्वास्थ्य एक स्वीकार न किये जाने वाली सच्चाई है। बाइबल हमें हमारी देहों के द्वारा परमेश्वर को आदर देने की चुनौती देती है (1 कुरिन्थियों 6:20)। अच्छा स्वास्थ्य हमें परमेश्वर की इच्छा को खोजने के लिए उर्जा और क्षमता प्रदान करता है। सही भोजन खाना और नियमित रूप से व्यायाम करना प्रत्येक अगुवे की जीवन-पद्धति का एक भाग होना चाहिए।

**2. नीतिपरक चुनावों और परीक्षा का सामना करने पर, आपने दूसरों के लिए जो उदाहरण रखा उस पर ध्यान दें।** उन सभी के बारे में सोचें जो आपको देख रहे हैं—बच्चे, मित्र, परामर्शदाता और कलीसियाई सदस्य। आपके निर्णय उन्हें कैसे प्रभावित करेंगे? कलीसियाई अगुवाई के साथ नैतिक अधिकार का आत्मिक उपहार आता है। एक ही क्षण में हमारा नैतिक अधिकार समाप्त हो सकता है। परीक्षाओं के द्वारा खटखटाए जाने पर हमें स्वयं से पूछना है कि परीक्षा को हाँ कहने पर यह उन लोगों को दुखी करेगा जो हमें देखते हैं।

**3. विश्वासयोग्य मित्रों के एक छोटे समूह के प्रति स्वयं को ज़िम्मेदार बनाएं।** एकाकी होने का जोखिम उन अगुवों के लिए अधिक है जो ज़िम्मेदारी अथवा लेखा देने के सम्बन्ध में हैं। आत्म-अगुवाई एक नौकरी को अकेले किये जाने के समान बड़ी है। अगुवों को लोगों के एक ऐसे छोटे समूह को आमंत्रित करने की आवश्यकता है जिन्हें वे जानते हों और नियमित रूप से उनके साथ जांच करने के प्रति विश्वासयोग्य रहे हों तथा कठिन प्रश्न पूछने वाले हों। हम सभी अक्सर स्वयं से इतना अधिक झूठ बोलते हैं कि अन्तत: हम अपने झूठों पर ही भरोसा करने लगते हैं। मित्रों को इतनी आसानी से उल्लू नहीं बनाया जा सकता है।

**4. निष्ठा अथवा ईमानदारी पर केन्द्रित रहें न कि रूप पर। जो अगुवे अपने भीतरी जीवन का लगातार पोषण करते रहते हैं वे जीवन में उन परिस्थितियों से ऊपर उठते हैं जो उन्हें नीचे खींचने का प्रयास करती हैं।** 'रिफलेक्टिव लीडरशिप' के लेखक डा. रॉबर्ट टैरी का मानना है कि "हमारी संपूर्ण चुनौती वास्तविकता अर्थात् प्रमाणिकता की है — स्वयं में, अपने संबन्धों में, संसार में सत्य और वास्तविक बने रहना।"

**5. अपने विश्वास में गहराई से बढ़ें। मसीह के अनुयायी होने के कारण, हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर के आत्मा में मानव हृदय में आत्मिक परिवर्तन लाने की सामर्थ है।** परमेश्वर के आत्मा के बिना चरित्र विकास के कार्य को पूरा करना हमारे लिए बहुत कठिन हो जाता है। मसीह के साथ हमारे सम्बन्धों का पोषण और पवित्र आत्मा के साथ बने रहना हमें हमारे जीवनों में परमेश्वर की गतिविधि पर निर्भर रखता है। हम जितना अधिक परमेश्वर के प्रेम की गहराई में जाते हैं, दूसरों के लिए हमारा प्रेम भी उतना अधिक गहरा होता जाता है और हम दुष्ट की ओर से सुरक्षा का अनुभव प्राप्त करते हैं।

**6. चारित्रिक त्रुटियों और छिपे हुए पाप से दृढ़ता और बिना किसी समझौते के साथ निपटें।** सभी अगुवों का एक अंधकारमय पक्ष होता है। कुछ लोगों को प्रसन्न करने वाले होते हैं। कुछ अपना नाम विख्यात करना चाहते हैं। कुछ अगुवों के क्रोधी विषय या सहनिर्भर रहने की प्रवृत्तियां होती हैं। ये विषय एक अगुवे की अगुवाई करने की योग्यता को प्रभावित करने वाले होते हैं। बिल हायबल्स अगुवों से पूछते हैं, "तुम्हारे भीतरी विषयों का समाधान करने का उत्तरदायी कौन है जिससे तुम्हारे बेकार कामों का प्रभाव नकारात्मक रूप से तुम्हारी कलीसिया पर न पड़े? आप ही हैं।" आत्मिक अगुवों को इन चीज़ों को छांटना है। हमारी कलीसियाएं इस पर निर्भर हैं।

## निष्कर्ष

एक बड़ा प्रश्न: "मेरे जीवन की कौन सी छोटी चीज़ के बड़ी चीज़ के रूप में विकसित होने की संभावना है?" बेकार चरित्र एकदम से दिखाई नहीं देते हैं। इनका आरम्भ छोटे रूप में होता है—प्राय: यह इतना छोटा होता है कि इस पर ध्यान भी नहीं दिया जाता। इस प्रकार, एक छोटी सी चीज़ पर ध्यान न दिये जाने पर वह विशाल रूप धारण कर लेती है जो अगुवे के जीवन पर नियंत्रण करने लगती है। कैंसर के समान बुरे चरित्र को भी 'छोटे रूप' में ही हरा देना श्रेष्ठ होता है।

परमेश्वर ने अपनी असीम बुद्धि में कलीसिया को अगुवों के हाथ में सौंपने का चयन किया। उसने स्पष्ट अपेक्षाओं के साथ ऐसा किया है। वह चाहता है कि हम असाधारण अगुवे बनें। वह हमारी अगुवाई प्रवीणता पर सान लगाना चाहता है कि हम प्रभावी रूप से संप्रेषण करने के साथ-साथ अपने दलों की व्यवस्था भली-भांति कर सकें। परन्तु इस सब के अतिरिक्त परमेश्वर चाहता है कि उसके अगुवे आत्म-अगुवे की कला में विशेषज्ञ बनें। ■

**एरिक डी. रस्ट,** प्रमुख पास्टर, केदार हिल चर्च (असेम्बलीज़ ऑफ गॉड), सैंडपॉइंट, इडाहो

# प्रभावशाली व्यक्तिगत गवाही के लिये बाइबल सम्बन्धी सिद्धान्त और प्रथाएं

द्वारा : रेण्डी हर्स्ट

एक तात्कालिक अध्ययन के अनुसार कि केवल 10 प्रतिशत ही जिन्होंने मसीह का अनुसरण करने का निर्णय लिया है कलीसिया में ऐसा करते हैं। इसके अतिरिक्त, एक कलीसियाई सुसमाचार प्रचार आऊटरीच की सर्वोच्च प्राथमिकता पूरे सप्ताह भर इसके सदस्यों की व्यक्तिगत गवाही होती है।

अन्य अध्ययन प्रगट करता है कि मण्डली का 10 प्रतिशत से कम व्यक्तिगत प्रचार कार्य करता है। अधिकांश मसीही दूसरों को यीशु मसीह के बारे में क्यों नहीं बताते हैं? अधिकांश के अनुसार इसका कारण भावशून्यता है- जिसकी मसीही परवाह नहीं करते। परन्तु अधिकांश लोगों के लिए इसका कारण उनमें भरोसे की कमी है। मेरा मानना है कि मसीह के अनुयायी प्रभावी गवाह बनना चाहते हैं परन्तु वे अपर्याप्त, भयभीत और अपने विश्वास के बारे में बताने में अधिक डरे हुए होते हैं, विशेषकर उस किसी को जिसकी मसीही पृष्ठभूमि न हो।

यीशु ने कहा, "तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा" (यूहन्ना 8:32)। परमेश्वर का प्रेरित करनेवाला वचन प्रचार-कार्य की प्रकृति के बारे में क्या कहता है यह जानने पर ही विश्वासी अपने अपर्याप्तता के भाव या व्यक्तिगत गवाही से संबन्धित भय से स्वतन्त्र होंगे।

कुलुस्सियों में, पौलुस प्रचार-कार्य को इस तरह से संबोधित करता है जो विश्वासियों की उन गलत धारणाओं और भावनाओं से स्वतन्त्र होने में सहायक होगा जो कि उनमें मसीह के बारे में बताने को लेकर हो सकता है। संबद्ध प्रचार-कार्य में विश्वासियों की सहायता हेतु वह एक सरल बाइबल संबन्धी और व्यावहारिक उपगम्य को देता है।

प्रचार कमीशन के लिए बनाया गया सबसे तीव्र निवेदन सामग्रियों के लिए है जिसमें व्यक्तिगत प्रेरणा और गवाही में प्रशिक्षण के विषय आते हैं। पास्टर तथा कलीसियाई अगुवे पौलुस द्वारा बताए गए सिद्धान्तों और प्रथाओं को कलीसिया में विविध प्रकार से सिखा सकते हैं। ये सिद्धान्त व्यक्तिगत प्रचार कार्य की शिक्षा देने के लिए एक बाइबल संबन्धी खांचा प्रदान करते हैं जो एक विश्वासी की जीवन प्रणाली का भीतरी भाग बन सकता है।

## प्रेरित पौलुस का प्रस्ताव

प्रचार कार्य एक विकल्प नहीं है; हमें इसे कैसे करना है। वही बाइबल जो हमें लोगों तक सुसमाचार के साथ पहुँचने की आज्ञा देती है, वही यह भी बताती है कि इसे कैसे करें।

पौलुस ने कुलुस्सियों की कलीसिया के लिए एक प्रभावशाली मसीही गवाही के संबन्ध में एक सम्पूर्ण, तौभी, व्यावहारिक शिक्षा दी है। पत्र में उसका अन्तिम निर्देश इस बारे में था कि मसीहियों को गैर-विश्वासियों के साथ कैसा व्यवहार करने की ज़रूरत है, जिन्हें वह उपयुक्त रूप में "बाहरवाला" कहता है (4:5)। मैं पौलुस के प्रस्ताव को *उत्तर प्रचार कार्य* कहता हूँ (देखें पद 6)। "प्रार्थना में लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उस में जागृत रहो। और इसके साथ ही साथ हमारे लिये भी प्रार्थना करते रहो, कि परमेश्वर हमारे लिये वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे, कि हम मसीह के उस भेद का वर्णन कर सकें जिसके कारण मैं कैद में हूँ। और उसे ऐसा प्रगट करूं, जैसा मुझे करना उचित है। अवसर को बहुमूल्य समझकर बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करो। तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो, कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से 'उत्तर' देना आ जाए" (कुलुस्सियों 4:2-6, अतिरिक्त बल दिया गया है)।

> *व्यक्तिगत प्रचार-कार्य में अपने भाग को पूरा करने के लिए हमें स्वयं को अनुशासित करना है, उसी समय में, परमेश्वर पर निर्भर रहते हुए जिसे केवल वही कर सकता है।*

पौलुस के निर्देशों में हम पाते हैं कि प्रभावशाली गवाही में दो सिद्धान्त आते हैं 'निर्भरता' (पद 2-4) और 'अनुशासन' (पद 5, 6)। व्यक्तिगत प्रचार कार्य में अपने भाग को पूरा करने के लिए हमें स्वयं को अनुशासित करना है, उसी समय में, परमेश्वर पर निर्भर रहते हुए जिसे केवल वही कर सकता है।

पौलुस अपने पत्र के आरम्भिक भाग में इस ईश्वरीय/मानव अंतरंगता को व्यक्त करता है: "और इसी के लिये मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ" (कुलुस्सियों 1:29)। पौलुस मानव प्रयास का समर्थन कर रहा है जो परमेश्वर

पर निर्भर है (''उसकी शक्ति के अनुसार'')।

निर्भरता और अनुशासन के सिद्धान्तों के साथ-साथ पौलुस मसीही जीवन में उन छह प्रथाओं को प्रस्तावित करता है जो गैर विश्वासियों में प्रभावशाली गवाही को जारी रखने में सहायक हैं। एक पास्टर इन सिद्धान्तों को एक मण्डली में दो तरह से सिखा सकता है। सर्वप्रथम, पास्टर व्यक्तिगत प्रचार में सिद्धान्तों और प्रथाओं को एक साथ व्यापक बाइबल संबन्धी रूप में सिखा सकता है। दूसरा, भिन्न संदर्भों में जहाँ तक संभव हो प्रत्येक सिद्धान्त और प्रथा पर बल दिये जाने की आवश्यकता है। केवल एक संदेश या शिक्षा इन सिद्धान्तों को उनकी जीवन प्रणाली का एक भाग बनने में उपयुक्त रूप से सहायक नहीं होंगे।

## प्रक्रिया न०1—खुले द्वारों के लिए प्रार्थना करें

*''प्रार्थना करते रहो कि परमेश्वर हमारे लिए वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे...''* (कुलुस्सियों 4:3)।

पौलुस कुलुस्सियों के लिए अपने निर्देशों का आरम्भ उन्हें प्रार्थना के लिए प्रोत्साहित करते हुए करता है। प्रचार में प्रार्थना का होना ज़रूरी है। जब तक परमेश्वर लोगों के हृदयों और जीवनों में कार्य न करे तब तक हमारा कार्य अन्तिम परिणाम उत्पन्न नहीं कर पाएगा।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, हम परमेश्वर के अपने एक संदेशवाहक के साथ कार्य करने के उदाहरण को पाते हैं। जब पौलुस और उसके साथी फिलिप्पी के बाहर एक नदी के किनारे पर सब्त के दिन प्रार्थना करने के लिए गए, वे वहाँ बैठकर स्त्रियों के एक समूह से बात करने लगे। ''और लुदिया नाम थुआथीरा नगर की बैंजनी कपड़े बेचने वाली एक भक्त स्त्री सुनती थी, और प्रभु ने उसका मन खोला, ताकि पौलुस की बातों पर चित्त लगाएं'' (प्रेरित. 16:14)। पौलुस संदेश को बोला। 'प्रभु' ने लुदिया के हृदय को खोला।

हमारे पास सुसमाचार के विषय बताने का विशेषाधिकार और उत्तरदायित्व है। परन्तु केवल परमेश्वर ही एक व्यक्ति के हृदय को खोल सकता है। अवसर उपलब्ध कराने, सुननेवालों के मनों को समझनेवाला बनाना और उनके हृदयों को निर्णय की ओर लेकर जाना, इस सब के लिए हम परमेश्वर पर निर्भर हैं।

विश्वासियों के लिए ज़रूरी है कि वे नियमित रूप से प्रार्थना करें और अपने जीवनों में प्रार्थना को चारित्रिक विशेषता बनाएं।

## प्रक्रिया न०2—संदेश को स्पष्ट करें

*''और उसे ऐसा प्रगट करूं, जैसा मुझे करना उचित है''* (कुलुस्सियों 4:4)।

जिस संदेश की घोषणा पौलुस ने की वह 'परमेश्वर का भेद' था (कुलुस्सियों 2:2)। हमारे संदेश का केन्द्र यीशु होना चाहिए (देखें कुलुस्सियों 1:13-23, 28; 2:9-15)।

यीशु के स्वर्गारोहण के पश्चात्, प्रेरित पतरस शीघ्र ही नये नियम की कलीसिया में विशिष्ट वाणियों में से एक बन गया था। पवित्र आत्मा की सामर्थ में, यह अशिक्षित मछुवारा सुसमाचार का एक वाक्पटु व सशक्त प्रचारक बन गया था।

पतरस ने अपने सर्व-परिचित संदेश का पिन्तेकुस्त के दिन प्रचार किया था। परन्तु लूका प्रेरितों के काम 3:12-26; 4:8-12; 5:29-32; 10:34-43 में सुसमाचार में पतरस द्वारा की गई घोषणाओं का विवरण देता है। इन प्रतिकृतियों की समीक्षा करने पर हम पाते हैं कि प्रत्येक संदेश में पतरस दो मूल सत्यों को संबोधित करता है: यीशु 'कौन' है और उसने अपना जीवन 'क्यों' दिया। विचार-विमर्श करने को तैयार होने के लिए ये दो सत्य गैर विश्वासियों के साथ मसीह के विषय बताने के लिए किसी भी विश्वासी को सुसज्जित करेंगे।

### यीशु *कौन* था?

सांसारिक मीडिया द्वारा मसीह के जीवन वृत्तान्त में यीशु को एक काल्पनिक चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यद्यपि मीडिया यीशु को एक ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में दिखाती है, मीडिया उसे एक महान शिक्षक और भविष्यद्वक्ता के रूप में चित्रित करती है—परन्तु केवल एक मनुष्य रूप में।

विश्वासियों को यह बताना है कि यीशु एक शिक्षक व भविष्यद्वक्ता से कहीं अधिक था; वह मानव रूप में परमेश्वर था। वह पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आया, कुंवारी से जन्मा, एक निर्दोष जीवन जीया, हमारे पापों के लिए मारा गया और हमें पापों की क्षमा तथा अनन्त जीवन का उपहार देते हुए मृतकों में से पुन: जी उठा।

### उसने अपना जीवन *क्यों* दिया?

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यह प्रचार करते हुए बताया कि यीशु पृथ्वी पर क्यों आया था, ''देखो, यह परमेश्वर का मेमना है, जो जगत का 'पाप' उठा ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29, अतिरिक्त बल दिया गया है)। समस्त मानवजाति के पाप यीशु की मृत्यु का कारण हैं। क्रूस दो सत्यों को बताती है: सभी पापी हैं, और हम इस क्षेत्र में कुछ नहीं कर सकते हैं।

यह जानना महत्वपूर्ण है कि पौलुस, पतरस के समान थिस्सलुनीके में इन दो सच्चाईयों को बताता है। लूका ने सब्त के दिनों में यहूदी आराधनालय में पौलुस की शिक्षा को सारबद्ध किया है: ''और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्रशास्त्रों से उनके साथ विवाद किया। और उनका अर्थ खोल खोलकर समझाता था, कि मसीह को दुख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना, अवश्य था; और यही यीशु जिसकी मैं तुमें कथा सुनाता हूँ, मसीह है'' (प्रेरित. 17:2, 3)।

सुसमाचार की प्रस्तुति में यीशु के बारे में इन दो सत्यों को सम्मिलित करने की आवश्यकता होती है। दोनों ही उस अनुग्रह को समझने के लिए ज़रूरी हैं जिसे परमेश्वर ने क्रूस पर यीशु की मृत्यु, उसके पुनरुत्थान और समस्त मानवजाति के उसे खरीदे हुए छुटकारे द्वारा व्यक्त किया।

## प्रक्रिया न०3—''बाहरवालों'' के साथ बुद्धिमान बनें

*''बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करो''* (कुलुस्सियों 4:5)।

पौलुस द्वारा प्रयुक्त 'बाहरवालों' शब्द इस बात का एक व्यावहारिक और उपयुक्त चित्रण है कि गैर विश्वासी कलीसिया के साथ संबन्ध में कहां हैं। कई कारणों से, आज अधिकांश गैर विश्वासी पहले से कहीं अधिक मसीही संदर्भ में 'अधिक बाहरवाले' हैं। हम यह नहीं मान सकते कि गैर विश्वासी मसीही मान्यताओं के प्रति समर्पित हैं या फिर उन्हें समझते हैं।

आज कलीसिया विदेशों में मिशनरियों के रूप में सुसमाचार को संप्रेषित करने की चुनौती का सामना कर रही है। यदि विश्वासी अपना अधिकांश समय कलीसिया में व्यतीत करते हैं तो उनके पास कलीसिया की धारणाएं, मान्यताएं और शब्दावली होती हैं। मसीही और गैर विश्वासी दोनों ही हिन्दी बोल सकते हैं परन्तु मसीही प्राय: उन शब्दों का प्रयोग करते हैं जो संसार के लिए कुछ भिन्न अर्थ के होते हैं।

मसीही शब्दावली का प्रयोग करते हुए हम गैर विश्वासियों के साथ एक संप्रेषक अवरोधक को बनाते हैं। विश्वासी इन शब्दों को समझते हैं जैसे *बचाया हुआ, सुसमाचार, और अभिषेक,* परन्तु ये उन लोगों के लिए भ्रमित करनेवाला होता है जो इन्हें नहीं जानते हैं। गैर विश्वासियों तक उनकी शब्दावली के द्वारा ही पहुँचा जा सकता है, न कि हमारी।

कलीसियाई संस्कृति के एक भाग को मसीहियों को ऐसी भाषा में गैर विश्वासियों तक अपने विश्वास को संप्रेषित करने के लिए इस तरह से सुसज्जित

# ऐंगल स्केल

ऐंगल स्केल वह संख्यात्मक प्रणाली है जो यह दिखाती है कि लोग अपनी आत्मिक यात्रा में कहां पर हैं।

-8 सर्वोच्च के बारे में जानना, परन्तु सुसमाचार का ज्ञान न होना।
-7 सुसमाचार का आरम्भिक ज्ञान।
-6 सुसमाचार की आधारभूत जानकारी।
-5 सुसमाचार के कार्यान्वयन पर पकड़।
-4 सुसमाचार के प्रति सकारात्मक रवैया।
-3 व्यक्तिगत समस्या की जानकारी।
-2 कार्य करने का निर्णय।
-1 पश्चात्ताप और मसीह में विश्वास।
0 परिवर्तन
+1 पूर्व निर्णय मूल्यांकन।
+2 मसीह की देह में मिल जाना।
+3 मसीह में एक जीवनपर्यन्त व्यावहारिक और वैचारिक विकास।

लोग विश्वास करने से पहले किसी चीज़ से संबन्धित होना चाहते हैं अर्थात् उसके बारे में जानना चाहते हैं। सुसमाचार बताते समय मूल भाषा का प्रयोग करें। लोगों ने यदि पहले *प्रेम, दया* और *स्वीकृति* शब्दों को देखा और सुना नहीं है तो वे *पश्चात्ताप, पवित्रीकरण* और *छुटकारे* जैसे शब्दों को नहीं समझ सकते हैं। परमेश्वर का वचन भी बताता है कि परमेश्वर का प्रेम पश्चात्ताप में नेतृत्व करता है। अंगीकार किये गए ये शब्द सुसमाचार की गहन चीज़ों में लेकर जाते हैं। पौलुस बताता है कि बच्चों को मांस खाने से पहले दूध की आवश्यकता होती है। उसने सुसमाचार को लोगों के बीच सेवकाई करने के आधार पर भिन्न भिन्न स्तरों पर प्रस्तुत किया है।

हम लोगों में नकारात्मक से सकारात्मक संख्या की ओर विकास होते देखना चाहते हैं, और अन्ततः एक स्वस्थ, विकसित +3। गैर विश्वासियों के संसार और अविश्वासियों के संसार में एक अंतर पाया जाता है। मसीहियों का सामाजिक-स्वैच्छाचारी ज्ञान या सांस्कृतिक-विशिष्ट ज्ञान इतनी पूर्णता के साथ विकसित हो सकता है कि वे पूर्णतया गैर-मसीहियों से मेल खाने लगते हैं। ऐसे मसीही अनजाने में एक ऐसी खास बोली का प्रयोग करना आरम्भ कर देते हैं जिसका प्रयोग वे केवल वहीं करते हैं क्योंकि उन्होंने मसीही संस्कृति को सीखा होता है।

प्रचार-कार्य से जुड़ने के लिए हमें अपने जीवन, कार्य और भाषा को एक ऐसे खांचे में डालना है, ताकि यह उन लोगों से संबन्धित हो जो अभी तक मसीहियत में विकसित नहीं हुए हैं। जैसा पौलुस ने कहा, हमें उसे सीखना है, ''मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना हूँ कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं'' (1 कुरिन्थियों 9:22)।

करने की आवश्यकता है कि वे उसे समझ सकें और इन संदर्भों के द्वारा उन तक पहुँचा जा सकता है जैसा यीशु ने किया।

## प्रक्रिया न०4—अवसरों को बहुमूल्य समझें

''*अवसर को बहुमूल्य समझकर*'' (कुलुस्सियों 4:5)।

अवसरों का एक समय-खांचा होता है। यह कहावत कि अवसर (मौका) एक बार ही मिलता है, सत्य है। एक अवसर संभव है कि दूसरे क्षण न आए। हरेक अवसर लोगों और परिस्थितियों के भिन्न होने के कारण अद्वितीय है।

कुछ धर्मशास्त्रीय पदों को स्मरण करना या गवाही कार्य को पूरा करना मसीही को गैर विश्वासी को उत्तर देने के लिए तैयार नहीं करता है। यह सहायक हो सकता है, परन्तु सत्य को जानना भिन्न परिस्थितियों में हमें उत्तर देने के योग्य करता है जिसके लिए लगातार सीखते रहने वाली जीवन प्रणाली का होना आवश्यक है। इस का अर्थ यह है कि हमें यीशु मसीह के व्यक्तिगत ज्ञान में बढ़ना है। हम कभी भी स्नातक नहीं होते हैं। हम सभी एक आत्मिक यात्रा में हैं। जो कुछ हम व्यक्तिगत रूप में सीख रहे हैं उसे हम नवीनता के साथ बता सकते हैं जिससे गैर विश्वासी कायल हो जाते हैं।

कुछ गवाही देने में स्वयं को अनुपयुक्त अनुभव करते हैं क्योंकि उन्हें धर्मशास्त्र से उन बातों का पता नहीं होता जिसके लिए वे सोचते हैं कि उन्हें इसे जानना ज़रूरी है। यदि वे ऐसा कर भी लें, तो उन्हें आवश्यकता पड़ने पर इसे स्मरण में लाने का भरोसा नहीं होता। परन्तु प्रत्येक विश्वासी व्यक्तिगत प्रचार कार्य में प्रशिक्षण के बिना भी अपनी व्यक्तिगत गवाही को बांट सकता तथा प्रार्थना कर सकता है।

प्रत्येक की एक व्यक्तिगत गवाही होती है। दृढ़ता और निष्कपटता के साथ यीशु मसीह के साथ अपने संबन्ध और अनुभव को बताना कुछ लोगों के साथ तर्क में पड़ना हो सकता है।

गैर विश्वासियों के बीच सेवा करने का सबसे अच्छा तरीका प्रार्थना करना है। जब गैर विश्वासी अपनी समस्या को बताते हैं तो उनके साथ मिलकर प्रार्थना करें। यदि हमें विश्वास है कि परमेश्वर जवाब देता है, तो हमें लोगों के साथ व लोगों के लिए मिलकर प्रार्थना करते हुए अपने विश्वास को कार्यान्वित रूप में लाना है, यह विश्वास करते हुए कि परमेश्वर जवाब देगा। एक विश्वासी की प्रार्थना के सुने जाने का गैर विश्वासियों पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। जब विश्वासी आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करते हैं, तो लोग यह समझ सकते हैं कि वे परमेश्वर के साथ एक हैं, जोकि सुसमाचार के लिए हृदयों को खोलने वाला हो सकता है।

पास्टरीय (याजकीय) अगुवाई आऊटरीच के द्वारा कलीसियाई सदस्यों को विश्वासियों के साथ जोड़ने के लिए अवसरों का आरम्भ कर सकती है।

## प्रक्रिया न०5—अनुग्रह सहित बोलें

''*तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो*'' (कुलुस्सियों 4:6)।

1 पतरस 3:15 में, प्रेरित पतरस पौलुस के समान एक कथन कहता है। पतरस विश्वासियों को अपनी आशा के विषय में उत्तर देने के लिए सदैव तैयार रहने को कहता है, परन्तु 'नम्रता और भय' के साथ। जो हम कहते हैं केवल वही महत्वपूर्ण नहीं है, परन्तु यह भी कि हम उसे कैसे कहते हैं।

हमारी अधिकांश बातचीत अशाब्दिक होती है। कोई 'क्या' कहता है तथा उसे किस 'तरह' से कहता है यदि इसके बीच में भिन्नता है, तो हम हर समय में अशाब्दिक संदेश पर विश्वास करेंगे। एक व्यक्ति क्षमा मांग सकता है परन्तु उसके बोलने का तरीका भिन्न हो सकता है—या तो निष्ठापूर्वक या फिर कटुतापूर्वक। वाणी,सुर-परिवर्तन तथा चेहरे की अभिव्यक्ति एक मिश्रित संदेश को भेज सकती है जो हमारे कहे शब्दों से भिन्न होता है।

यूनाईटेड स्टेट्स में हम जिन अधिकांश लोगों तक पहुंचने का प्रयास कर रहे हैं उनका कलीसिया के साथ एक नकारात्मक इतिहास रहा है या वे मसीही गवाही के प्रति बैरपूर्ण रहे हैं। अन्य भावनात्मक चिन्हों के साथ वे आत्मिक विषयों के प्रति उदासीन हो गए हैं। एक मसीही व्यक्तिगत अनुग्रह और विश्वसनीयता के साथ उन मिश्रित संकेतों को प्रभावहीन करने में सहायता कर सकता है जिन्हें लोगों ने उनसे प्राप्त किया है जिनके जीवन उनके संदेश के अनुरूप नहीं हैं।

एक नमकीन भोजन, एक अनुग्रह की आत्मा, भद्रता और आदर की गैर-विश्वासियों के साथ बातचीत करने में आवश्यकता है। हमें सत्य से समझौता नहीं करना चाहिए, परन्तु हम सत्य को दया के साथ बता सकते हैं।

आत्मिक संरचना में विश्वासियों को लगातार शिष्यता में रहना ज़रूरी है,

यह नया रूप हमारी भाषा में भी होना है। पौलुस अपने संदेश में उस समय की सांस्कृतिक प्रतिमाओं का प्रयोग करता है (देवता और मूर्तियों और उस समय के कवियों का)। वह अज्ञात परमेश्वर की वेदी का उल्लेख करता है तथा उन कवियों का जिन्होंने यह कहा, ''हम ... उसकी सन्तान हैं'' (प्रेरितों 17:22-31), उस स्तर पर बोलने के लिए जो उनसे संबन्धित व उनके लिए अर्थपूर्ण था जिन तक वह पहुँचने का प्रयास कर रहा था।

मिशेल फ्रोस्ट और एलेन हिर्श द्वारा लिखित 'द शेपिंग ऑफ थिंग्स टु कम' में यह बताने के लिए लेखाचित्र का प्रयोग किया गया है कि इससे पूर्व गैर-विश्वासी शिष्यता के अन्तर को पार करें जिसे सभी विश्वासियों को आखिरकार पार करना है, उन्हें अपने अज्ञात परमेश्वर के सांस्कृतिक अन्तर पर विजय पानी है।

यदि लोग अवस्थाओं से होकर जाएं, जिस तरह से ऐंगल का कहना है, हमें इस बात की जांच करनी है कि कैसे और कब परमेश्वर के राज्य के शाब्दिक और गैर-शाब्दिक संकेतों को व्यक्त करना है। यीशु ने उस समय भी बच्चों से बात करनी चाही जब उसके शिष्य उन्हें वहाँ से हटा रहे थे। उसने अपने शिष्यों को शाब्दिक और गैर-शाब्दिक दोनों ही रूप में सिखाया कि स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए एक व्यक्ति को अपने हृदय को बच्चे के समान बनाना है।

कुएं पर एक व्यभिचारी स्त्री से बोलते हुए (यूहन्ना 4:5-29), उसने बातचीत का आरम्भ उसके पाप तथा उसकी पश्चात्ताप की ज़रूरत के बारे में बोलते हुए नहीं किया था। इसके बजाए वह उससे भौतिक स्तर पर बोला था, जब उसने उससे कहा, ''मुझे पीने को पानी दे।'' उसने इस सच्चाई को बताते हुए उसकी वर्तमान जीवन प्रणाली को संबोधित किया था ''उसके कई पति थे।'' वह उसकी संतुष्टि पाने की आवश्यकता के बारे में बोला—उसे पीना अच्छा है। उसने उसे जीवित जल के बारे में बताया। यीशु का यह प्रस्ताव उस समय में एक मसीही ठप्पा नहीं था; यह उसकी वर्तमान आवश्यकता को पूरा करने का एक प्रस्ताव था।

मसीही होने के कारण हमें अपने शब्दों पर ध्यान देना है। हमारे शब्द हो सकता है कि उस समय हमारी आवश्यकता के अनुसार हों परन्तु जिनसे हम बात कर रहे हैं संभव है कि उनकी वैसी आवश्यकता न हो। हो सकता है कि उस समय कलीसिया की नहीं परन्तु किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत हो जो दयालु शब्दों और गैर-शाब्दिक संकेतों से परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करे, जैसे कार्य और सेवा। हम अपने चेहरे पर चिन्ता को कैसे दिखाते हैं और हम शब्दों को कैसे रूप देते हैं यह इस बात को निर्धारित करता है कि हम अपनी कलीसियाई बातचीत और घमण्ड में घृणास्पद होंगे या फिर अपने पड़ोसी की आवश्यकता हेतु उचित चिन्ता दिखाते हुए दयालु और सही होंगे।

विश्वासियों के लिए समय है कि वे अपनी आत्मिक जवानी की भूली भाषा को फिर से खोजें। गैर-विश्वासी जहां रहते हैं, जहां कार्य करते हैं, और ऐंग्ल स्केल पर वे जहां कहीं भी हैं हमें उनके साथ बात करनी है।

---

**—लालटन गैरीसन,** स्प्रिंगफील्ड, मिसौरी

***परमेश्वर प्रत्येक विश्वासी को एक गवाह बनने के लिए बुलाता है, और प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर की सहायता से ऐसा बन सकता है।***

जिससे आत्मा के फल उनके जीवनों में प्रमाण रूप में वृद्धि करें। आज व्यक्तिगत प्रचार कार्य का सबसे अधिक जटिल विषय संदेश देने वाले का विश्वसनीय होना है।

## प्रक्रिया न०6—व्यक्तिगत रूप से उत्तर दें

*''तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए''* (कुलुस्सियों 4:6)।

संबद्धता एक व्यक्तिगत विषय है। बाहरवालों को समझने तथा उनके साथ बुद्धिमानी से व्यवहार करने के हमारे प्रयासों में, हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि प्रत्येक बाहरवाला अद्वितीय है। विभिन्न संस्कृतियों और पीढ़ियों के लोगों की मनोभावनाओं, मान्यताओं, विषयों, रुचियों और इच्छाओं को सीखना सहायक होता है। तथापि, व्यापीकरण भ्रमित करने वाला हो सकता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है।

लोग केवल सांख्यिकीय या प्राण ही नहीं है जिन्हें हमें राज्य के लिए जीतना है। लोगों के भिन्न व्यक्तित्व योजना और उद्देश्य है। हम एक समय में एक व्यक्ति के द्वारा परमेश्वर के राज्य का निर्माण करते हैं।

लोगों को उत्तर देने के संबन्ध में पौलुस की शिक्षाओं में यीशु एक अच्छा उदाहरण है। यीशु की शिक्षा उसके सुननेवालों के लिए स्पष्ट थीं। उसने उस शब्दावली और शब्दचित्रों का प्रयोग किया जो उसके श्रोताओं के दैनिक जीवन से संबन्धित थे। उसने अपने सुननेवालों को जाना और वह उनके साथ जुड़ा, उसने उस भाषा का प्रयोग किया जिसे वे समझ सकें, तथा उन विषयों का प्रयोग किया जिन्हें उनके साथ संबन्धित किया जा सके।

हमें बाइबल के इस पद, यूहन्ना 3:16, को स्मरण करने की आवश्यकता है, जो कि यीशु के संदेशों का एक भाग नहीं था। यीशु ने ये शब्द रात के समय में नीकुदेमुस के साथ अपनी बातचीत में बहुत कोमलता से कहे, चूंकि यीशु इस समय में इस फरीसी द्वारा खोज किये जाने वाले प्रश्नों का जवाब दे रहा था।

उसने भीड़ को भी शिक्षा दी, यीशु लोगों की ओर केन्द्रित था और उसने उन्हें उत्तर दिया। भटके हुए लोग वही प्राप्त करने के योग्य हैं जिसे यीशु के पास आने वाला व्यक्ति प्राप्त करता है—एक व्यक्तिगत उत्तर।

परमेश्वर प्रत्येक विश्वासी को गवाह बनने के लिए बुलाता है, और प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर की सहायता से ऐसा बन सकता है। कलीसियाई सदस्य यह भरोसा रख सकते हैं कि एक अविश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा द्वारा किये जाने वाले कार्य में जब वे सहयोग देते हैं तो परमेश्वर उनका प्रयोग अवश्य ही एक प्रभावशाली गवाह बनने के लिए करेगा। कुलुस्सियों के ये पांच पद व्यक्तिगत प्रचार कार्य के संबन्ध में एक बाइबल संबन्धी, व्यावहारिक और विस्तृत शिक्षा देते हैं। निर्भरता (पद 2-4) और अनुशासन का सिद्धान्त (पद 5, 6) मसीही जीवन से संबन्धित हैं। प्रक्रियाओं को कलीसियाई जीवन के सभी पहलुओं में निरन्तर दृढ़ बनाए रखना ज़रूरी है।

प्रचार की प्रकृति से संबन्धित परमेश्वर के वचन की सच्चाई लोगों को उससे स्वतन्त्र कर सकती है जो परमेश्वर के उस उद्देश्य को पाने में उनके लिए बाधक होने के साथ-साथ सहायक भी है जिसे परमेश्वर उनके जीवनों के द्वारा पूरा करना चाहता है। पौलुस सिखाता है कि यदि याजकीय अगुवाई लोगों की शक्तिशाली सत्य को समझने में सहायता करे तो विश्वासी एक प्रभावी व्यक्तिगत प्रचार कार्य की जीवन पद्धति को विकसित कर सकते हैं। ■

**रेण्डी हर्स्ट,** *प्रचार कार्य के कमीशनर, जनरल काऊंसिल ऑफ द असेम्बलीज़ ऑफ गॉड, स्प्रिंगफील्ड, मिसौरी। रिसपोन्स इवेन्जलिज़म (उत्तर प्रचार कार्य) पर अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:*
http://www.reaching.ag.org and
http://www.evangelism.ag.org

*यदि हम अपनी असफलताओं को स्वयं को निर्धारित करने का अवसर दें, तो वे हमें बर्बाद कर सकती हैं। परन्तु असफलता को सही तरह से संचालित करने से बेहतर चीज़ हो सकती है।*

—द्वारा: मार्क बैटरसन

# आगे बढ़ने में असफलता

एक दशक से भी अधिक समय से मैंने वाशिंगटन डी. सी. की राष्ट्रीय सामुदायिक कलीसिया में एक प्रमुख पास्टर अथवा याजक के रूप में सेवा की है। मुझे कैपिटल हिल में रहना पसंद है। मैं जीवन भर वहां की एक कलीसिया में याजक का कार्य करने का अवसर मिलने की प्रार्थना करता हूँ।

परन्तु मैंने अपने हिस्से की चुनौतियों, निराशाओं और असफलताओं का सामना भी किया है।

मिसौरी के सेन्ट्रल बाइबल कॉलेज से स्नातक होने के पश्चात् मैं इलिनायस के डीयरफील्ड के ट्रीनीटी इवैंजलिकल डिवाईन स्कूल की सेमिनरी में गया। मेरा सपना शिकागो क्षेत्र में एक कलीसिया की स्थापना करने का था। मेरी पत्नी और मैं शिकागो के एक पश्चिमी उपनगर नेपरविले में पले-बढ़े थे। मुझे शिकागो स्टाईल पिज़्ज़ा पसन्द है। और मिशैल जोर्डन 'शिकागो बुल्स' के लिए उस समय भी खेल रहा था। फिर हम किसी और स्थान पर क्यों जाना चाहेंगे? इसलिए हमने एक केन्द्र समूह बनाया, एक बैंक खाता खोला, और एक कलीसिया के नाम का चुनाव किया। मैंने 25 वर्षीय योजना भी बना ली। परन्तु हमारी पहली सर्विस लेने से पहले ही हमारा केन्द्र समूह समाप्त हो गया।

उस प्रथम कलीसिया स्थापना के लिए अभी भी मेरा अनुत्तरिक प्रश्न है। क्या हमें इस कलीसिया की स्थापना के लिए बुलाया गया था? या फिर परमेश्वर ने असफलता की योजना बनाई थी? क्या हमारा समय समाप्त हो गया था? या फिर मेरी अकुशलता या अनुभवहीनता इस असफलता का कारण बनी थी? मैं एक दृढ़ धारणा के साथ इस अनुभव से बाहर आया: कई बार परमेश्वर की योजना के सफल होने के लिए हमारी योजनाओं को असफल होना होता है।

कलीसिया स्थापना करने के प्रयास की असफलता मेरे जीवन का सबसे शर्मनाक और मोह भंग करने वाला समय रहा है। कहां जाना है या करना है इस बारे में मेरा कोई विचार न था। और मैं भावनात्मक व आत्मिक रूप में दयनीय हो गया था।

यदि हम अपनी असफलताओं को स्वयं को निर्धारित करने का अवसर दें तो वे हमें बर्बाद कर सकती हैं। परन्तु जब सफलता का संचालन सही ढंग से किया जाता है तो हम सबसे कीमती सबक को सीखते हैं। हम प्रेम पाने या बाद की सफलताओं को हल्के रूप में लेने से कुछ ही दूरी पर होते हैं। हम पाते हैं कि हमारे गिर जाने पर, परमेश्वर हमें उठाने के लिए वहां होता है। असफलता हमारे लिए

## असफल और सफल कलीसिया स्थापनाओं के लिए वाईनयार्ड (दाखबारी) अध्ययन

टॉड हंटर ने उस समय एक महत्वपूर्ण अध्ययन का संचालन किया जब वे कलीसिया स्थापना के एक संस्थागत अध्यक्ष थे। उसी दिन से, कई महत्वपूर्ण जानकारियां उनके अध्ययन 'असोसिएशन ऑफ वाईनयार्ड चर्चेज़ चर्च पैथोलोजी रिपोर्ट', दिसम्बर 1986 से अभी तक मिली हैं।

हंटर ने अपनी रिपोर्ट को दो प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया है: असफल कलीसियाओं व ''सफल कलीसियाओं'' के लिए 'निरीक्षण रिपोर्ट'। प्रमुख विषय यह निर्धारित करते हैं कि कलीसियाई असफलता में निम्नलिखित चीज़ों का योगदान होता है:

- कार्यकर्त्ताओं और अगुवों को भरती करने, गतिशील करने और पोषित करने में स्थापनाकर्त्ता की अयोग्यता,
- प्रभावशाली योजना बनाने में स्थापनाकर्त्ता की अयोग्यता,
- नये लोगों को एकत्रित करने में स्थापनाकर्त्ता की प्रभावहीनता, और
- स्थापनाकर्त्ता का प्रभावहीन प्रचारीय वर्गीकरण।

हंटर ने यह भी निष्कर्ष निकाला कि कलीसियाई स्थापनाकर्त्ता प्रशिक्षण और कलीसियाई विकास अनुभव के साथ इन विषयों पर सुधार कर सकते हैं।

हंटर ने आगे यह भी जाना कि स्थापना करनेवाले याजक की मनोवृत्ति भी एक जटिल अन्तर उत्पन्न करती है।

संघर्षरत् पास्टरों में अधिकांश वे हैं जो अगुवाई प्रवीणता की कमी और अधिक वेतन लेने की तुलना में अधिक चरावाही करने वाले हैं। कम सफल होने वाले कलीसिया स्थापनाकर्त्ता सेवकाई के लिए अधिक सक्रिय प्रवृत्ति को रखते हैं; जो उन्हें पोषित करने पर केन्द्रित होती है जो कि समुदाय को प्रभावित करने और उन लोगों को इकट्ठा करने की खोज में रखते हैं जो राज्य के लिए उनके अगुवे हो सकें। उनकी तुलना में वे उनकी ओर अधिक केन्द्रित होते हैं जो स्वाभाविक रूप में उनके पास आते हैं। वे अपने समुदाय में भरती करने, प्रचार करने, योजना बनाने या अन्वेषण करने के बजाए वर्तमान संबन्धों को पोषित करने को अधिक महत्व देते हैं।

**सफल घटक**

दूसरी ओर, वाईनयार्ड अन्वेषण के अनुसार, वे प्लांट जो कठिन श्रम करनेवाले पास्टर की अगुवाई में सम्पन्न होते हैं, वे योजनाओं को सोच-समझकर बनाते हैं, वे नये लोगों को एकत्रित करने की ओर केन्द्रित रहते हैं तथा वे जो रचनात्मक रूप से कार्य करते तथा समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। ये पास्टर एक उत्साही आऊटरीच, और आशावादिता और विश्वास में बने रहते हैं। इसके अलावा, इन स्थापनाकर्त्ताओं में अच्छी सामाजिक निपुणता होने के साथ-साथ ये लोगों को कलीसिया के महत्व को बताते हुए कलीसिया के विकास के उत्तरदायित्व को भी लेते हैं।

अन्ततः, हंटर ने नई मण्डली के संबन्ध में भी कई सफल घटकों की खोज की है। एक नई कलीसिया के जीवित रहने की संभावनाएं धुंधली पड़ जाती हैं यदि कलीसिया आरम्भिक अवस्था में बहुत से नामधारियों को आकर्षित करती तथा उन मसीहियों को चोट पहुंचाती है जो परिवर्तन और विकास करने के लिए या तो तैयार नहीं हैं या फिर वे उसके प्रति अनिच्छुक हैं (जैसे कलीसियाई आशावादी, ज्वलंत अगुवे और बुरी तरह से चोट खाए हुए इत्यादि)। यदि ये आरम्भिक सदस्य सक्रिय रूप से उन लोगों की खोज या स्वागत करने को तैयार हैं जो स्वयं से भिन्न हैं तो इससे स्वास्थ्य और जीवित रहने में कमी आ सकती है। समाज-वैज्ञानिक अवरोधक गुप्त समस्याएं नई कलीसियाओं के साथ-साथ स्थापित कलीसियाओं को भी हानि पहुँचाती हैं।

**—एड स्टेटेज़ेर**

*'इम्प्रूविंग द हैल्थ एण्ड सरवाइवेलिटी ऑफ न्यू चर्चेज़' लीडरशिप नेटवर्क से लिया गया।*

*अनुमति द्वारा प्रयुक्त।*

अन्य विकल्पों के द्वार को खोलती है।

जब शिकागो में कलीसिया स्थापना का सपना समाप्त हो गया, तो मैं कहीं भी जाने को तैयार था। अत: कई महीनों तक प्रार्थना करने और खोजने के पश्चात् मैंने डी. सी. में एक द्वार को खुला पाया। हमारे पास रहने का स्थान और निश्चित वेतन पाने की संभावना नहीं थी; परन्तु हमने विश्वास के द्वारा अपने सामान को बांधा और चल दिये।

## आपके निकट के थियेटर पर शीघ्र आएं

जनवरी 1996 के प्रथम सप्ताहंत में, ईस्ट कोस्ट पर बर्फानी तूफान आया जो एक रिकार्ड था। नेशनल कम्युनिटी चर्च में यह मेरा पास्टर के रूप में प्रथम सप्ताहंत था। सर्विस में केवल तीन ही लोग दिखाई दिये—मेरी पत्नी, मेरा पुत्र और मैं। एक ही सप्ताह में हमने 633 प्रतिशत के विकास का अनुभव किया जब अगले रविवार 19 लोग दिखाई दिये।

हमने कई कलीसिया स्थापनाओं की स्वयंसिद्धि को तोड़ा था। मुझे बताया गया था कि यदि तुम पहले वर्ष 100 और अपने दूसरे वर्ष में 200 लोगों के लक्ष्य तक नहीं पहुँच सके तो तुम कभी भी सीमाओं को तोड़ नहीं पाओगे। हमारे पहले वर्ष की औसतन उपस्थिति में लगभग 35 लोग थे; हम प्राय: छह या आठ लोगों के साथ ही अपनी सर्विस का आरम्भ कर पाते थे। मैं आराधना के समय में अपनी आँखों को बन्द कर लेता था क्योंकि उन्हें खोलने पर केवल निराशा ही मिलती थी। परन्तु मैंने नियति के भाव को कभी नहीं खोया था। मैं जानता था कि परमेश्वर ने हमें बुलाया है। और मैं जानता था कि कुछ अच्छा अवश्य ही होगा। मैं सिर्फ इतना नहीं जानता था कि जिस चीज़ को मैं बुरा समझता था वही अच्छी चीज़ होगी।

1996 के अन्त में, डी. सी. पब्लिक स्कूल जहां हम अपनी सभाएं करते थे, वह अग्नि संहिता उल्लंघन के कारण बन्द हो गया। नेशनल कम्युनिटी चर्च एक आपातकालीन कलीसिया-स्थापना बन गया था। हमने सभाओं के लिए स्थान ढूंढना आरम्भ कर दिया। एक को छोड़ बाकी सब द्वार बन्द हो चुके थे: यूनियन स्टेशन का मूवी थियेटर।

अनुदर्शन में, इसे एक यूनियन स्टेशन की तुलना में आत्मिक रूप में लेना कठिन था। प्रत्येक वर्ष 25 करोड़ लोग यूनियन स्टेशन से होकर जाते थे, यह डी. सी. का सबसे अधिक सैर करने का स्थान था। हमारे पास 9 थियेटर, 40 भोजन रेस्टोरेन्ट और एक पार्किंग गैरेज है। हमारा अपना एक तलमार्ग (सब-वे) है जो हमारे द्वार के सामने से लेने और छोड़ने का कार्य करता है। यदि परमेश्वर ने डी. सी. पब्लिक स्कूल के द्वार को बन्द न किया होता तो हम थियेटर के खुले द्वार को नहीं देख पाते।

मैं अपनी ऐतिहासिक पादटिप्पणी (फुटनोट) के बारे में बताना चाहता हूँ। यूनियन स्टेशन के मूवी थियेटर के साथ अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करने के पश्चात् मैंने एक पुस्तक को उठाया, 'यूनियन स्टेशन: अ हिस्ट्री ऑफ वाशिंगटन्स ग्रेंड टर्मिनल।' मैं स्टेशन की पिछली कहानी के बारे में जानना चाहता था। फरवरी 28, 1903 को, राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट ने यूनियन स्टेशन के बनाए जाने की अनुमति पर कांग्रेस के बिल पर हस्ताक्षर किये थे। बिल के अनुसार: ''एक तथा अन्य उद्देश्यों के लिए यूनियन स्टेशन को कांग्रेस द्वारा बनाया जाना।''

रूज़वेल्ट ने सोचा था कि वह एक रेल स्टेशन का निर्माण कर रहे थे, परन्तु परमेश्वर जानता था कि वर्षों पश्चात् यूनियन स्टेशन नेशनल कम्युनिटी चर्च के द्वारा परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करेगा।

## चौक के बीच में

मैं पारम्परिक मनोभावना के साथ कलीसिया स्थापना के कार्य में गया था: किराये के स्थान में मिलना जब तक कि आप एक कलीसिया ईमारत को न खरीद लें या बना न लें। मैंने एक प्रतिमान युक्ति का अनुभव किया था। मैं जानता था कि खरीदने या बनाने में काफी समय लगेगा। सम्पत्ति की कीमत $10 मिलियन एकड़ की हो गई थी। और मैं सोचने लगा था: *हम एक कलीसिया ईमारत का निर्माण क्यों करें जबकि हमारे पास पूर्ण स्क्रीन सहित उपयुक्त सभा भवन है, आरामदायक सीट हैं, और पूर्ण ध्वनित भवन है? इसके अतिरिक्त, कितनी कलीसियाओं में भोजन प्रांगण, पार्किंग गैरेज और सब-वे प्रणाली पाई जाती हैं?* चौक में कलीसियाई रूप से एकत्रित होना हमारे आत्मिक डी एन ए का एक भाग बन गया था।

मैं यूनियन स्टेशन से घर की ओर जा रहा था, मुझे फीफ्थ और एफ स्ट्रीट के कोने का एक दर्शन मिला, एन ई न० स्वर्गदूतीय संगीत समूह। पटरी पर किसी तरह का कोई सार्वजनिक चिन्हक नहीं था। परन्तु मैं अपने मन की आँखों से एक मेट्रो मानचित्र को देख सका था। मैंने पूरे डी. सी. क्षेत्र के मेट्रो स्टाप के मूवी थियेटरों में एन सी सी सभा के दर्शन को देखा था।

हमने अन्तत: विरजिनिया के अर्लिंगटन के 'बालस्टन कॉमन मॉल' में दूसरे मूवी थियेटर का आरम्भ किया। तब तक हम जोर्जटाऊन (वाशिंगटन, डी. सी.) और अलेक्ज़ेंड्रिया, विरजिनया में दो और थियेटरों को आरम्भ कर चुके थे।

हमारे चार थियेटरों के साथ-साथ, एन सी सी केपिटोल हिल में अपना सबसे बड़ा कॉफी हाऊस है। 2008 में, एबेनेज़र ने 'एओएल सिटी गाईड' द्वारा मेट्रो डी.सी. क्षेत्र में काफी हाऊस को न. 1 स्थान पर रखा।

उत्साह सरल था: एक ऐसे स्थान को बनाना जहां कलीसिया और समुदाय का मार्ग आर-पार हो। यीशु केवल यहूदी आराधनालयों तक ही नहीं गया; वह कुँओं पर भी गया। कुएं केवल पानी निकालने के स्थान ही नहीं थे। प्राचीन संस्कृति में कुएं इकट्ठे होने का स्थान होते थे। काफी हाऊस वही कुएं के समान है।

न केवल हम प्रतिदिन सैकड़ों ग्राहकों का सामना करते हैं; हम अपने प्रदर्शन स्थान पर दो शनिवार रात्रि सर्विस भी करते हैं। कॉफी-हाऊस का सारा लाभ मिशन को जाता है।

## पांच सबक

कलीसिया स्थापना यात्रा के दौरान सीखे गए सबक यह हैं।

### #1 निकटता से देखें

यदि आपका लघु-अवधि संदर्श है तो आपको निरन्तर निरूत्साह में रहना होगा। जब मैं निरूत्साहित होता हूँ, तो ऐसा उस समय होता है जब मैं उन चीज़ों को निकटता से देखता हूँ जो मुझे निराश करती हैं। मुझे निकटता से देखने और बड़े चित्र के बारे में स्मरण करने की आवश्यकता है। मुझे स्वयं को यह स्मरण कराने की आवश्यकता है कि 2000 वर्ष पहले यीशु मेरे पापों के कारण क्रूस पर मारा गया था। और मुझे स्वयं को यह स्मरण कराने की आवश्यकता है कि मेरे पास अनन्त भविष्य है। यह मेरी आत्मिक रूप में पुन: अंशांकन करने में सहायता करता है। जो मैं कर रहा हूँ उसे मैं क्यों कर रहा हूँ? मुझे उस प्राथमिक बुलाहट से जुड़ने की आवश्यकता है जिसे परमेश्वर ने मेरे जीवन में रखा है। और मुझे यह स्मरण करने की आवश्यकता है कि इसे लम्बे समय तक ढोने के लिए मैं इसमें हूँ।

विकास में समय लगता है। यदि आपमें इसका संचालन करने की योग्यता न हो तो परमेश्वर आपको आशीष नहीं देगा। जो कुछ आप कर रहे हैं उसकी तुलना में आप जो बन रहे हैं उसकी रुचि इसमें कम होती है। जितना अधिक आप प्रतीक्षा करेंगे, उतनी ही अधिक आपकी प्रशंसा होगी। उदाहरण के लिए, हमारा कॉफी हाऊस 8 वर्षों की प्रार्थना और निर्माण का उत्पादन है।

विषय कलीसियाई विकास का नहीं है। विषय व्यक्तिगत विकास का है। यदि आप विषय व्यक्तिगत रूप में बढ़ रहे हैं तो जिस कलीसिया की आप अगुवाई करते हैं वह भी साथ-साथ बढ़ेगी।

कलीसियाई विकास की एक विडम्बना है। सप्ताह-भर मैं आठ बेलनों पर प्रहार करता रहा और सोचता रहा कि प्रत्येक आगन्तुक अगले सप्ताह सदस्य बन जाएगा, कोई वापस नहीं आया। तब अगले सप्ताह मैंने संदेश का प्रचार किया जिसने गोलाबारी कर दी। लोग बचाए गए और अतिथि लौट आए।

**#2 गलती करें**

प्रत्येक कलीसिया निर्माता असफलता के भय से संघर्ष करता है। सफलता इसका उपचार नहीं है। इसका उपचार छोटी खुराक में असफलता है, एलर्जी इंजेक्शन के समान, जिससे आप में प्रतीक्षा का निर्माण हो।

असफलता का एक स्वतन्त्र प्रभाव होता है। आपको लगता है कि आपको उठाने के लिए परमेश्वर वहां है और मिट्टी ने आपको छोड़ दिया है। और इससे आपमें नम्रता आती है।

एन सी सी का एक प्रमुख मानदण्ड है: प्रत्येक चीज़ एक परीक्षण है। यदि परमेश्वर के राज्य के विभाग होते तो हम अन्वेषण और विकास के रूप में कार्य करते। मैं एक दृढ़ धारणा से चालित होता हूँ: कलीसिया के करने के कई तरीके हैं जिन्हें अभी तक किसी ने नहीं जाना है। परन्तु इसका अर्थ यह है कि मेरा गलती करना ज़रूरी है। मुझे ऐसे स्थान पर जाना है जहां मैं सुअवसरों के खो जाने के भय से गलतियाँ करता हूँ।

कर्मचारियों के गलती करने पर मुझे कोई समस्या नहीं होती। मैं केवल यह नहीं चाहता कि वे एक ही गलती को बार-बार करते रहें। गलती का अर्थ है कि आप कुछ नया करने का प्रयास कर रहे हैं। और एक अगुवे के रूप में विकास करने का यह एक तरीका है।

**#3 तुलना न करें**

मैं एक प्रतियोगी हूँ। मैं अपने बचपन से ही कैण्डीलैंड के किसी भी खेल में हारना पसन्द नहीं करता। परन्तु मैंने परमेश्वर से अपनी प्रतियोगी प्रवृत्ति को पवित्र करने तथा उसे अपने उद्देश्यों के लिए प्रयोग करने को कहा। कई बार हम अपनी तुलना याजकों के साथ करते हैं और अन्य कलीसियाओं को प्रतिस्पर्धा के रूप में देखते हैं।

स्वस्थ अगुवों का एक राज्य मनोभाव होता है। मैं सभी लोगों के लिए सभी कुछ नहीं कर सकता क्योंकि शहर में केवल मेरी ही कलीसिया नहीं है। भिन्न तरह के लोग होने के कारण हमारी भिन्न तरह की कलीसियाएं होती हैं। जब तक हम सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं, आइये अपनी भिन्नता का उत्सव मनाएं।

आप अपनी तुलना किसी ऐसे से कर सकते हैं जो आपके समान प्रतिभाशाली न हो, और इसका परिणाम घमण्ड ही होगा। या आप अपनी तुलना किसी ऐसे से कर सकते हैं जो आपसे अधिक प्रतिभाशाली हो, और इसका परिणाम ईर्ष्या होगा। किसी भी तरह से आप हानि में ही जाते हैं।

अगुवाई चुनौती का अंश यह पता लगाना है कि आप कौन हैं। दूसरा भाग यह पता लगाना है कि आप कौन नहीं हैं। और तब आप स्वयं को ऐसे लोगों से घिरा पाते हैं जो आपकी कमज़ोरियों के लिए आपको सांत्वना दे सकते हैं। सेवकाई के आरम्भ में आपकी प्रतिभा का स्तर आपके प्रभाव का निर्धारण करेगा। परन्तु समय बीतने पर आपकी प्रतिभा आपके अन्तिम प्रभाव के लिए बहुत कम ही कर पाएगी। आपका प्रभाव उन लोगों की प्रतिभा द्वारा निर्धारित होगा जिन्हें आप अपने चारों ओर पाते हैं। इसी कारण अगुवाई विकास और कर्मचारियों को ऋण पर लेना मिशन की जटिल क्षमताएं हैं।

यदि आपका एक स्पष्ट निर्धारित दर्शन नहीं है, तो आप सभी लोगों के लिए हर चीज़ को करने का प्रयास करेंगे। अधिकांश लोग ऐंठबाज़ होते हैं। हम अपने पास आने वालों की हर ज़रूरत को पूरा करना चाहते हैं।

वर्षों पूर्व मैंने अब्राहम लिंकन द्वारा कहे इन शब्दों को स्मरण किया और यह एक अगुवाई मन्त्र बन गया है: ''आप सभी लोगों को कुछ समय के लिए प्रसन्न कर सकते हैं, कुछ लोगों को सभी समयों में, परन्तु आप सभी लोगों को सभी समयों में प्रसन्न नहीं कर सकते हैं।''

**#4 सीखना जारी रखें**

किसी ने मुझ से पूछा: ''सेवकाई में सफल होने की कुंजी क्या है?''

मैंने कहा, ''सीखना जारी रखें।''

अगुवे सीखनेवाले होते हैं। उन्हें चालित करनेवाला भाग एक पवित्र उत्सुकता है। और वे अपने ज्ञान की कमी को नम्रता के साथ स्वीकार करनेवाले होते हैं।

मेरा एक भय एक बन्द प्रक्रिया बन गया है। आप कल्पना से बाहर आकर सेवकाई को करना बन्द करें और इसे अपनी स्मृति के आधार पर करना आरम्भ करें। आप भविष्य को बनाना बन्द करें और भूतकाल को दोहराना आरम्भ करें। आप अगुवाई करना बन्द करें और व्यवस्था (प्रबन्ध) करना आरम्भ करें।

खुली प्रणाली को बनाए रखने में दो चीज़ें मेरी सहायक रही हैं। सर्वप्रथम, किताबें मेरी अन्तर्ग्रथन अग्नि को नये भागों पर रखती हैं। जितना अधिक संभव हो सके मैं सर्वेक्षण करने का प्रयास करता हूँ। यह नेशनल कम्युनिटी चर्च के प्रति मेरे स्वस्थ संदर्श को बनाए रखने में सहायता करता है।

**#5 यात्रा का आनन्द लें**

जब मैंने प्रत्यापक के लिए साक्षात्कार दिया, तब प्रत्यापक समीति के एक पास्टर ने मुझसे पूछा: ''यदि आप स्वयं के बारे में एक शब्द में बताएं, तो वह क्या होगा?''

'मैंने कहा, ''चालित''। मेरे विचार से उस समय का यह एक महान जवाब था। अब मैं इसके बारे में सुनिश्चित नहीं हूँ।

कलीसिया स्थापक होने के रूप में मेरा लक्ष्य उनकी उम्र तक पहुँचते पहुँचते हज़ारों लोगों को पास्टर के रूप में तैयार करने का था। यदि उद्देश्य सही हो तो परमेश्वर-समान आकार वाले लक्ष्यों को रखने में कोई बुराई नहीं है। हमारे सपनों में आकार आत्मिक परिपक्वता का एक अच्छा बैरोमीटर है। परन्तु उस विशिष्ट लक्ष्य के साथ समस्या है: मैं लोगों की तुलना में संख्या के बारे में अधिक चिन्तित रहता था। हम पौधा लगाते हैं, और सींचते हैं, परमेश्वर बढ़ाता है (1 कुरिन्थियों 3:7)।

मैं भविष्य के प्रति इतना अधिक अनुकूल बन जाता था कि मैं यात्रा की सराहना करने में असफल हो जाता था। परन्तु मेरे आरम्भ के दिनों में परमेश्वर मुझसे अधिक प्रभावित था: 'एक पास्टर होने के नाते तुम अभी इसी समय यहाँ हो सकते हो।' यह एक अभिभावक के समान होना है। आपको प्रत्येक आयु और प्रत्येक अवस्था का आनन्द उठाने की ज़रूरत है। सेवकाई कठिन है। परन्तु हम संभवत: इस पृथ्वी ग्रह पर परमेश्वर के छुटकारे की योजना का एक अद्वितीय भाग होने के विशेषाधिकार को न भूलें। हमारे द्वारा किये गए बलिदान हमें अनन्त लाभांश दिलवाएंगे। ■

**मार्क बैटरसन**, *नेशनल कम्युनिटी चर्च, वाशिंगटन डी.सी. के एक प्रमुख पास्टर और 'अ लॉयन इन अ पिट ऑन अ स्नोई डे' और 'वाईल्ड गूज़ चेज़' के लेखक भी हैं।*

# निर्णयों को योगफल में बदलना और योगफल को शिष्य-निर्माण में

## (नये परिवर्तितों की देख-रेख)

द्वारा: जिम हॉल

**सभी आत्मिक शिशु कहाँ चले गए? असेम्बलीज़ ऑफ गॉड में एक चौंकाने व शांति भंग कर देने वाली विचारधारा पाई जा रही है। असेम्बलीज़ ऑफ गॉड कलीसियाओं में जबकि मसीह के लिए किए गए 75 प्रतिशत निर्णय पिछले द्वार से गायब होते जा रहे हैं, कोई ऐसी चीज़ है जो गलत होने के साथ-साथ यह प्रश्न उत्पन्न करती है "मसीह के लिए किये गए कुछ निर्णय ही कलीसिया में योगफल का परिणाम क्यों देते हैं?"**

इस प्रश्न का जवाब देने के लिए हमें सबसे पहले थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों के प्रति पौलुस के उदाहरण पर ध्यान देना है: "जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी *तुम्हारे बीच में रहकर* कोमलता दिखाई है" (1 थिस्सलुनीकियों 2:7, बल मेरा है)।

पौलुस इन मसीह में नये जन्में शिशुओं के बारे में जानता था कि इन्हें प्रेमपूर्ण संबन्धों के द्वारा रहना और बढ़ना था, या यदि इन्हें अकेला छोड़ दिया जाता तो यह मर जाते। पौलुस उनके साथ रहते हुए उन्हें उत्साहित कर सका और उन्हें

> *यदि याजकों को अपने बीच की आत्मिक मृत्यु-दर को नियंत्रित करना है तो नये विश्वासियों को शिष्य बनाना अनिवार्य है*

उद्देश्य देने के साथ-साथ उनसे याचना कर सका "जैसा पिता अपने बालकों के साथ बर्ताव करता है ... हर एक" (1 थिस्सलुनीकियों 2:11)। परिणाम उनकी आत्मिक उत्तरजीविता और सामर्थशली गवाही में उनका रूपान्तरण था। एक गर्व करने वाले पिता के समान पौलुस ने ध्यान दिया कि "...तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है" (1 थिस्सलुनीकियों 1:8)। यदि याजकों को अपने बीच की आत्मिक मृत्यु की दर को नियंत्रित करना है तो नये विश्वासियों को शिष्य बनाना अनिवार्य है। क्या आपकी कलीसिया में एक विकसित शिष्य निर्माण सेवकाई है जो आपके नये परिवर्तितों के जीवित रहने की दर को सुनिश्चित करने के साथ-साथ उनकी कलीसिया के विकासशील और उन्नतिशील सदस्य बनने में सहायक है।

यह लेख एक कलीसिया में किसी भी आकार की एक प्रभावी नये-परिवर्तितों को शिष्य बनाने की सेवकाई को स्थापित करने के व्यावहारिक चरणों का उल्लेख करता है। जो निर्णयों को योगफल में बदलेगा और योगफल को शिष्य-निर्माण में। यह गतिशीलता शाश्वत और प्रभावी है।

### शिष्य-निर्माण महत्व

किसी भी भटके हुए व्यक्ति को ढूंढ लिए जाने पर परमेश्वर आनन्दित होता है, और वह अपने साथ आनन्दित होने के लिए हमें बुलाता है (लूका 15:6-10)। उड़ाऊ पुत्र के पिता ने अपने बड़े बेटे से कहा कि उसे उत्सव में शामिल होना है क्योंकि 'तेरा यह भाई' लौट आया है (लूका 13:52)। आत्मिक रूप से नये जन्मे हमारे भाई हैं, और ज़रूरी है कि हर एक का स्वागत किया जाए क्योंकि नये विश्वासियों का भी स्वर्गीय पिता के सामने वही महत्व है जो हमारा है।

नये नियम में, मसीह में प्रत्येक शिशु का मूल्य व्यक्तिगत रूप से देख-रेख करने में प्रेरिताई संदर्भ में प्रतिबिम्बित हुआ है। पौलुस ने थिस्सलुनीके के व्यक्तियों से कहा कि उसने *'तुममें से हरेक'* का एक पिता के समान मार्गदर्शन किया (1 थिस्सलुनीकियों 2:11, अतिरिक्त बल दिया गया)। उसने इफिसी लोगों को स्मरण कराया कि "मैंने तीन वर्ष तक रात-दिन आंसू बहा-बहाकर, *हर एक* को चितौनी देना न छोड़ा" (प्रेरितों 20:31, बल दिया गया)। यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ से ही पतरस को एक के बाद एक करके शिष्य बनाया। नये परिवर्तित के साथ फोलो-अप करने का प्रथम लक्ष्य प्रत्येक नये विश्वासी को अन्य परिपक्व मसीही या प्रशिक्षित शिष्य निर्माता के संबंध में रखते हुए उनके लिए व्यक्तिगत रूप में देख-रेख को उपलब्ध कराना है।

## शिष्य-निर्माण मित्रता

शिष्य बनाने की मैत्रीपूर्ण सामग्री संभव है कि परिवर्तन होने के साथ आगे बढ़े या फिर एक शिष्य निर्माता के द्वारा विकसित हो, जिसका मसीह के प्रति अपने समर्पण के पश्चात् एक नये विश्वासी के रूप में निर्धारण किया गया है। इसके अतिरिक्त आयु, व्यक्तित्व, नौकरी, लोग जहां रहते हैं और आत्मा के नेतृत्व पर भी ध्यान करें। शिष्य निर्माता और एक नये विश्वासी के बीच आरम्भिक अकुशलता पर सामान्यता दृढ़ता के द्वारा विजय पा ली जाती है। बहुत कम ही अवसरों पर, पुन:नियुक्ति की आवश्यकता हो सकती है।

## शिष्य-निर्माण विश्वासयोग्यता

एक नये विश्वासी का उसके परिवर्तन के प्रथम दिन पर अनौपचारिक शिष्य निर्माण की समय सारणी के साथ एक कलीसिया या/और भावी शिष्य निर्माता के साथ संपर्क करना जटिल होता है (1 से 1/2 घण्टे)। एक नये विश्वासी से मिलने के उस स्थान का चयन करें जो उसके लिए सुविधाजनक हो—नये विश्वासी का घर या उसके द्वारा चयनित अन्य कोई और स्थान।

नये विश्वासी के घर में मिलने से शिष्य निर्माता को परिवार के अन्य सदस्यों और मित्रों से मिलने का अवसर मिल जाता है जिससे नये विश्वासी की गवाही का वह उनके सामने समर्थन कर सके। इससे शिष्य निर्माता यह भी जान पाता है कि नया विश्वासी किस पारिवारिक पृष्ठभूमि से आया है।

शिष्यता के लिए साप्ताहिक रूप में स्थान को लेने की आवश्यकता है। शिष्य निर्माता की विश्वासयोग्यता एक ऐसे अनुभव की रचना करती है जो कि नये विश्वासी के आत्मिक जीवन के लिए जटिल है।

कलीसिया को एक ऐसी उत्तरदायी प्रणाली को बनाने की ज़रूरत है जिसमें शिष्य निर्माता शिष्य निर्माण की प्रत्येक सभा की वरीयता और संबद्धता पर विवरण दे सके।

## शिष्य-निर्माण संरचना

शिष्य निर्माण सभाओं में नये विश्वासियों की पवित्रशास्त्र को जानने में सहायता करने पर केन्द्रित होने की आवश्यकता है कि यीशु के साथ दैनिक संबन्ध में कैसे रहा जाए। कार्य पुस्तक प्रणाली के अध्याय जो कि नये विश्वासी को प्रत्यक्ष रूप में वचन की ओर यह देखने को ले जाएं कि परमेश्वर उनके लिए क्या कह रहा है, सर्वोत्तम विधि है। परमेश्वर के साथ संपर्क स्थापित करना, निम्नलिखित तरह से सीखा जाता है—उसके वचन को सुनने, प्रार्थना में प्रतिक्रिया देने, तथा प्रार्थना करते समय उसके आत्मा के द्वारा बोले जाने पर परमेश्वर की सुनना।

क्षण-प्रति-क्षण परमेश्वर के साथ सहयोग करना प्रत्येक नये विश्वासी का लक्ष्य है। शिष्य निर्माताओं को अध्यायों का प्रयोग करने के साथ साथ इस पर भी बल देने की ज़रूरत है कि बाइबल विषयों को बाइबल-आचरण के कारण सीखा जाता है। शिष्य निर्माण संबन्धों में परमेश्वर नये विश्वासी से इस बारे में जो कुछ भी कह रहा है कि वह उसके बारे में कैसा चाहता है कि वह रहे, उसे लागू करने के लिए समर्थक उत्तरदायित्वता को उपलब्ध कराना ज़रूरी है। प्रगति के उत्सवों का निरंतर और निष्कपट रूप से होना भी ज़रूरी है। (प्रेरित. 11:23)

## शिष्य-निर्माण प्रक्रिया

**प्रथम भेंट**

परिचित हो जाने के पश्चात्, शिष्य निर्माता को यह पूछना ज़रूरी है कि इससे पूर्व कि वे वचन का अध्ययन करें, क्या वह सहायता के लिए परमेश्वर से प्रार्थना कर सकता है। प्रार्थना का सरल, छोटा और दैनिक भाषा में होना ज़रूरी है। यह नये विश्वासियों के लिए एक उदाहरण को रखता है कि प्रार्थना स्वाभाविक रूप में परमेश्वर से बातचीत करना है। अध्याय के अन्त पर, नये विश्वासी को भी उसी तरह से परमेश्वर के साथ बातचीत करने को प्रोत्साहित किया जाना ज़रूरी है। उसकी निष्कपट और अपरिष्कृत प्रार्थनाओं की पुष्टि शिष्य निर्माता द्वारा भी जानी ज़रूरी है। (उदाहरण के लिए: ''यह एक अच्छी प्रार्थना थी। मैं जानता था कि परमेश्वर तुम्हारे द्वारा इन बातों को सुनना पसंद करता है'')

दूसरा, उन शिष्य निर्माण अध्यायों का प्रयोग करें जिन्हें इस तरह से लिखा गया हो कि एक कलीसिया में न जाने वाला व्यक्ति भी उन्हें समझ सकता हो। इन अध्यायों में परमेश्वर के वचन से नये विश्वासी के लिए उन सरल प्रसंगों को लिया जाना ज़रूरी है जो यह दिखाते हैं कि वह विश्वासियों के साथ कितना संपर्क और सहयोग करना चाहता है। अध्याय शृंखला की विषय-वस्तु में इन चीज़ों को शामिल करना ज़रूरी है: (1) यीशु का अनुसरण करने के आबन्ध का निरीक्षण; (2) मार्गदर्शन और आज्ञाकारिता में सहयोग देने हेतु उसकी निरन्तर रहनेवाली उपस्थिति; (3) पहली और दूसरी आज्ञा; (4) पानी और आग का बपतिस्मा; (5) सहभागिता; (6) कार्य और धन-प्रबन्ध सिद्धान्त; और (7) दूसरों को कैसे गवाही दें और शिष्य बनाएं।

तीसरा, नये मसीहियों के साथ पहले अध्याय से होकर जाएं,एक सरल भाषा में वाद-विवाद करते हुए कि अध्याय को कैसे करें, पवित्रशास्त्र के संदर्भों को कैसे ढूंढें, अध्याय की सच्चाई को कैसे समझें, और प्रतिदिन के जीवन में सत्य को कैसे लागू करें।

नया विश्वासी प्रत्येक प्रश्न को पढ़े और उसके साथ-साथ पवित्रशास्त्र के परिच्छेद को, और उसके बाद वे प्रश्न करे जिनके जवाब कार्य पुस्तक में दिये प्रश्नों को देखने पर उसका मार्गदर्शन करनेवाले हों, जिन्हें पवित्रशास्त्र से पढ़ा गया था। केवल एक अच्छा अनुमान लगाने या पहले के ज्ञान के आधार पर जवाब देने पर ही स्थिर न हों। आप इस नये विश्वासी का आरम्भ एक जीवनपर्यन्त अनुशासन में जीवन के लिए जवाबों को खोजते हुए बाइबल का प्रयोग करने के द्वारा कर रहे हैं।

नये विश्वासी को वह बताने दें जिसे वह परिच्छेद में देखता है जो अध्याय में दिये गए प्रश्नों के जवाब हैं- इसके अलावा रुचि की अन्य कोई चीज़ जो वह देखता है। आत्मा उसे उन सत्यों को दिखाएगा जिनके बारे में अध्याय प्रश्नों में नहीं बताया गया है, परन्तु उन्हें पवित्रशास्त्रीय परिच्छेद में व्यक्त किया गया है और उसके लिए सहायक है। पुष्टि के लिए आवश्यक टिप्पणियों में सुधार करें, और गलत प्रश्नों का तब तक उदारता के साथ मार्गदर्शन किया जाना ज़रूरी है जब तक सत्य को अपनाकर पुष्टि न कर ली जाए। इसके बाद प्रत्येक प्रश्न के जवाबों को कार्य-शीट पर दिये गए स्थानों में लिखा जाना ज़रूरी है। बाइबल के सत्य आत्मा के साथ मिलकर पुराने जीवन की रीतियों के स्थान पर नये व्यवहारों का प्रतिस्थापन करते हैं।

चौथा, प्रत्येक सप्ताह एक नियमित समय पर मिलने के लिए सहमत होना-जितना अधिक हो सके नये विश्वासी की सुविधानुसार। इसके अतिरिक्त, मित्रता में विकास करने के लिए साप्ताहिक रूप में औपचारिक सम्पर्क या गतिविधि (कॉफी पीना, खरीददारी करना, मनोरंजन करना या फोन पर वार्तालाप)की आवश्यकता है। इसमें, नया मसीही उन चीज़ों के बारे में बातचीत कर सकता है जो उसके मन और मस्तिष्क में हैं या प्रश्न पूछ सकता है। इससे शिष्य निर्माता भली-भांति जान पाता है कि नया विश्वासी आत्मिक रूप से बढ़ रहा है या उसके संघर्ष और महत्व क्या हैं। नये मसीहियों के साथ मिलने और समय बिताने पर विश्वासयोग्य रहें। उसका आत्मिक जीवन इस पर निर्भर है।

अन्ततः, इस भेंट के अन्त पर प्रार्थना, अध्ययन और अध्याय मूल्यांकन के महत्व को बताएं। परमेश्वर के साथ उसके समय बिताने में समय और स्थान को नियोजित करने में उसकी सहायता करें, और भेंट करने में उसे परमेश्वर के साथ विश्वासयोग्य बने रहने को प्रोत्साहित करें।

**दूसरी भेंट**

अगले अध्याय पर जाएं—या पहले अध्याय को समाप्त करें—नए विश्वासी को आवश्यक सहायता देते हुए। उससे पूछें कि पूर्व की भेंट में उसने जो कुछ सीखा

क्या उसने उसे अपने जीवन पर कार्यान्वित किया है ? उसकी निष्ठा की छान-बीन करें, और यदि वह परमेश्वर की उपस्थिति या उस समय में उसके साथ परमेश्वर के बोलने के प्रति सतर्क हुआ है—या सप्ताह में किसी अन्य समय पर।

यदि नये विश्वासी को अध्याय संरचना और शिक्षण प्रक्रिया के संबन्ध में सुविधा प्रतीत हो तो अपनी अगली भेंट से पहले उसे नये अध्याय का निर्धारण स्वयं करने दें। उसे अपना सर्वोत्तम करने को प्रोत्साहित करें और जो कुछ अस्पष्ट है उसमें उसकी सहायता करें।

**तीसरी और शेष भेंटें**

पिछली भेंट में आपने जिस अध्याय को पढ़ा उसे पूरा करें। अपने नये विश्वासी को अध्ययन किये गए परिच्छेद में से सत्य को देखने में मार्गदर्शन दें। अध्याय का निर्धारण करने में उसके जवाबों और प्रश्नों और अन्य प्रतिक्रियाओं पर विचार-विमर्श करें। यदि वह उन प्रश्नों पर विचार-विमर्श करना चाहता है जो तात्कालिक रूप में उसके जीवन के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं, उससे नम्रतापूर्वक कहें कि आप बाद में उसके प्रश्नों के जवाब देंगे और अध्याय पर ही बने रहें। यदि विषय उसे शिक्षण से दूर ले जाने वाला है तथा बाद का अध्याय विषय से संबन्धित है तो, उसी अध्याय पर जाएं और उसके अत्यावश्यक विषय पर कार्य करें। एक के बाद एक शिष्य बनाने में नम्यता एक उत्कर्षता है। सुनिश्चित हों कि आप इस पर लगातार विचार-विमर्श कर रहे हैं कि वह उन अध्यायों को कैसे कार्यान्वित कर रहा है जिन्हें उसने प्रतिदिन के जीवन से सीखा है। यह आपकी भेंटों के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए एक मैत्रीपूर्ण उत्तरदायित्वता को स्थापित करता है—क्योंकि इस नये विश्वासी को वचन का करनेवाला बनना है। यह प्रगति का उत्सव मनाने की अनुमति देता है जो उसको प्रोत्साहित करता है। एक साथ प्रार्थना करते हुए, जिसमें प्रगति के लिए धन्यवाद देने के साथ-साथ उसके जीवन में परमेश्वर-कार्य का प्रमाण भी हो। प्रार्थना में दिन-प्रतिदिन उसके द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों के लिए परमेश्वर की सहायता की मांग को भी शामिल करना है।

प्रत्येक भेंट के अन्त पर, नये अध्याय का निर्धारण करें। बाकी के अध्यायों के लिए भी इसी प्रक्रिया को जारी रखें। मैं 6 से 8 माह, एक के बाद एक समय फ्रेम को प्रस्तावित करता हूँ। इस शिष्य निर्माण प्रक्रिया को समाप्त कर लेने के पश्चात्, कुछ कलीसियाएं नये विश्वासियों को सीखनेवाले समूहों में परिवर्तित कर देती हैं। एक के बाद एक शिष्य बनाने का अन्त होने पर, नये विश्वासी को किसी भी ऐसे समूह से जुड़ना ज़रूरी है जो शिक्षण और विकास की अगली अवस्था में उसके लिए उपयुक्त हो। सामूहिक शिक्षण प्रक्रिया में उसके निरन्तर सहयोग को मॉनीटर करने के लिए पथ प्रणाली का होना ज़रूरी है।

## शिष्य-निर्माण गति

प्रत्येक भेंट में अध्याय को पूरा करने की अपेक्षा नियमित रूप से भेंट करना महत्वपूर्ण है। कई बार नये विश्वासी के जीवन में दबाव देने वाली आवश्यकताओं से गुज़रने का अर्थ है कि एक अध्याय को समाप्त करने के लिए अभी कई सत्रों का होना ज़रूरी है। जीवन के सत्य को समझने और कार्यान्वित करने के लिए जिस भी समय की ज़रूरत है उसे देना महत्वपूर्ण है। यह एक शिशु को भोजन खिलाने के समान है—जिसमें शिशु निर्धारित करता है कि आप उसे कितनी शीघ्रता से खिलाते हैं। शिष्य निर्माण की गति में नम्यता एक के बाद एक प्रक्रिया में आगे बढ़ती है।

## शिष्य-निर्माण जोड़ता है

नये विश्वासी की कलीसिया या एक छोटे समूह में मेज़बानी करने के द्वारा शिष्य निर्माता नये विश्वासी का संयोजक बन जाता है। शिष्य-निर्माता या तो भेंट के समय पर नये विश्वासी से मिलता है या फिर उसे नियंत्रण करने देता है। शिष्य-निर्माता को उसके साथ बैठकर उसे लोगों और गतिविधियों के बारे में परिचय देना ज़रूरी है। यह एक ऐसी प्रमुख भूमिका है जो शिष्य निर्माता द्वारा विश्वासयोग्यता के साथ पूरी की जानी ज़रूरी है।

## पानी का बपतिस्मा

पानी का बपतिस्मा नये विश्वासियों के लिए आज्ञाकारिता का एक महत्वपूर्ण कदम है जिसके लिए उसके नये जन्म के पश्चात् जितना अधिक संभव हो सके प्रोत्साहित किया जाना ज़रूरी है। शिष्य-निर्माता नए विश्वासी की एक संक्षिप्त गवाही को तैयार करने में बपतिस्मे से पूर्व बताए जाने के लिए सहायता कर सकता है। समय को बचाने तथा अधीरता से बचने के लिए विश्वासी इसे लिखकर पढ़ सकता है। (अन्य विकल्प उसकी गवाही के एक संपादित वीडियो को दिखाना है।) यह एक अच्छा विचार है कि शिष्य निर्माता पानी के बपतिस्मे में अपने शिष्य-निर्माता के लिए प्रार्थना करने के द्वारा सहयोग दे या शिष्य निर्माता के बपतिस्मा देने के द्वारा। नये विश्वासी के लिए यह अवसर है कि अपने बपतिस्मे की गवाही देने तथा अपनी गवाही को सुनने के लिए परिवार और मित्रों को आमन्त्रित करें।

## मापनेवाली प्रगति

शिष्य निर्माता को धैर्य पर अभ्यास करने के साथ-साथ वचन और आत्मा को समय देना है कि उसके पूर्व के जीवन को परमेश्वर की चीज़ों पर रखते हुए परिवर्तित करे। नये विश्वासी के जीवन में परिवर्तन के लिए मसीह के प्रभुत्व के प्रति प्रतिक्रिया देने की आवश्यकता होती है जिसमें किसी भी तरह का मानवीय दबाव न हो। परिवर्तन के उत्सव को उसी समय किया जाना चाहिए जब परिवर्तन दिखाई दे। रूपान्तरण के परिमेय प्रमाण में निम्नलिखित को सम्मिलित किये जाने की आवश्यकता है: प्रार्थना और बाइबल अध्ययन करने का निरन्तर प्रयास; पवित्रशास्त्र और प्रार्थना द्वारा परमेश्वर की ओर से सुनने के प्रमाण, जिसमें आज्ञाकारिता आती है, और, परमेश्वर तथा लोगों से प्रेम करने में विकास करने के बोध की खोज।

## पुनरुत्पादन

मूल शिष्य-निर्माण उस समय तक पूरा नहीं होता जब तक कि नया विश्वासी अन्य नये विश्वासी को शिष्य न बनाए। शिष्य निर्माता को नये विश्वासी को उसके संबन्धों के नेटवर्क में एक गवाह बनने को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। उसे दिखाएं कि परमेश्वर अन्य विश्वासियों की सहायता करने में उसकी सहायता कर सकता है। शिष्य के शिष्य निर्माण का कार्य आरम्भ करने पर नये विश्वासी के लिए शिक्षण की सुविधा दी जाने की आवश्यकता है।

## पहचान

मूल शिष्य-निर्माण प्रक्रिया को पूरा करने के पश्चात् ज़रूरी है कि शिष्य निर्माता व नये विश्वासी को रविवार की प्रात: सेवकाई में सम्मानित किया जाए। याजक विश्वासी को पूर्ति और बाइबल अध्ययन का प्रमाण पत्र सार्वजनिक रूप से इस बात की पुष्टि करने के लिए दे सकता है कि शिष्य निर्माण अनुभव के महत्व में दोनों व्यक्ति शामिल हैं।

## शिष्य बनाने की तैयारी

**शिष्य निर्माता को भरती करना**

शिष्य-निर्माण पर एक संदेश शृंखला का प्रचार करने के पश्चात्, आप को प्रशिक्षण के लिए अपनी मण्डली में संभावित शिष्य निर्माता प्रत्याशी को प्रेरित करना होगा। प्रत्याशियों तक तथापि व्यक्तिगत रूप से जाने की आवश्यकता है,

## शिष्यता निर्णय लने में नेतृत्व करती है

**एक गैर-विश्वासी की जीवन परिवर्तित करने वाले निर्णयों की तैयारी में निम्नलिखित के आधार पर मित्रता के सन्दर्भ में पूर्व निर्णय शिष्य-निर्माण हो सकता है:**

आबन्ध की एक स्पष्ट समझ।

क. उदाहरण के लिए, यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि यीशु अनन्त जीवन केवल उन्हें ही देता है जो उसके अधिकार के प्रति समर्पण करते हैं। समर्पण के बिना कोई उद्धार नहीं।

ख. उस शब्दावली का प्रयोग करें जो कलीसिया न जाने वाले व्यक्ति के लिए स्पष्ट हो तथा व्यक्ति से संबन्धित शब्दों का प्रयोग करें। उदाहरण के लिए यीशु मछुवारों से मछली पकड़ने तथा कुएं पर स्त्री से पानी के लिए बोला।

परमेश्वर की ओर से यह दृढ़ धारणा आती है कि सुसमाचार सत्य है। एक व्यक्ति को कायल करना तथा मसीह के निकट लाना आत्मा का कार्य है। निर्णय व्यक्ति को ही लेना है। यीशु ने कहा, ''जब दाना पक जाता है, तब वह (किसान) तुरन्त हंसिया लगाता है'' (मरकुस 4:29)। हमारी भूमिका प्रार्थना करने की है।

यीशु के साथ संबन्ध में प्रवेश करने का सूचीगत निर्णय उसकी शर्तों पर आधारित है। आबन्ध पर हस्ताक्षर करते हुए प्रार्थना को परिभाषित किया जा सकता है और शब्दों का नवीनीकरण प्रार्थना में सम्मिलित किया जाना ज़रूरी है। उद्धार के ख़ोजियों को स्वयं प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, या फिर जैसा बताया गया उसके अनुसार उनका प्रार्थना में नेतृत्व किया जा सकता है। अनौपचारिक शिष्य निर्माण अत्यधिक औपचारिक शिष्य निर्माण की अवस्था को स्थापित करता है जिसकी बाद में आवश्यकता होती है।

---

**जिम हॉल,** स्प्रिंगफील्ड, मिसौरी

न कि सार्वजनिक रूप में—और प्रशिक्षण देने के लिए निमंत्रित करने की भी। यह एक व्यक्तिगत निमंत्रण प्रशिक्षण के लिए अयोग्य व्यक्तियों के चुने जाने से भी बचाता है।

शिष्य निर्माता में निम्नलिखित विशेषताओं को सम्मिलित किये जाने की आवश्यकता है: यीशु और लोगों के लिए सुसंगत और उदार प्रेम; परमेश्वर की आज्ञा पालन करने का समर्पण; अच्छे नौसिखिये; और, अच्छे श्रोता व समर्पण-कर्त्ता। भावी प्रत्याशियों का बपतिस्मा पवित्र आत्मा में भी होना चाहिए या इस आत्मिक दान की खोज वे ईमानदारी से करें। प्रत्याशियों को प्रयोग की जाने वाली शिष्य निर्माण प्रणाली में निपुण होने के लिए भी प्रशिक्षित होने की आवश्यकता है। प्रशिक्षण का इसलिए भी महत्व है क्योंकि अधिकांश ऐसे हैं जिन्हें पहले कभी शिष्य नहीं बनाया गया। प्रशिक्षण उन्हें शिष्य निर्माण के लिये निपुणताओं व आत्मविश्वास को विकसित करने (या उसमें सुधार लाने) के योग्य करेगा।

**शिष्य निर्माता प्रशिक्षण**

यह सुझाव दिया गया है कि याजक एक के बाद एक शिष्य-निर्माण और शिष्य निर्माण संचालन दोनों में ही 'नमूना' बने। याजक की संबद्धता शिष्य निर्माण सेवकाई के अनुभव को बढ़ाती है, और शिष्य निर्माण के द्वारा वह ऐसे कीमती अनुभव को प्राप्त करता है जो दूसरों को प्रशिक्षण देने में वृद्धि करेगा। यह शिष्य निर्माताओं को महत्व दिये जाने के समान प्रतीत होता है क्योंकि उनका याजक कलीसिया में चरावाही प्रक्रिया के एक भाग को उन पर सौंप रहा है। प्रशिक्षण में निम्नलिखित को सम्मिलित किया जाना चाहिए:

1. बाइबल विषयों और संरचना से परिचित होने के लिए निजी रूप से नये विश्वासियों के अध्यायों का अध्ययन करना।
2. शिष्यता सामग्री पर एक समूह के रूप में प्रश्नों और जवाबों पर विचार-विमर्श करने के लिए साप्ताहिक आयोजन करना। प्रशिक्षक और प्रशिक्षार्थियों को अनाप-शनाप भाषा का प्रयोग करने से बचते हुए एक दूसरे की सहायता करने की आवश्यकता है और प्रतिदिन ऐसी शब्दावली का प्रयोग करने की जिसे नये विश्वासी समझें। यह प्रतिष्ठित कलीसियाओं के लिए एक चुनौती हो सकता है, परन्तु नये विश्वासियों की सहायता करना कठिन है।
3. धैर्यपूर्वक और ध्यानपूर्वक सुनने का अभ्यास करना।
4. अपनी पृष्ठभूमि और विकासशील अनुभवों का ईमानदारीपूर्वक और खुले रूप में अभ्यास करना। शिष्य-निर्माण मसीही जीवन में विकासशील प्रक्रिया को समझने में एक नये मसीही की सहायता करता है।
5. शिष्य-निर्माण के लिए एक नये विश्वासी या एक संघर्षरत् विश्वास के कार्यभार को उस समय स्वीकार करना जब प्रशिक्षण प्रगति में हो। (इसमें सेवा में प्रशिक्षण का लाभ भी आता है।)

प्रभावी शिष्य निर्माता प्रशिक्षण एक ऐसा अनुभव है जिसमें कार्य करने के द्वारा मार्गदर्शन दिया जाता है।

**शिष्य निर्माता संभावना**

अनुभव से पता चलता है कि एक प्रतिक्रिया देने वाले नये विश्वासी को एक वर्ष के अन्दर ही एक दूसरे अन्य विश्वासी को शिष्य निर्माता बनने के लिए शिष्य बनाया जा सकता है; अत: इस तरह से प्रति वर्ष शिष्य-निर्माताओं की संख्या दुगनी हो जाती है। एक पास्टर को अपनी कलीसिया में संभावित शिष्य निर्माताओं की संख्या को निर्धारित करने की आवश्यकता है, जिन्हें वह प्रशिक्षण दे सके और यदि प्रति वर्ष शिष्य निर्माताओं की संख्या दुगनी होती है तो कलीसिया के संभावित संख्यात्मक विकास पर ध्यान करे। उदाहरण के लिए, यदि वह 10 शिष्य निर्माताओं को प्रशिक्षण देता है जिनमें से हर एक शिष्य बनाता और प्रति वर्ष एक शिष्य निर्माता को जोड़ता है तो 5 वर्षों में कलीसिया में परिणाम 320 शिष्य निर्माताओं के रूप में हो सकता है (10+10= 20+20=40+40=80+80=160+160=320)। परमेश्वर की योजना विश्वासी के जीवन को रूपान्तरित करनेवाले परिणाम के रूप में दिखती है, और सबसे श्रेष्ठ परिणाम विश्वासियों की बढ़ती संख्या में होता है।

## निष्कर्ष

सभी जातियों को शिष्य बनाना परमेश्वर की कलीसिया के लिए एक प्रमुख कार्य का चित्रण है। परमेश्वर के सामने खड़े होने पर, उनके प्रति हमारी आज्ञाकारिता का क्या रिकार्ड होगा जिनका हमने एक पास्टर अथवा एक याजक के रूप में नेतृत्व किया और एक अनुयायी के रूप में हमारे जीवन का? हमारी आज्ञाकारिता के परिणामस्वरूप कितने प्रभु के सम्मुख खड़े हो पाएंगे? हम उस भावी उत्सव का इस समय अनुभव कर सकते हैं जबकि नये विश्वासी को शिष्य बनाना कलीसिया के लिए 'नये और विकासशील' जीवन को लाता है। मसीह में जो शिशु हैं उन्हें प्रेम करना एक फलवन्त कार्य है जो महान रूप

# सच्चा निर्णयः
## उद्धार और प्रभुत्व

**बिली ग्राहम की पत्रिका। प्रचार कार्य पर केन्द्रित प्रकाशन के लिए 'निर्णय' एक उपयुक्त शीर्षक है। इसके अलावा, एक-एक करके व्यक्तिगत प्रचार कार्य में या एक सार्वजनिक प्रचारीय सर्विस उद्धार में, निर्णय केन्द्रीय विषय हैं।**

अपने पूरे जीवन में मैंने पिन्तेकुस्तल कलीसियाओं में इस प्रश्न को कई बार सुना है: ''आपने मसीह को अपने 'उद्धारकर्त्ता' के रूप में ग्रहण किया है—परन्तु क्या आपने उसे अपने प्रभु के रूप में ग्रहण किया है?'' यह प्रश्न लोगों को आत्मिक समर्पण के गहन स्तर पर प्रेरित करने वाला होना चाहिए। दुर्भाग्यवश, यह कुछ लोगों के मनों में उद्धार और प्रभुत्व को लेकर गैर-बाइबल संबन्धी विभाजन की रचना भी कर सकता है।

हमें कभी भी गैर-विश्वासियों को यह अर्थ नहीं निकालने देना चाहिए कि, उद्धार केवल नरक से बचने का एक विषय है। मसीह न केवल हमें पाप के 'दण्ड' से स्वतन्त्र कराने को आया परन्तु पाप की 'सामर्थ' से भी।

मेरे जीवन के दो महत्वपूर्ण निर्णय वेदी पर ही लिये गये थे। पहला- मसीह को ग्रहण करना तथा; दूसरा- विवाह था। इन दोनों निर्णयों में कई समानताएं हैं। प्रत्येक निर्णय एक विशिष्ट क्षण पर भविष्य के चुनावों को निर्धारित करते हुए लिया गया।

जब मैंने कहा, ''मैं करता हूँ'' — मेरे विवाह के अवसर पर—ये छोटे शब्द—अपने समर्पण के प्रति मुझे जीवन भर के परिणामों के बारे में थोड़ा सा ही ज्ञान था। इस एक निर्णय से मैं कई और हज़ारों निर्णय कर सका। मुख्य रूप में, मैं अपने अधिकांश भोजनों में से खाने का निर्णय ले रहा था, भिन्न तरह के भोजन प्रस्तुत करने का तरीका, रसोई-घर में किस तरह का फर्नीचर होगा या खिड़कियों पर किस तरह के पर्दे लगेंगे। रूथ से मेरी पत्नी बनने के बारे में पूछते हुए भी उसके स्वाद, वरीयताओं और कई चीज़ों के संबन्ध में उसके निर्णय जुड़े थे।

7 वर्ष की आयु में, मैंने मसीह को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करने का निर्णय लिया। यद्यपि मैं इसे उस समय नहीं समझ पाया था, मैं कई और हज़ारों निर्णय भी कर रहा था। मैं इस बात का निर्धारण कर रहा था कि प्रत्येक प्रभु के दिन पर मैं कहां होऊंगा, प्रत्येक रुपये के 10 पैसे का मुझे क्या करना होगा, मुझे किस तरह की पुस्तकों को पढ़ना होगा, और किस तरह के मनोरंजन कार्यक्रमों में मुझे भाग लेना होगा।

मसीह को ग्रहण करने पर, हम पापों के क्षमा किये जाने के लाभ को प्राप्त करते हैं। परन्तु हमारे जीवनों में उसके अधिकार के प्रति समर्पण करने के द्वारा हमें भी यीशु के बलिदान के प्रति एक उपयुक्त प्रतिक्रिया देनी है।

व्यक्तिगत प्रचार-कार्य या सार्वजनिक सेवा में जब हम किसी के साथ मसीह को ग्रहण करने की प्रार्थना करते हैं, तो हमें इस बात से आश्वस्त होना चाहिए कि वे अपने द्वारा लिये जाने वाले निर्णयों को समझते हैं। उद्धार के समय पर हम परमेश्वर के अनुग्रह से क्षमा प्राप्त करते और मसीह के प्रभुत्व के अधीन आते हैं।

परमेश्वर का वचन सिखाता है कि एक व्यक्ति द्वारा मसीह को ग्रहण करने का निर्णय लेना प्रचार-कार्य की अन्तिम रेखा नहीं है। यह उसका अनुसरण करते हुए एक प्रवेश का स्थान है।

**रेण्डी हर्स्ट,** स्प्रिंगफील्ड, मिसौरी

में विश्वास में वृद्धि करता है और मंच पर से आत्मिक अभिभावकों द्वारा इसकी पूर्ति को अनुभव किया जाता है। जब शिष्य निर्माता आत्मिक दादा-दादी बन जाते हैं तो आनन्द महान होता है। एक नये परिवर्तित शिष्य निर्माण की सेवकाई की तुलना में जो नये विश्वासियों को फसल के कार्य में उनके साथ-साथ जिन्होंने उन्हें शिष्य बनाया शिष्य निर्माता बन जाते हैं, प्रत्येक व्यक्ति के लिए 'प्रभावी कार्य' में 'सेवकाई के कार्य के लिए धर्मी जनों को तैयार करने' से बड़ी और कोई अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। इस सबमें परमेश्वर की योजना थी और इसमें लापरवाही के कारण राज्य को बहुत हानि हुई है। जब हम निर्देशों का पालन विश्वासयोग्यता से करते हैं तो राज्य फलता-फूलता है, और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा आनन्द मनाते हैं। काश हम स्वयं को फसल को सुरक्षित रखने या बढ़ाने के लिए दे सकें, उन विधियों का प्रयोग करते हुए जिन्हें हमारे फसल के प्रभु ने नमूने के रूप में रखा है। ■

*__जिम हॉल__, न्यू लाईफ क्रिश्चियन मिनिस्ट्रीज़ के संस्थापक, स्प्रिंग फील्ड, मिसौरी। असेम्बलीज़ ऑफ गॉड के साथ एक राष्ट्रीय यू.एस. मिशनरी, हॉल ने यू.एस. के विख्यात जनसंख्या केन्द्रों पर ध्यान दिया है, इसमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं: मित्रता प्रचार और शिष्य निर्माण में प्रशिक्षण, प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में प्रयुक्त की जाने वाली प्रकाशन सामग्री, और 'अरबन बाइबल ट्रेनिंग सेन्टर्स' के साथ 35 से भी अधिक शहरों में अरबन (शहरी) याजकों को सहयोग देना।*

# जीवन के आरम्भ को महत्व देना:

# जैविक और पूर्व वैवाहिक परामर्श

द्वारा: क्रिस्टीना एम.एच.पॉवेल

*नव-विवाहित दम्पत्तियों की सहायता करने के द्वारा जिसमें परिवार-नियोजन विषय भी आते हैं, याजकों के पास अवसर होता है कि एक मसीही घर के आधार की नींव रखें।*

याजकीय सेवकाई का सबसे बड़ा आनन्द जीवन के प्रमुख मील-पत्थरों के द्वारा लोगों का मार्गदर्शन करने का अवसर प्राप्त होना है जैसे विवाह में दो जीवनों को जोड़ना। पूर्व-विवाह परामर्श के समय में याजकों के पास अवसर होता है कि युवा दम्पत्तियों को वैवाहिक जीवन से संबन्धित कई विषयों पर शिक्षित कर सकें जिसमें जैविक विषय भी आते हैं। आइये उन जैविक विषयों को देखें जिनका सामना

दम्पत्तियों को वैवाहिक जीवन के आरम्भ में करना होगा तथा उन तरीकों को भी देखें जो यह शिक्षा देते हैं कि इन विषयों को पूर्व-वैवाहिक परामर्श के साथ जोड़ा जा सकता है।

## सांस्कृतिक बनाम गर्भधारण करने पर बाइबल दृष्टिकोण

दम्पत्ति अपने विवाह के दिन पर एक दूसरे के साथ पति पत्नी के रूप में जीवन को बांटने के प्रति उत्तेजना में लिपटे होते हैं। माता-पिता बनने और एक परिवार के रूप में जीवन बिताने का विचार प्राय: एक दूरवर्ती संभावना के समान प्रतीत होता है, जीवन का एक ऐसा युग जो अभी पूरा होना है। तथापि, पूर्व-वैवाहिक परामर्श गर्भधारण करने जैसे विषयों में गर्भधारण करने के समय के साथ-साथ ऐच्छिक बच्चों की संख्या को भी शामिल किया जा सकता है। और इस के साथ साथ पुनरुत्पादक तकनीक को भी जोड़ा जा सकता है।

विवाह के समय दम्पत्ति की आयु का उनके गर्भधारण करने के समय पर प्रभाव पड़ता है। 20 से कम आयु के दम्पत्तियों की आशा एक परिवार का आरम्भ करने से पूर्व अपने लक्ष्यों को पूरा करने की होती है। उदाहरण के लिए, संभव है कि दोनों या दोनों में से एक अपनी शिक्षा को पूरा करने या अपने लिए जीविका को निर्धारित करने की इच्छा रखता हो और बच्चे उत्पन्न होने से पूर्व वे वित्तीय रूप से स्थिरता प्राप्त करना चाहते हों। 30 वर्ष के दम्पत्ति अपनी शिक्षा को पूरा करने के साथ-साथ जीविका और वित्तीय लक्ष्यों को पूरा कर अब बच्चों के लिए तैयार होते हैं।

बच्चे होने से पूर्व अपने संबन्धों को मज़बूती देने के लिए समय देना समझदारी है, अन्य लक्ष्यों को प्राप्त करने में बच्चों को कभी भी एक बोझ नहीं समझना चाहिए। बच्चों के होने का एक बाइबल संबन्धी दृष्टिकोण यह है "देखो, लड़के यहोवा के दिये हुए भाग हैं, गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है" (भजन संहिता 127:3)। मानवजाति के लिए परमेश्वर की एक सबसे बड़ी आज्ञा यह थी, "फूलो फलो और पृथ्वी में भर जाओ" (उत्पत्ति 1:28)। यदि हम जीवन के प्रति एक लम्बा दृष्टिकोण लेते हैं, तो हममें भविष्य का स्पर्श करने के लिए बच्चों के होने की योग्यता का अन्त हो जाएगा, जो कि हमारे लिए परमेश्वर के महान प्रतिफलों में से एक है। बच्चे हमारे जीवनों को एक अर्थ देते हैं और हमारे सीमित जीवन को श्रेष्ठ बनाते हैं।

दुर्भाग्यवश, आपातकालीन सदैव महत्वपूर्ण का स्थान ले लेता है। वर्तमान लक्ष्यों को प्राप्त करने का दबाव जीवनपर्यन्त लक्ष्यों को प्राप्त करने की ओर जा सकता है। समय की मांग पर धर्मी बच्चों को पोषित करने का लक्ष्य एक ओर हट सकता है। हमारी संस्कृति में बाहरी दिखावे और केरियर की सफलता को अधिक महत्व दिया जाता है। इस तरह के वातावरण में, वे बलिदान जो एक स्त्री को करने होते हैं, जैसे गर्भधारण के समय में होने वाले शारीरिक बदलाव केरियर की सफलता को धुंधला कर सकते हैं तथा बच्चे के उत्पन्न होने के बाद भी उसके लिए नौकरी में काफी परेशानी आती है, स्त्री बच्चे उत्पन्न करने में देरी करने के साथ-साथ उस समय को आगे बढ़ा देती है। इसके अतिरिक्त हमारी संस्कृति में भौतिक सम्पदा को इतना अधिक महत्व दिया जाता है कि एक पुरुष पिता बनने से पहले अपनी आय में संभावित वृद्धि करने की इच्छा रखता है।

मसीही दम्पत्तियों के लिए, प्रत्येक बच्चा परमेश्वर की योजना में आता है, चाहे उसका जन्म माता-पिता की योजना के अनुसार न भी हुआ हो (भजन संहिता 139:15,16; इफिसियों 1:4-14)। तथापि माता-पिता के लिए यह ज़रूरी है कि वे बच्चों के बीच अन्तर रखने के साथ-साथ बच्चों की संख्या पर नियंत्रण करने की ओर भी ध्यान दें, एक मसीही दम्पत्ति को आने वाले बच्चे को प्रेम व ग्रहण करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

पूर्व-विवाह की तैयारी के एक भाग में, दम्पत्तियों को बच्चों को परमेश्वर की ओर से एक आशीष के रूप में देखने के लिए भी प्रोत्साहित किया जा सकता है और इस पर परामर्श दिया जा सकता है कि वे बच्चों का पालन-पोषण करने के उत्तरदायित्व को गंभीरता से लें। अन्त में, दम्पत्तियों को प्रार्थना सहित परिवार नियोजन (याकूब 1:5), एक दूसरे के साथ निष्ठापूर्वक सम्पर्क रखने (इफिसियों 4:25), और मानवजाति की पवित्रता का आदर करने (यिर्मयाह 1:3) के बारे में निर्णय लेने की सलाह दी जा सकती है।

## क्या चीज़ मानव-जीवन को पवित्र बनाती है?

मानव-जीवन की पवित्रता पर बोलते हुए, हम इस सच्चाई की पुष्टि कर रहे होते हैं कि मानव-जीवन पवित्र है। 'पवित्रता' का अभिप्राय परमेश्वर से संबन्धित होने से है। मानव-जीवन का संबन्ध परमेश्वर से है। "क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिये जीता है और न कोई अपने लिये मरता है। क्योंकि यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिये जीवित हैं; और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं, सो हम जीए या मरें, हम प्रभु ही के हैं" (रोमियों 14:7-8)। मानव-जीवन अनन्त है (मत्ती 25:46)। इसके अतिरिक्त, मानव-जीवन इसलिए पवित्र है क्योंकि हमें परमेश्वर की समानता में बनाया गया है (उत्पत्ति 5:1)। मानव-जीवन परमेश्वर द्वारा बनाए गए सभी जीवनों में से अद्वितीय है कि मसीह स्वर्ग से नीचे आया और एक मनुष्य बना (यूहन्ना 1:14) हमें बचाने को (1 तीमुथीयुस 1:15)। बदले में, हमें मसीह पर विश्वास करने और परमेश्वर के साथ एक होने के बीच चुनाव करने की स्वतन्त्रता मिली है। चूंकि बाइबल मानव-जीवन की पवित्रता के प्रति इतनी अधिक स्पष्ट है कि हम यह प्रश्न कर सकते हैं: जीवन का आरम्भ कब हुआ?

## जीवन का आरम्भ कब हुआ?

एक व्यक्ति के रूप में आपको कब एक अस्तित्व मिला? जब आप अपने पहले पहले कदम ले रहे थे उस समय 'आप' कहां थे? आप कब एक नवजात शिशु थे? क्या आप उस समय अस्तित्व में थे जब अपनी मां के गर्भ में आपका हृदय पहली बार एक लय पर धड़कना आरम्भ हुआ था? क्या उस समय आपका कोई अस्तित्व था जब आप कोशिकाओं की एक गेंद के रूप में थे, जिसका एक अद्वितीय वंशागत क्रम था जिससे आपकी शारीरिक विशेषताओं को जाना जा सके? एक अ-निषेचित अण्डे के रूप में भी क्या आपके जीवन का आरम्भ हो गया था?

मानव विकास एक निरन्तर चलनेवाली प्रक्रिया है जो जीवन के अन्त पर आकर समाप्त होती है। कोशिकाओं की गेंद जो बाद में भ्रूण और बीजाण्डासन (placenta) का रूप ले लेती है जो बाद में एक बच्चे के अल्पाहार लेने, सेब का जूस पीने और बाद में परिवार के साथ रसोई की मेज़ पर आ जाता है। तथापि, यदि हमें एक नये जीवन के आरम्भ को चिन्ह-रेखा को खींचने की आवश्यकता पड़े तो वह रेखा गर्भधारण के समय से ही खींची जाती है। एक अ-निषेचितअण्डे से व्यक्ति की विशेषताओं का ज्ञान नहीं होता। अण्डे के निषेचित हो जाने पर एक विशिष्ट व्यक्ति का वंशागत क्रम बनता है। दिया गया समय और उपयुक्त पोषण, वह अकेली कोशिका एक व्यस्क व्यक्ति के

*बाइबल इस बात की पुष्टि करती है कि हमारे मां के गर्भ में रहने के समय में ही परमेश्वर की उपस्थिति और हमारे जीवनों के लिए उसके उद्देश्य का निर्धारण हो जाता है (भजन संहिता 139:12-16; लूका 1:39-44)।*

रूप में विकसित होने में समर्थ होती है जो दस खरब कोशिकाओं से मिलकर बना होता है।

बाइबल इस बात की पुष्टि करती है कि हमारे मां के गर्भ में रहने के समय में ही परमेश्वर की उपस्थिति और हमारे जीवनों के लिए उसके उद्देश्य का निर्धारण हो जाता है (भजन संहिता 139:12-16; लूका 1:39-44)। अत:, हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि परमेश्वर अजन्मे बच्चों को महत्व देता है।

## हव्वा: भयानक व अद्भुत रीति से बनाई गई

भजनकार इस बात की प्रशंसा करता है कि मानव देह को कैसे ''भयानक व अद्भुत रीति से बनाया गया'' (भजन संहिता 139:14)। मानव देह की अद्भुत चीज़ों में से एक अद्भुत उदाहरण स्त्री उर्वरता की चक्रीय लय तथा स्त्री की देह का मानव जीवन को पोषण और सुरक्षा देने की योग्यता का होना है। एक पुरुष को विवाह के लिए तैयार करने हेतु उसे स्त्री की जैविक अवस्था के विषय अवगत कराना महत्वपूर्ण है। एक विज्ञान की पुस्तक से इस सब के बारे में पता करने पर, एक याजक पूर्व वैवाहिक परामर्श का संचालन कर सकता है जिसमें पुनरुत्पादित विषयों पर बुद्धिमत्तापूर्वक किये जाने वाले चुनावों पर आवश्यक मार्गदर्शन दिया जाए।

एक स्त्री के संसेचित होने के भिन्न पहलुओं में जोकि पारिवारिक नियोजन संबन्धी निर्णय लेने में समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं, निम्न चीज़ें आती हैं—अण्डोत्सर्ग, नियमित संसेचिता के हार्मोन, गर्भधारण और स्तनपान। एक स्वस्थ पुरुष सदैव संसेचित होता है क्योंकि उसकी देह में प्रति सैकेण्ड एक हज़ार की दर पर लगातार शुक्राणुओं का उत्पादन होता रहता है। एक स्वस्थ स्त्री प्रत्येक माह में केवल एक सप्ताह की संसेचित होती है, प्रतिमाह के चक्र पर कठिनाई से ही एक अण्डे का उत्पादन करते हुए।

अण्डोत्सर्ग की प्रक्रिया में एक अण्डा बनता है और अण्डाशय से निकल जाता है। अण्डोत्सर्ग के पश्चात् 24 घण्टे तक संसेचन न होने पर अण्डा मर जाता है। शुक्राणु ही अण्डे को संसेचित करते हैं। अण्डोत्सर्ग माह में एक बार होता है, परन्तु एक स्त्री को उस समय में संसेचित माना जाता है जब उसमें से निकलने वाला तरल पदार्थ शुक्राणु को जीवित रखता है। शुक्राणु एक स्त्री के पेट में 5 दिनों तक जीवित रह सकता है। अण्डोत्सर्ग के एक बार हो जाने के बाद, स्त्री के गर्भधारण करने की कोई संभावना नहीं होती।

हार्मोन आधारित जन्म नियंत्रण करने की विधियां प्राथमिक रूप से अण्डोत्सर्ग से बचने के द्वारा कार्य करती हैं। इसके अलावा शुक्राणु के द्वितीय प्रभाव के रूप में जाने से रोक लगाना है, जिससे अण्डे के संसेचित होने को रोका जा सके। जन्म नियंत्रण विधियां शुक्राणु को अण्डे को संसेचित करने से रोकते हैं। संसेचित से सावधान करने वाली विधियों में शरीर के तापमान के परिवर्तन के साथ-साथ तरल पदार्थ का निकलना भी होता है जो अण्डोत्सर्ग का संकेत देता है। इस जानकारी का प्रयोग गर्भधारण से बचने या ग्रहण करने के लिए किया जा सकता है।

अण्डोत्सर्ग एक स्त्री में उस समय समाप्त हो जाता है जब वह अपने शिशु को स्तनपान करा रही होती है, स्तनपान कराना बच्चों में स्वाभाविक रूप से अन्तर रखने की एक विधि है। तथापि, यदि एक स्त्री एक सारणी के अनुसार या फिर बोतलों से दूध पिलाने का निर्णय लेती है तो जन्म देने के पश्चात् उसमें शीघ्र ही अण्डोत्सर्ग हो जाता है।

अण्डे के एक बार संसेचित होने के पश्चात् जन्म देने को गर्भधारण तक की यात्रा से अलग होने का चरण आरोपण है। गर्भधारण करने के एक सप्ताह पश्चात्, संसेचित अण्डा डिम्बवाही की यात्रा को पूरा कर अण्डाशय में पहुँच जाता है। संसेचित अण्डा अब एक कोशिकाओं की गेंद का रूप धारण कर लेता है जिसे ब्लास्टोकायस्ट नाम से जाना जाता है। ब्लास्टोकायस्ट के गर्भाशय की परत पर सफलतापूर्वक आरोपित हो जाने के पश्चात ही 'ह्यूमन कोरियोनिक गोनाडोटरोपिन' (hCG) सक्रिय होगा। इस हार्मोन को गर्भधारण के परीक्षण द्वारा अलग किया जाता है। सामान्यत: इस चक्र में परत के मोटा हो जाने पर एम्ब्रयो का एक गर्म, पोषित स्थान होता है जिस पर आरोपण होना होता है। कुछ जन्म नियंत्रण विधियां जैसे 'इंट्रोटेराइन डिवाइस (IUD)' कई बार आरोपण के कार्य में बाधा डालती हैं, जबकि उनकी प्राथमिक कार्यकारी तकनीक संसेचित होने से रोकना है।

## परिवार नियोजन निर्णयों की जानकारी देना

नीतिपरक चिकित्सीय देख-रेख के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्तों में से 'इनफोर्मड कोन्सेन्ट' एक है। इन्फोर्मड कोन्सेन्ट का अर्थ है कि एक रोगी प्रस्तावित निर्णय या चिकित्सीय हस्तक्षेप को निर्णय या चिकित्सीय हस्तक्षेप की प्रकृति को समझने के पश्चात् ग्रहण करता है; इसके अलावा उपयुक्त उपलब्ध विकल्पों और चिकित्सीय हस्तक्षेप से संबन्धित जोखिम, लाभ और अनिश्चयताओं, या किसी भी अन्य उपलब्ध विकल्प को स्वीकार करता है। इन्फोर्मड कोन्सेन्ट अथवा जानकार मंजूरी के सिद्धान्त को रखते हुए, एक दम्पत्ति जन्म नियंत्रण के बारे में चुनाव करते हुए, सुनिश्चित होता है कि वे जिन जन्म नियंत्रण विधियों पर विचार कर रहे हैं वे उनके लाभ और हानि

को भी समझते हैं।

जन्म नियंत्रण के किसी एक रूप की सराहना या निन्दा करने की बजाए, मैं इस बात की सलाह देने का प्रस्ताव देती हूँ कि दम्पत्ति इस बारे में प्रश्न करें कि उन्हें परिवार नियोजन के बारे में कब निर्णय लेना है। तकनीकी विकास भविष्य में दम्पत्तियों के सामने कई विकल्प रख सकते हैं, परन्तु जन्म नियंत्रकों की विधियों पर चुनाव करने के प्रश्न शाश्वत हैं। यदि आप दम्पत्तियों को पूर्व-वैवाहिक तैयारी में सही प्रश्न पूछने की शिक्षा देते हैं तो दम्पत्ति अभी तथा भविष्य में नये विकल्पों के आने पर भी बुद्धिमत्तापूर्वक चुनाव करने के योग्य हो पाएंगे।

दम्पत्ति को डॉक्टर से जन्म नियंत्रण विधि पर अच्छा प्रश्न पूछने के साथ-साथ कार्य की यन्त्र-रचना की विधि के बारे में भी प्रश्न करना है। क्या अण्डोत्सर्ग को रोकने के द्वारा, संसेचित होने से सुरक्षा देने के द्वारा या संसेचित अण्डे के आरोपण से सुरक्षा करने के द्वारा या कार्य के संयुक्त यन्त्र रचना के द्वारा विधि कार्य करती है? क्या कार्य की यंत्र रचना भिन्न रूप से कुछ घटकों पर आधारित है, जैसे कब और कैसे विधि को लागू किया या अन्य स्वास्थ्य दशाओं की उपस्थिति पर? डॉक्टर से जन्म नियंत्रण विधि का प्रश्न करने के साथ साथ एक दूसरा अच्छा प्रश्न भी करने को है जिसमें भावी स्वास्थ्य आता है। यह विधि कितनी प्रभावी है? क्या विधि को गर्भधारण करने की इच्छा पर पलटा जा सकता है? क्या विधि भावी संसेचित प्रक्रिया को प्रभावित करेगी? क्या इस विधि से गर्भधारण करने का कोई जोखिम हो सकता है? जो इस जन्म नियंत्रण विधि को अपनाते हैं उनके स्वास्थ्य पर इसके क्या प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकते हैं?

यदि दम्पत्ति किसी जन्म नियंत्रण विधि का प्रयोग करने पर विचार कर रहे हैं तो उन्हें स्वयं से इस तरह के प्रश्न करने हैं: क्या हम इस विधि को सुविधापूर्वक प्रयोग में ला पाएंगे जिससे विधि हमारे लिए प्रभावी ठहरे? क्या हम इस विधि को सही तरह से उपयोग करने के विषय समझते हैं? क्या हम भविष्य में बच्चे (या अधिक बच्चे) चाहते हैं?

***दम्पत्तियों को बच्चों को परमेश्वर की ओर से एक आशीष मानने के लिए प्रोत्साहित करें कि वे उनके गंभीरतापूर्वक पालन पोषण करने के उत्तरदायित्व को लें।***

क्या हम दोनों इस चुनाव से खुश हैं? क्या इस चुनाव से हम दोनों में से किसी एक के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है? क्या इस चुनाव से मानव-जीवन की पवित्रता के संबन्ध में हमें द्वन्द्व का सामना करना पड़ेगा?

## प्रत्येक साथी (जीवन-साथी) की आवश्यकता का आदर करें

एक दम्पत्ति की सहायता करने में यह सीखाना आता है कि परिवार को ध्यान में रखते हुए किस तरह के परिवार नियोजन की सलाह दें जिसमें दम्पत्ति एक दूसरे को आदर देते हुए अपने विवाह में ऐसे निर्णय लें जो विस्तृत रूप से इस परामर्श में सही बैठते हों। 1 कुरिन्थियों 7:3-6 में प्रेरित पौलुस विश्वासियों के महत्व के बारे में बताता है। यह महत्वपूर्ण है कि पति पत्नी में से यदि कोई भी परिवार नियोजन की किसी भी विधि का प्रयोग करे तो उन दोनों को उस में शांति से रहना है।

इसी के साथ-साथ स्वास्थ्य संबन्धी सोच-विचार भी इस निर्णय का भाग होने चाहिए। कुछ मामलों में स्त्रियों की दशा ऐसी हो सकती है कि भविष्य में उनके गर्भधारण न करने का खतरा हो। अन्य कुछ मामलों में, कुछ जन्म नियंत्रण विधियों में एक स्त्री को खून के थक्के, हृदयाघात और मानसिक आघात का खतरा हो सकता है। प्रेरित पौलुस द्वारा दी गई सिद्धान्त की रूपरेखा को वैवाहिक सम्बन्ध में लागू किया जाना चाहिए: "विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपनी ही हित की नहीं, वरन दूसरों की हित भी चिन्ता करे" (फिलिप्पियों 2:3-4)। दोनों जीवन साथियों में से कोई भी एक दूसरे को जन्म नियंत्रण की किसी ऐसी विधि का प्रयोग करने का दबाव न दे जिसका उनके स्वास्थ्य पर दीर्घ आवधिक प्रभाव पड़े।

दम्पत्ति परिवार नियोजन की चुनौतियों में एक दूसरे का आदर करते हुए और जीवन के आरम्भ का आदर करते हुए सुनने पर कार्य करने के द्वारा, अपने संबन्ध को मज़बूत करने के लिए कदम ले रहे होंगे। किसी दिन उनका मज़बूत वैवाहिक संबन्ध एक ऐसा आधार बन सकता है जिस पर एक मसीही परिवार का निर्माण हो सकता है। नव-दम्पत्तियों की इस कठिन विषय पर सहायता करते हुए याजकों के पास एक मसीही परिवार की आधारशिला रखने का अवसर होता है। मज़बूत घर मज़बूत कलीसियाओं को बनाने के साथ-साथ हमारे चारों ओर के संसार पर एक प्रभावी गवाही डालते हैं। एक समय में एक दम्पत्ति द्वारा परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने पर कितना बड़ा आनन्द मिल सकता है। ■

**क्रिस्टीना एम.एच. पॉवेल,** *पी एच.डी., एक अभिषिक्त सेविका और चिकित्सीय अन्वेषक वैज्ञानिक, संपूर्ण देश की कलीसियाओं और सभाओं में प्रचार करती हैं। वह लाईफ इम्पेक्ट मिनिस्ट्रीज़ की संस्थापक होने के साथ-साथ हार्वर्ड मेडिकल स्कूल और मेसाशोसेट्स जनरल अस्पताल की एक अन्वेषक सदस्य हैं।*

# नये तरीकों से आत्मा के बपतिस्मे को संप्रेषित करना

द्वारा: गेरी गोर्गन

''और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य भाषा बोलने लगे'' (प्रेरित. 2:4, वारेल अनुवाद)।

इस पद पर अपने फुटनोट में वॉरेल का कहना है: ''यह अनुग्रहकारी अनुभव—जिसे पवित्र आत्मा के दान के रूप में माना गया है, प्रत्येक सच्चे विश्वासी के लिए 'विशेष अवसर' (पद 39), और उसका 'कर्त्तव्य' है (इफिसियों 5:18)।'' हम अपनी पूर्व-मसीही संस्कृति में इस विशेष सुअवसर और कर्त्तव्य की शिक्षा कैसे देते हैं?

परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक विश्वासी पवित्र आत्मा की सामर्थ में बपतिस्मा पाए। ऐसा संभव करने के लिए, वह याजकों को सिखाना चाहता है जैसा उसने प्रत्येक संस्कृति की प्रत्येक अवधि में विश्वासयोग्यता के साथ पहले भी किया है—इस अनुभव को नये तरीकों से कैसे संप्रषित करे कि वह उन्हें चालित करने की बजाए उन तक पहुंचे। आज की संस्कृति में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की सेवकाई करने हेतु यहाँ कुछ व्यावहारिक तरीके दिये गए हैं:

## पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का निर्धारण एक आशीष के रूप में करें, न कि शाप के

मिशन अगुवों को उन संस्कृतियों में संप्रेषण का कार्य करना है जहां परमेश्वर ने उन्हें रखा है। अन्तिम चीज़ जो वे करना चाहते हैं वह है लोगों को वहां से दूर ले जाना। इस कारण, कुछ अगुवे पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के प्रचार या उस पर शिक्षा देने के संबन्ध में एक भय अथवा आशंका को विकसित करते हैं। किसी को भी दोषी अनुभव करने की ज़रूरत नहीं हैं; यह एक वैद्य विषय है, विशेषकर उनके लिए जो विविध पृष्ठभूमियों से होकर लोगों तक पहुंच रहे हैं।

याजकों को यह निर्धारित करना है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा आज उनकी कलीसिया के लिए एक बाइबल संबन्धी और व्यवहार्य अनुभव है। कुछ रचनात्मकता और नेकनीयती के साथ, याजक अपने लोगों का नेतृत्व इस जीवन परिवर्तित करनेवाले अनुभव में उन्हें डर के निकट ले जाए बिना कर सकते हैं।

बहुत से युवा सेवक पेन्टिकोस्टल घेरे से इसलिए दूर हो रहे हैं क्योंकि उन पर अन्य भाषा बोलने का दबाव दिया जाता है जो कि सही नहीं है। कई मामलों में, वे पूर्वकालिक प्रणाली-विज्ञान से संघर्षरत् हैं, मिथोलोजी से नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति जिसे मैं जानता हूँ वह अपने नीजि प्रार्थना समय में अन्य भाषा के बपतिस्में की घोषणा करने से दूर चला गया है। अब दूसरों का इस आनन्दपूर्ण अनुभव में नेतृत्व करने की बजाए वे दूसरों से इस महान उपहार को लूट रहे हैं। यह कष्टदायक और अनावश्यक है।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक वैद्य, बाइबल संबन्धी अनुभव है जिसे यीशु ने स्वयं स्थापित किया (लूका 24:49)। इसके बारे में पास्टर (याजक) निष्ठा से कहते हैं कि ''ठीक है, यह बाइबल से है।'' यहीं से हमें आरम्भ करना है। पिन्तेकुस्त कोई सांस्कृतिक अनुभव नहीं है जो बाद में चला जाए; यह यीशु का अनुभव, बाइबल का अनुभव और आज का अनुभव है।

## जिस तरह से आप दूसरे विषयों पर शिक्षा देते हैं उसी तरह से पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की शिक्षा देने के संबन्ध में भी रचनात्मक बनें

मुझे इस पीढ़ी की रचनात्मक और नवीनता पसंद है। अत: इस महान सत्य की शिक्षा देने के संबन्ध में भी रचनात्मक बनें। अपनी परमेश्वर प्रदत्त रचनात्मकता का प्रयोग करें और इसे आनंदमय व शक्तिशाली बनाएं।

वशिंगटन डी.सी. में नेशनल कम्युनिटी चर्च के पास्टर मार्क बैटरसन का कहना है परमेश्वर के समान होने का एक भाग रचनात्मक होना है। मैं इससे सहमत हूं। परमेश्वर की समानता में होकर पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की सच्चाई को घोषित करें।

मैंने इंडियाना, इंडियानापोलिस में लैकव्यू क्रिश्चियन सेन्टर के पास्टर रॉन बॉनट्रेगर द्वारा लिखित पिन्तेकुस्त रविवार संदेश की शृंखलाओं का प्रयोग

किया है, जिस का शीर्षक है ''पॉवर-ऐड।'' मेरे युवा रचनात्मक सेवकाई दल ने हमारे मंच पर पॉवर-ऐड की 100 से भी अधिक बोतलों को रखा है। प्रत्येक सप्ताह हम उन्हें पीने के लिये देते हैं। यह एक सरल परन्तु पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से व्यवहार करने का एक आनंदमयी तरीका है। तीसरे संदेश के बाद, हमने सामने की ओर आकर आराधना की। अधिकांश ने पहली बार अपनी स्वयं की प्रार्थना भाषा का अनुभव किया। यह आनन्दमय, समकालीन और सरल था। कई सप्ताह पश्चात् लोगों ने ई-मेल कर गवाही दी कि घर पर अपनी बाइबल को पढ़ते हुए उन्होंने अपनी भाषा को प्राप्त किया। एक ने काम पर जाते हुए गाड़ी को चलाते समय बपतिस्मा पाया।

## उद्देश्य रखें

पिन्तेकुस्त के रविवार के लिए एक छोटी श्रृंखला की सारणी बनाएं। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की उपेक्षा करने की बजाए, इस श्रृंखला की सारणी बनाने पर आप पर इसे अपनी कलीसिया या समुदाय की संस्कृति पर कार्यान्वित करने का दबाव पड़ेगा। अपने अल्फा पाठ्यक्रम के अन्त पर एक पवित्र आत्मा रिट्रीट की सारणी बनाएं, या पवित्र आत्मा के बपतिस्मे पर एक कक्षा या सेमिनार का आरम्भ करें। कुछ न करने की परीक्षा का सामना करें। सेंट पॉल, मिन्नेसोटा की एक लूथरन कलीसिया कक्षाओं, सेमिनारों, रिट्रीट और अन्य रचनात्मक तरीकों द्वारा पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के विषय सिखाती है—अधिकांश पेंटिकोस्टल और कैरिस्मेटिक कलीसियाओं से कहीं अधिक।

मिशन अगुवाई का एक भाग उन चीज़ों को करना है जिन्हें हम जानते हैं कि सही हैं परन्तु उसके बाद भी उन्हें न करना। मुझे धन पर प्रचार करना है। मुझे धन पर प्रचार करना अच्छा नहीं लगता; परन्तु जब मैं ऐसा करता हूं तो मेरी आज्ञाकारिता के कारण हमारे लोगों और कलीसिया को आशीष मिलती है। यदि हम अनुग्रह में होकर प्रचार करते हैं तो चरावाही करना सरल है, परन्तु चरावाही करना सदा सरल नहीं होता।

सूक्ष्म परीक्षा का सामना करने की प्रतीक्षा तब तक करें जब तक कि आप अपने पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को प्रगट न कर दें। अगुवों के रूप में यह हमारा कार्य है कि अपने लोगों को उस तरह से सिखाते हुए उनका नेतृत्व करें। हमें विकास के लिए सुअवसर उपलब्ध कराने हैं और हम इसे उद्देश्य के साथ करते हैं। योजनाएं बनाकर उन योजनाओं पर उसी तरह से कार्य करें जैसा हम दूसरी चीज़ों के साथ करते हैं।

## कर्मकाण्डवाद और उदारवाद की खाई से बचें

हमे अपने लोगों को सर्वश्रेष्ठ देना चाहते हैं और यह नहीं चाहते कि हमारी उपेक्षा उनके परमेश्वर के साथ चलने में बाधा बने। लोगों को पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की शिक्षा न देकर हम आलोचनात्मक व निर्णायक होने के साथ साथ 'कर्मकाण्डवाद से खाई' की ओर जाने में उनका नेतृत्व करते हैं। कर्मकाण्डवाद से मेरा अभिप्राय 'संतुलन से बाहर जाने' से है।

सड़क पर भागकर एक खाई में गिरने की अपेक्षा सड़क पर आराम से चलना श्रेष्ठ है। लोग घायल हो सकते हैं, हमारी गाड़ियों को हानि पहुंच सकती है, और अन्त में, हम अपने लिये या किसी दूसरे के लिए यात्रा में देरी कर देंगे। हमें स्वयं को यह स्मरण कराने की आवश्यकता है कि हमारी बुलाहट विश्वासयोग्यता के साथ 'वचन का प्रचार' करने की है (2 तीमु. 4:2)। हम इसे सांस्कृतिक तरीकों से करना चाहते हैं। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का यह अद्भुत अनुभव जीवनों को महान रूप में संपन्न बनायेगा। हमें 'विविधता की खाई' से बचने की आवश्यकता है।

हमें 'कर्मकाण्डवाद की खाई' से भी बचने की आवश्यकता है। जो कुछ कहा व किया गया है कर्मकाण्डी इससे कभी खुश नहीं होते हैं। कर्मकाण्डी पिन्तेकुस्त को प्रचार करने, गाने तथा अन्य प्रणाली विज्ञान की कुछ प्रणालियों के साथ जोड़ते हैं। उनकी प्रवृत्ति उन चीज़ों को अस्वीकृत करने की होती है जिन्हें वे नहीं समझते।

एक पेंटिकोस्टल कर्मकाण्डी उस समय हमारी कलीसिया में आई जबकि मैं पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का प्रचार कर रहा था। मैंने ऐसा एक वार्तालाप तरीके से किया और उसके बाद लगभग 10 मिनट तक वेदी के चारों ओर प्रार्थना और आराधना में समय व्यतीत किया। उस समय लगभग 20 लोगों ने पहली बार प्रार्थना भाषा में बोलना आरम्भ किया, जिसमें एरिका हेरोल्ड, मिस अमेरिका 2003 भी थी। सर्विस के पश्चात् यह पेंटिकोस्टल कर्मकाण्डी मेरे पास आकर बोली, ''ऐसा हो ही नहीं सकता कि इन लोगों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया हो।'' मैंने उससे पूछा कि उसे ऐसा क्यों लगा, उसने जवाब दिया, ''क्योंकि इसमें न तो ऊंची आवाज़ ही थी और न ही इसमें कोई वास्तविक भावना थी।'' वह कर्मकाण्ड की खाई में चली गई थी।

इन दोनों खाइयों से दूर रहने के लिए हमें यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि हममें से कोई किसी को भी नहीं बचा सकता है, अत: हम ऐसा क्यों सोचें कि हम किसी को भी पवित्र आत्मा से भर सकते हैं? इन दोनों ही मामलों में हमें केवल परमेश्वर के वचन की शिक्षा देते हुए एक वातावरण की रचना करनी है, और उसके बाद परमेश्वर अपने भाग को पूरा करेगा। उद्धार का प्रचार करें, और लोग बचाए जाएंगे। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का प्रचार करें, और विश्वासी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाएंगे। हम जो प्रचार करते हैं उसे हमें प्राप्त करना है।

खाइयों से बाहर रहने के लिए याजकों को स्वयं को इस तरह के विचार से स्वतंत्र रखने की आवश्यकता है जिसकी आवश्यकता उन्हें हमेशा वेदी सर्विस पर होती है। प्रार्थना दलों के रूप में लोगों को प्रशिक्षित करें और उन्हें उन लोगों के साथ प्रार्थना करने दें जो सार्वजनिक रूप में यीशु के प्रति समर्पण करना चाहते हैं और उनके साथ भी जो पवित्र आत्मा से पूर्ण होना चाहते हैं। लोगों को बचते हुए देखने के लिए बिली ग्राहम समान निवेदन करने की आवश्यकता नहीं है और लोगों को पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से भरते हुए देखने के लिए एक शिविर सभा-प्रणाली निवेदन की भी आवश्यकता नहीं है। आज के श्रोता पुरानी प्रणाली-विज्ञान की प्रक्रिया के अनुसार कार्य नहीं करेंगे। यह उनके स्थिर होने या चले जाने का कारण हो सकता है।

उद्धार के संदेश के प्रति लोग हमेशा तात्कालिक प्रतिक्रिया नहीं देते हैं। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के साथ भी ऐसा ही है। लोग सदैव तात्कालिक प्रतिक्रिया नहीं देंगे परन्तु अन्तत: उनमें से कुछ अवश्य प्रतिक्रिया देंगे।

## प्रार्थना करें कि आपके लोग पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाएं

लोगों के लिए बपतिस्मे हेतु प्रार्थना करने के लिए किसी विशिष्ट प्रतिभा या योग्यता की आवश्यकता नहीं होती। हमें केवल परमेश्वर के वचन को रचनात्मक तरीके से सिखाना है, संस्कृति के साथ जुड़ना सीखना है न कि प्रतिकूल लोगों से, और तब प्रभु से उसके लोगों को बचाने व बपतिस्मा देने के लिए प्रार्थना करनी है। मैं युवा याजकों/अगुवों को इस तरह से प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ: ''यीशु, इन लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिये जाने के लिए मुझे तेरी आवश्यकता है। तू ने कहा है कि तू ऐसा करेगा, और मैं तुझसे ऐसा करने के लिए कह रहा हूँ।'' लोगों के भयानक, प्रदर्शक व भूत समान बनने की चिन्ता को उस पर डाल दें। उससे कहें कि वह उन चीज़ों की चिन्ता करे।

मैं एक विशाल विश्वविद्यालय वाले शहर में पास्टर था जहाँ हर तरह के लोग हमारी सर्विस में आते थे। हमने चीज़ों को क्रम व सर्वोच्चता के साथ करने का प्रयास किया। मैं लोगों को उद्धार और पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा परमेश्वर के साथ जोड़ना चाहता था, परन्तु मैं यह नहीं चाहता था कि पेन्टिकोस्टल सांस्कृतिक चीज़ें उन्हें वहां से निकाल दें। मैंने प्रभु से कहा कि मैं शर्माता नहीं हूं, परन्तु इस सभी कार्य को हमारे वातावरण के अनुसार करने में यह हमारी सहायता करे।

पहले, कुछ पेन्टिकोस्टल कलीसियाओं ने विकसित होने या रविवार या बुधवार की रातों में इसे नियमित करने के कारण बपतिस्मे को छोड़ दिया था। विशाल सांस्कृतिक परिवर्तनों और रविवार रात्रि सर्विस के विघटन में हमने देखा है, कि रविवार प्रात:, अपनी युवा या युवा व्यस्क सभाओं में और अन्य प्राथमिक सभाओं में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को कैसे सिखाएं, हमारे लिए यह सीखना अत्यावश्यक है।

## पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को लेने के छह चरण

**1. प्यास** – मत्ती 5:6; मरकुस 11:24
**2. मांगना** – मत्ती 7:7
**3. यीशु की ओर देखना** – प्रेरित 1:8
**4. प्राप्त करना** – गलतियों 3:14
**5. स्तुति करना** – भजन संहिता 22:3
**6. अनजान भाषा में बोलना ( अन्य भाषा )** – भजन संहिता 81:10

**–गेरी गोर्गन,** अरबाना, इलिनायस

## अपने भय को स्वीकार कर कुछ संशोधन करें

पौलुस ने युवा तीमुथियुस से कहा, ''क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है'' (2 तीमु. 1:7)। जिस तरह से एक कंप्यूटर को एक समय में एक बार संशोधित किये जाने की आवश्यकता होती है, हमारे साथ भी ऐसा ही होने की ज़रूरत है। हमें उस जंग समान भय से छुटकारा पाना है जो हमारी गति को मंद करता और हमें उसे करने से दूर रखता है जिसके बारे में हम जानते हैं कि हमें उसे करना है। अपने भयों और आशंकाओं से हम हार नहीं मान सकते हैं। भय और तर्जन पर इच्छा विजयी होती है। यदि हम केवल इच्छा रखते हुए प्रभु से अपनी सहायता करने को कहें, वह करेगा। यदि हम विश्वासयोग्य रहेंगे, वह भी विश्वासयोग्य रहेगा और पवित्र आत्मा में विश्वासियों को बपतिस्मा देगा।

आपको हिम्मत हारने की ज़रूरत नहीं है और न ही पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की सच्चाई को सिखाने के लिए एक अनोखा सुसमाचार शो करने की। परन्तु आपको ''संदेश का प्रचार करने, इसकी घोषणा करने पर बल देने (चाहे समय सही हो या नहीं), बाध्य करने, उलाहना देने और प्रोत्साहित करने, इस सब को धीरज के साथ करने को तैयार रहने की आवश्यकता है'' (2 तीमुथियुस 2:4), जिसकी प्रतिज्ञा आपने पूर्ण-सुसमाचार सेवकाई के लिए अभिषिक्त किये जाने के समय की थी।

ईमानदार पुरुष स्त्री होने के कारण, याजकों को वह करना है जिसकी प्रतिज्ञा उन्होंने प्रभु से की कि वे करेंगे। याजकों को जेट ली-निर्भीक फिल्मों के योद्धा के समान बनने की आवश्यकता है। उसका पारिवारिक नाम लज्जाजनक था। उसने वहां के श्रेष्ठ योद्धाओं को हराकर परिवार के लिए आदर को फिर से प्राप्त किया। हमें यह सीखने के लिए कि इसे पूर्व-मसीही संस्कृति में कैसे करें कुछ युवा निर्भय सेवकों की आवश्यकता है।

याजकों को प्रति सप्ताह पवित्र आत्मा पर प्रचार करने की ज़रूरत नहीं है, परन्तु उन्हें इस महत्वपूर्ण पेंटिकोस्टल सिद्धान्त का प्रचार करने के लिए तैयार रहने की ज़रूरत है। संभवत: पेंटिकोस्टल रविवार में एक छोटी शृंखला ही पर्याप्त हो। यदि क्रिसमस और ईस्टर के अवसरों पर देहधारण या पुनरुत्थान पर प्रचार करना कोई पाप नहीं है तो कुछ अति-पेंटिकोस्टल लोग ऐसा क्यों सोचते हैं कि वर्ष में एक बार ही पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का प्रचार करने पर हम इसे खो देंगे ? कर्मकाण्डवादियों को आपके लिए पवित्र आत्मा के बपतिस्मे पर दिये प्रचार को नष्ट करने न दें। आपको पूरे वर्ष अपनी शिक्षाओं में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के दावों को इस कारण से कहने की आवश्यकता है कि ''क्या यह सत्य है, जैसा आपने मसीह के दावों को देखने के लिए किया था। यह एक बाइबल कलीसिया है। मैं आपसे प्रतिज्ञा करता हूं कि यदि इसके बारे में वचन में न पाया जाए तब तक मैं इस बारे में शिक्षा नहीं दूंगा। देखें कि क्या परमेश्वर के पास आपके लिए कोई प्रार्थना भाषा है ?''

चीज़ों के बारे में हमारे करने का तरीका या तो लोगों को स्थिर कर देगा या फिर स्वतन्त्र। मिशन अगुवे होने के कारण, हम लोगों तक पहुंचने और उनसे जुड़ने का प्रयास कर रहे हैं, उन्हें भगाने के लिए नहीं।

प्रार्थना सभाओं के अन्त पर जब लोग वेदी के चारों ओर होते हैं मैं उस समय में भी पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के बारे में बोलता हूँ। एक पॉवर पाइंट रूपरेखा को दिखाकर मैं पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की मूल बातों पर जाता हूं। (देखें-पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को प्राप्त करने के छह चरण) लगभग प्रत्येक समय पर लोगों ने बपतिस्मे को पाकर एक ऐसी भाषा में प्रार्थना करना आरम्भ किया है जिसे उन्होंने पहले कभी नहीं सीखा था।

एक प्रार्थना सभा का वातावरण हमारी उस रविवार प्रात: सर्विस से भिन्न होता है जिसमें मसीही दिखावा किया जाता है। पेंटिकोस्टल होना मेरे लिए शर्म की बात नहीं है। यह केवल बुद्धिमान होने और मसीह के लिए जितना अधिक संभव हो सके लोगों तक पहुंचने का प्रयास है। आखिरकार, यह वह प्राथमिक कारण है जिसके बारे में यीशु ने हमें पिता से इस प्रतिज्ञा को प्राप्त करने के लिए कहा, कि हम उसके गवाह बनें (प्रेरित 1:4, 8)।

कई लोग 'द अपोस्टल्स' जैसी फिल्मों या टी.वी. प्रचारकों के द्वारा पेंटिकोस्ट के बारे में विचार बनाते हैं, जिनमें से अधिकांश का संस्कृति में उपहास किया जाता है। इन बाधाओं के कारण, अधिकांश लोग अन्य लोगों के पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को पाने के लिए प्रार्थना करने और शिक्षा देने से डरते हैं। अपने भय का संशोधन करें और बपतिस्मे की शिक्षा इस तरह से दें कि यह आपके व्यक्तित्व या आपकी कलीसिया की संस्कृति को दूषित न करे। शिविरों, रिट्रीट और सम्मेलनों में जो प्रणालियां कार्य करती हैं वे सामान्यता रविवार प्रात: नहीं करतीं। यह ठीक है।

## समापन

हमारे युवा पीढ़ी के सेवकों से मैं क्षमा मांगता हूं जो कई बार छोड़े जाने का अनुभव करते हैं। अच्छे आत्मिक पिताओं के न होने के कारण मेरी पीढ़ी से मुझे क्षमा मांगनी है। हमें प्रणाली-विज्ञान और पवित्र कार्यक्रमों को बनाने के लिए क्षमा करे। जो गलतियां हमने कीं, कृपया उसकी उपेक्षा करते हुए पवित्र आत्मा में बपतिस्मे को ग्रहण करें। अपने युवकों से मुझे कहना है: ''भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने से मना न करो'' (1 कुरिन्थियों 14:39)।

मुझे ऐसी भाषा में प्रार्थना करना पसंद है जिसे मैंने पहले कभी न सीखा हो। कई बार मैं नहीं जान पाता कि क्या करना है, परन्तु जब मैं आत्मा में होकर प्रार्थना करता हूँ तो परमेश्वर मुझे बुद्धि और भविष्यद्वाणी का वचन देने के साथ साथ चंगाई देने की अन्तर्दृष्टि और एक व्यक्ति या परिस्थिति की सहायता हेतु मदद करता है। बहुत से जिन्हें मैं जानता और प्रेम करता हूं जो बहिष्कृत कलीसियाओं तक पहुंचने का प्रयास कर रहे हैं उन्हें सहायता के लिए पवित्र आत्मा की पूर्णता की ज़रूरत है। चाहे वह मिन्नापोलिस के रिहाइशी क्षेत्र के जोएल ग्रोस हो, या बाऊल्डर में कोलोराडो विश्वविद्यालय के ब्राड रिले हो, या फिर अरबाना में इलिनायस विश्वविद्यालय के टेरी ऑस्ट्रिया हो- वे जानते हैं कि पवित्र आत्मा की सहायता के बिना वे लोगों तक उनकी अद्वितीय संस्कृतियों में नहीं पहुंच सकते।

हममें से कोई भी अपने प्रचार में से पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को नहीं हटा सकता है। हमें चीज़ों को सही ढंग से करना सीखना है और पेंटिकोस्टल पौराणिकताओं का असली रूप दिखाना है। पवित्र आत्मा में बपतिस्मा एक ऐसी अद्भुत आशीष है जिसे पाने वाला प्राप्त करता है। एक युवा सेवक होने के कारण रचनात्मक बनें, उद्देश्य रखें, खाइयों से दूर रहें, प्रभु से अपने लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने हेतु प्रार्थना करें, और अपने भयों का संशोधन करने के लिए कुछ करें। हम सभी संघर्षरत् हैं। एक पूर्व मसीही संस्कृति में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की सेवकाई करना अधिकांश युवा अगुवों के लिए एक संघर्ष है। परन्तु अब आपको प्रेम किया गया है, और चीज़ों की रूपरेखा देने के लिए छूट भी दी गई है। आइये अब हम एक दूसरे से अलग होकर चलें। एक साथ यात्रा करते हुए आइये हम एक दूसरे को ग्रहण करें। मैं छड़ी आपको दे रहा हूं। ■

**गेरी गोर्गन,** *अरबाना, इलिनायस के स्टोन क्रीक चर्च के प्रमुख अगुवा हैं। उनसे संपर्क करें: http://papagrogan.blogspot.com/.*

# चमत्कारों का अवसान?

## बाइबल संबन्धी, अतिरिक्त बाइबल संबन्धी, थियोलोजिकल और तार्किक परिप्रेक्ष्यों से प्रेरितों का युग

*पेंटिकोस्टल लोगों से प्रायः यह पूछा जाता है कि उनके विश्वास और व्यवहार करने का तरीका अलग क्यों है। दुर्भाग्यवश, अधिकांश उन्हें 'उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार' नहीं रहते हैं (1 पतरस 3:15)। इसका कारण यह हो सकता है कि या तो पेंटिकोस्टल लोगों ने प्रमाण में जड़ को नहीं पकड़ा है या उन्होंने अपने विश्वास के पीछे के विषय और रीतियों के बारे में नहीं सोचा है। इसकी अपेक्षा, वे सामान्यता सुरक्षात्मक, घबराहट या अपने व्यक्तिगत अनुभव के प्रति आग्रह के साथ प्रतिक्रिया देते हैं। उनके सुननेवाले आसानी से उनके आग्रह को ठुकराते हुए कहते हैं, "तुम्हारे लिए ठीक है परन्तु इसका हमसे कोई संबन्ध नहीं।" इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि पास्टर अपने सदस्यों को दूसरों को यह बताने के लिए अच्छी तरह से तैयार करें कि पेंटिकोस्टल लोग आज भी परमेश्वर द्वारा आश्चर्यक्रम किये जाने के लिए क्यों विश्वास करते हैं।*

**— द्वारा डब्ल्यू. ई. नुन्नेली**

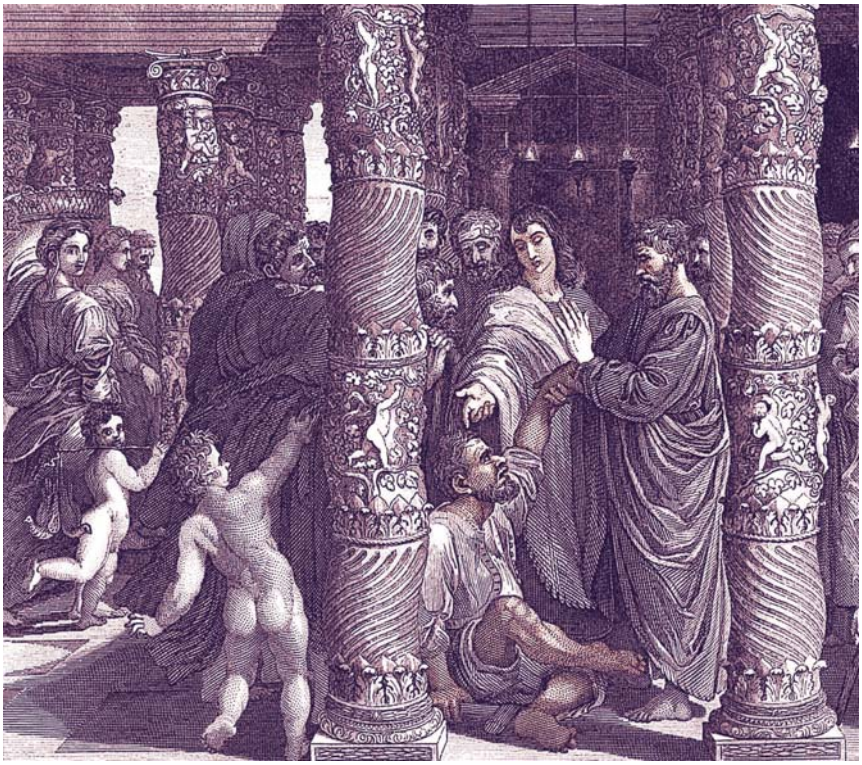

पेंटिकोस्टल लोगों से यह प्रश्न बार-बार पूछा जाता है कि वे चमत्कारों, आत्मा के दानों, व्यक्तिगत प्रगटीकरणों और आज भी दैविक मध्यस्थताओं के होने पर क्यों विश्वास करते हैं। पेंटिकोस्टल/कैरिस्मेटिक परंपरा से बाहर के अधिकांश मसीहियों का मानना है कि अन्तिम प्रेरित की मृत्यु हो जाने पर आत्मा के ये प्रगटीकरण रुक गए थे, जिसे सामान्य भाषा में प्रेरितों के युग की समाप्ति कहा जाता है। यह शब्द इस मान्यता को प्रगट करता है कि परमेश्वर की प्रकटित और चमत्कारिक सामर्थ 400 वर्षों से अनुपस्थित रही है जिसे पुरुषों के बीच लगभग 30 ई० और 90 ई० के बीच पुन: स्थापित किया गया। इस परिकल्पना के अनुसार, प्रेरिताई युग के निष्कर्ष पर, इन शक्तियों को स्वर्ग में एक बार फिर स्मरण किया गया, जहां से वे मसीह के लौटने की प्रतिक्षा में हैं।

### प्रेरितों के एक युग के ऐतिहासिक और तर्कसंगत तर्कों का खण्डन करना

'प्रेरितों का युग' वाक्यांश का प्रयोग विमोचकों और वाचा के धर्मवैज्ञानिकों के बीच किया गया है

जो इसे इस विषय के साथ भी जोड़ता है: बाइबल धर्मविधान का समापन। दोनों ही शिविर नये नियम धर्मविधान के समापन और विषय-वस्तु को सुरक्षित व प्रमाणित करने के लिए प्रेरितों के युग के सिद्धान्त का प्रयोग करने का प्रयास करते हैं। उनका तर्काधार यह है कि कलीसिया में इस प्रेरिताई युग का अन्त प्रकाशन में एक स्वाभाविक और तार्किक विभाजन को लाया है। इन ईश्वरीय प्रेरित लेखों को हम नया नियम कहते हैं। तथापि, पुरुषों के धर्मविधान प्रक्रिया के निष्कर्ष को श्रेय देने की कोई ज़रूरत नहीं है चाहे वह वोट देने के द्वारा हो (नया नियम धर्मविधान सैकड़ों वर्ष की एक वास्तविकता बना था, किसी भी कलीसियाई सभा के द्वारा कार्यकारी रूप से इसे समर्पित करने से पहले), या सभी प्रेरितों की मृत्यु द्वारा।

'प्रेरितों का युग' वाक्यांश और इसके द्वारा प्रस्तुत की जानेवाली अवधारणा को नये नियम में नहीं देखा जा सकता। इसका अर्थ है- प्रेरितों के युग का सिद्धान्त और इसके परिणाम, प्रकाशन का अन्त और धर्मविधान का समापन—पूर्व नया नियम विचार (या प्रकाशन)। ऐसा होने पर हममें तार्किक प्रतिकूलता होगी। कोई भी नये नियम के लेखों के निष्कर्ष पर तार्किक रूप से अवसान होने का दावा नहीं कर सकता जबकि दूसरी ओर इस प्रक्रिया के निष्कर्ष से परे अतिरिक्त प्रकाशन को प्राप्त करने का दावा किया जा रहा है।

अवसान स्थिति केवल अतिरिक्त-बाइबल संबन्धी और पूर्व-बाइबल संबन्धी अनुमान पर आकर रुकती है। तथापि, यह अनुमान बाइबल के बराबर अधिकार को प्राप्त करता हुआ प्रतीत होता है, उनके द्वारा जिन्होंने इस स्तर का समर्थन किया। इसकी प्रमाणिकता इस सच्चाई से मिलती है कि समुदायों ने प्रेरितों के युग में एक ऐसे विश्वास को बनाए रखा जिसने उनके विश्वास और आचरण के विषयों को विशिष्ट रूप से ईश्वरीय प्रकाशन से अवगत कराया था। इस अतिरिक्त-बाइबल संबन्धी स्तर के बारे में कहा जा सकता है कि इसे उस मानदण्ड को प्राप्त करना था जिसे पहले केवल बाइबल के लिए ही आरक्षित रखा गया था। व्यंग्यात्मक रूप में यदि कहा जाए तो पवित्रशास्त्र के अद्वितीय मानदण्ड को सुरक्षित रखने के प्रयास में, जिन लोगों और समुदायों ने समापन परिकल्पना को अपनाया उन्होंने बाइबल के मानदण्ड के अनुसार अपने स्वयं के अतिरिक्त-बाइबल संबन्धी प्रकाशन को ऊंचा उठाया, एक ऐसा कार्यभार जो सामान्यता पेंटिकोस्टल/कैरिस्मेटिक स्तर का था।

प्रेरितों के युग के सिद्धान्त के प्रस्तावों ने पुराना नियम धर्मविधान के समापन का उल्लेख करने के द्वारा अपनी मान्यता की पुष्टि करने का प्रयास किया है। उनका मानना है कि पुराने नियम के अन्तिम भविष्यद्वक्ता के पश्चात् प्रकाशन और चमत्कार रुक गए—जो उनके लिए नये नियम के प्रेरितों के संबन्ध, प्रकाशन और कलीसिया युग में चमत्कारों के सदृश्य हैं।

पहली ही दृष्टि में, यह तर्क विकट प्रतीत होता है। तथापि, सूक्ष्म परीक्षण करने पर यह निकृष्ट तरीके से सूत्रबद्ध किया प्रतीत होता है। सर्वप्रथम, नये नियम के समान, पुराने नियम धर्मविधान को विश्वास से समुदाय में प्रयोग करने के द्वारा निर्धारित किया गया था, न ही किसी कार्यकारी देह के वोट पर या किसी विशिष्ट व्यक्ति या व्यक्तियों के जीवन विस्तार पर। दूसरा, भविष्यवाणी और चमत्कारों को निम्नलिखित साहित्य द्वारा प्रमाणित किया गया है—जैसे योसेफस, मृत सागर चर्मपत्र, आरम्भिक रब्बी साहित्य और अपोक्रायफा और सुडोपिग्राफा। तीसरा, नया नियम रिकार्ड घटनाओं की ऐतिहासिक रिपोर्ट जो अन्तरनियम युग में हुई।

मत्ती और लूका दोनों ही प्रकाशनों, प्रचारीय मध्यस्थताओं, भविष्यद्वाणी और चमत्कारों की रिपोर्ट देते हैं जिसमें यीशु के गर्भ में आने, जन्म और सेवकाई के बारे में पहले से ही बता दिया गया था। जकर्याह ने प्रकाशन को प्राप्त कर भविष्यद्वाणी कही (लूका 1:11-20, 67-79)। यूसुफ ने आलौकिक प्रकाशन और स्वप्नों के द्वारा निर्देशन को प्राप्त किया (मत्ती 1:20-24; 2:13, 19-22)। मरियम ने प्रकाशन को प्राप्त कर प्रेरित होकर यह गीत गाया (लूका 1:26-38, 46-55)। शिमौन को यीशु के जन्म और यीशु के बपतिस्मे के आस-पास की घटनाओं का प्रकाशन पहले ही मिल गया था (लूका 2:25, 26)। चरवाहों के समान (लूका 2:8-16), शिमौन को ईश्वरीय निर्देशन मिला था (पद 27)। मरियम और इलीशिबा दोनों को ही चमत्कारी गर्भधारण का अनुभव प्राप्त हुआ (मत्ती 1:18, 20; लूका 1:13, 24, 36, 37, 57)। ज्योतिषियों को एक आलौकिक चिन्ह (मत्ती 2:1, 2, 9, 10) और स्वप्न (पद 12) के द्वारा ईश्वरीय निर्देशन मिला था। ये और अन्य कई संबद्ध आलौकिक घटनाएं दिखाती हैं कि नये नियम में यीशु के जन्म और सेवकाई से पूर्व कई ईश्वरीय प्रकाशन व चमत्कार हुए थे।

इन अवलोकनों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए कि यीशु के आने से पहले इस्राएल के इतिहास में भविष्यद्वाणी या चमत्कार से संबन्धित कुछ भी समाप्त नहीं हुआ था। संबन्धित विवरण पर पुन: विचार करना न केवल अवसान के लिए तर्क के आधार को हटाता है जो पुराना नियम की समानताओं पर आधारित थी, परन्तु यह प्रतिकूल होने के तर्क भी देता है।

## परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता, इतिहास की पवित्रता, और प्रेरणा व धर्मविधान के बीच अन्तर

हमारा परमेश्वर—बाइबल का परमेश्वर, इस्राएल का ऐतिहासिक परमेश्वर—एक अनुकूलता का परमेश्वर है। वह मनमौजी या चंचल नहीं है, जैसा अन्यजाति देवी-देवताओं को प्राचीन पौराणिक कथाओं में चित्रित किया जाता है। बाइबल का परमेश्वर वाचा की विश्वासयोग्यता का परमेश्वर है। वह नहीं बदलता (भजन संहिता 55:19; 102:27; यशा. 46:4; मलाकी 3:6; इब्रानियों 1:12), और उसका वचन नहीं बदलता (यशा. 40:8)। वह कल, आज और सर्वदा तक एक सा है (इब्रानियों 13:8)। उसमें "न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है" (याकूब 1:17)। वह अनुकूलता के साथ मनुष्य से व्यवहार करता, और मनुष्य के साथ उसका व्यवहार निरन्तरता को दिखाता है। वर्तमान विषय असाधारण नहीं है। चूंकि परमेश्वर का चमत्कारिक व्यवहार अपने लोगों के साथ अधिनियमों के समय में भी लगातार बना रहा तो इसके लिए किसी भी तर्क की आवश्यकता नहीं है कि हम यह विश्वास करें—नये नियम के अन्त पर यह भिन्न तरह से कार्य करेगा।

अन्तर-अधिनियम विकास का विचार-विमर्श अन्तर-अधिनियम युग में उठे कुछ विषयों को संबोधित भी करने वाला होना चाहिए। सर्वप्रथम, सारा इतिहास पवित्र है। परमेश्वर अपनी सृष्टि किये हुए जीवनों से अन्तर अधिनियम युग में उसी तरह से जुड़ा रहा जिस तरह से वह अन्य समयों में रहा था। उदाहरण के लिए,

दानिय्येल की पुस्तक में पाई गई अधिकांश भविष्यद्वाणियों की पूर्ति अन्तर-अधिनियम युग में हुई। इसके अतिरिक्त, नये नियम युग के उद्घाटित होने से पहले नया नियम परमेश्वर की गतिविधि के उदाहरण देता है। अत:, परमेश्वर का हाथ यहूदी राष्ट्र, यहूदा के गोत्र, यिशै के वंश और दाऊद के परिवार की एक विशेष शाखा पर था।

इस बात का भी प्रमाण है कि परमेश्वर ने अन्तर-अधिनियम युग में भी इसी शाखा के विकास का मार्गदर्शन किया, और उसने ऐसा होने दिया कि मसीहा इस विशेष पारिवारिक वृक्ष से जन्मे। यही परमेश्वर अन्तर-अधिनियम युग में भी इस प्रक्रिया को नियंत्रित करने के कार्य पर था, जिसका प्रमाण इस समय में यीशु की वंशावली में दिये नामों से मिलता है (मत्ती 1:13-16; लूका 3:23-27)। प्रमाणिक रूप में, यह पूरा इतिहास इसलिये महत्वपूर्ण था क्योंकि पवित्र आत्मा पूर्ण कहानी को सुनाने का कार्य कर रहा था।

पवित्र आत्मा ने मत्ती और लूका द्वारा बताई गई यीशु की वंशावलियों में 'दुनियावी' और 'पवित्र' (या बाइबल संबन्धी) के बीच कोई अन्तर नहीं रखा। इसके अलावा, आरम्भिक कलीसिया द्वारा इन पदों की प्रतिज्ञा और उनके प्रति उनका व्यवहार बताता है कि उन्होंने यह विश्वास किया कि छुटकारे के इतिहास में परमेश्वर की गतिविधि (जिसमें मानव इतिहास का ईश्वरीय वाद्यवृन्दकरण, प्रकाशन और चमत्कार शामिल हैं) लगातार बनी रही—सृष्टि से लेकर देह धारण तक और उसके बाद अवसान तक। आम्भिक कलीसिया सच में एक पेंटिकोस्टल कलीसिया थी।

दूसरा, हमें भविष्यसूचक गतिविधि और धर्मविधान पवित्रशास्त्र के बीच एक अन्तर को बनाए रखना है। बहुत सी पेंटिकोस्टल कलीसियाओं में, भविष्यद्वाणी की वास्तविक वाणी को आज भी सुना जाता है। परन्तु ये आधुनिक दिन की भविष्यद्वाणियां पवित्रशास्त्र की समानता में नहीं हैं। बाइबल संबन्धी धर्मविधान अब तक नहीं खुला है, अत: इस तरह की भविष्यद्वाणियों को पवित्रशास्त्र के धर्मविधान में सम्मिलित नहीं करना चाहिए। परमेश्वर की ओर से अपने लोगों को दिये गए ये संदेश एक विशिष्ट समय, स्थान और स्थिति के लिए हैं। इसके अतिरिक्त, उनकी वैद्यता को परमेश्वर के प्रगटित वचन-बाइबल, द्वारा जांचा जाता है।

अन्तर-अधिनियम युग की भविष्यसूचक गतिविधि को इसी तरह से देखना चाहिए। ये भविष्यद्वाणियां व्यक्तिगत समुदायों की आवश्यकताओं और पवित्र प्रतिबिम्बों को प्रस्तुत करती हैं, जहां से वे उत्पन्न हुई थीं। वास्तविक भविष्यद्वाणी संप्रेषण करने का एक माध्यम था जो कि ऐतिहासिक रिकार्ड का विषय है। इसका साहित्यिक स्तर गैर-धर्मवैधानिक है, जो परमेश्वर-निर्देशित प्रक्रिया को प्रतिबिम्बित करता है जहां धर्मविधान ने रूप लिया, यह भी ऐतिहासिक रिकार्ड का एक विषय है। बाकी की बातें यह प्रमाणित करती हैं कि पुराना नियम और अन्तर-अधिनियम भविष्यद्वाणी के बीच का संबंध उस संबन्ध के सदृश्य है जो नया नियम और आधुनिक-दिन की भविष्यद्वाणी के बीच पाया जाता है।

पुराना नियम और नया नियम धर्म वैद्यानिक पवित्रशास्त्र हैं। वे परमेश्वर के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन के अन्तर्गत पराकाष्ठा की प्रक्रिया को प्रस्तुत करते हैं। पवित्रशास्त्र नियामक—अनन्तता से संबन्धित है—और हमारा शासन केवल विश्वास और आचरण के लिए है। पवित्रशास्त्र में अन्तर-अधिनियम भविष्यद्वाणी को नहीं माना गया था और आधुनिक-दिन की भविष्यद्वाणी को भी नहीं माना गया है। इनमें से कोई भी ईश्वरीय रूप से निर्देशित प्रक्रिया व विश्वव्यापी प्रयोग से होकर नहीं गई। दोनों ही समय, स्थान और स्थिति पर आधारित हैं और इसी कारण विश्वास और रीति के विषयों पर शासन करने के लिए उनके पास कोई मूलभूत अधिकार नहीं है।

अन्तर-अधिनियम युग में, विश्वास के समुदाय को भविष्यद्वाणी की वाणी की आवश्यकता थी। यद्यपि यह बाइबल (पुराना नियम) में पाई जाती थी—पुन: सुधार, चुनौती, आशा, प्रोत्साहन और पश्चात्ताप की बुलाहट के लिए—जैसा इसे समकालिक परिस्थितियों में संबोधित किया गया, इसे इन सब की भविष्यसूचक वाणी को सुनने की आवश्यकता थी। परमेश्वर अपनी बुद्धि और अनुरूपता में होकर हमारे विश्वास के समुदाय में अभी भी गतिशील है। यद्यपि हमारे पास बाइबल है (पुराना और नया नियम दोनों), परमेश्वर लगातार भविष्यद्वाणी की वाणी के साथ अपनी कलीसिया में निवेश कर रहा है। वह मनुष्य के आन्तरिक स्वभाव को जानता है (उत्पत्ति 6:5; भजन संहिता 103:14; 139; मत्ती 7:11; रोमियों 3:23)।

सभी युगों में, मनुष्य के स्वभाव और उसकी परमेश्वर की भविष्यसूचक वाणी को सुनने की आवश्यकता में कोई परिवर्तन नहीं आया है। इसी तरह से, परमेश्वर का स्वभाव भी नहीं बदला है। वह अभी भी अपनी सृष्टि से प्रेम करता है, उसकी इसके लिए योजना है, और वह प्रत्येक पीढ़ी पर अपनी योजना को सक्रिय रूप से संप्रेषित करना चाहता है।

## प्रेरितों का युग बनाम नये नियम की शिक्षा

नया नियम प्रेरितों के युग की परिकल्पना के विरुद्ध गवाही देता है और इसके साथ-साथ भविष्यद्वाणी के अवसान और अन्य आलौकिक तथ्यों की भी। इफिसियों 4:11 हमें बताता है कि परमेश्वर ने कलीसिया को ऐसे व्यक्तियों को दान स्वरूप दिया है जो प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं, प्रचारकों, याजकों और शिक्षकों के रूप में कार्य करते हैं। जो प्रेरिताई युग और चमत्कारों के अवसान के बारे में तर्क-वितर्क करते हैं, वे इस पद के लिए चयनित होने चाहिए। दूसरी ओर, अवसान-कर्त्ताओं को इस चीज़ को बनाए रखना है कि प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के कार्यालयों का अब कोई अस्तित्व नहीं है जिसका कारण उनका कैरिस्मेटिक और मनमौजी स्वभाव है।

इस स्तर के साथ समस्या इसका शुद्ध रूप से निर्णायक होना है। मानव और इस परिच्छेद के ईश्वरीय लेखक इस सूची को पूर्ण रूप से लेना चाहते होंगे। इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता है कि सूची के संबन्ध में किसी तरह की कोई भिन्नता है जो कि दूसरों का विरोध करती हो। इसमें किसी तरह का हेर-फेर करना, संक्षिप्त करना या इस सूची में दिये गए घटकों के बीच अन्तर की रेखा को खींचना इस विषय-वस्तु का उल्लंघन करना होगा।

तथापि, पौलुस ऐसा पूरी सूची में अस्थायी सीमाओं को रखते हुए करता है। परिच्छेद संकेत देता है कि इस तरह के सभी कार्यालय समाप्त हो गए। तथापि प्रश्न यह नहीं है, कौन सा? परन्तु, कब? पद 12 और 13 स्पष्ट रूप से इस प्रश्न को

संबोधित करते हैं। ये कार्यालय इस कारण दिये गए कि ''पवित्र लोग सेवकाई के काम के लिए सिद्ध किये जाएं, मसीह की देह उन्नति पाए, जब तक कि हम निम्नलिखित को प्राप्त न कर लें:

1. विश्वास की एकता
2. और परमेश्वर के पुत्र का ज्ञान
3. परिपक्व मानवता
4. मसीह के पूरे डील-डौल तब बढ़ना।''

किसी भी मसीही ने इन लक्ष्यों को पूरी तरह से प्राप्त नहीं किया है। इसलिए, इफिसियों 4:11 के सभी कार्यालयों की आवश्यकता अभी भी कलीसिया को परिपक्व करने के लिए है। ऐसा कहा जा सकता है कि भूतकाल और वर्तमान समय में कलीसिया की अपरिपक्वता और अनुपयुक्तता का प्रत्यक्ष संबन्ध उस आदर व बल दिये जाने की कमी का कारण है जिसके कारण कैरिस्मेटिक दानों को क्षति हुई है। ''परन्तु देह के वे अंग जो औरों से निर्बल देख पड़ते हैं ...यदि एक अंग दुख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुख पाते हैं'' (1 कुरिन्थियों 12:22, 26; ध्यान दें कि विषय का विशिष्ट रूप में विचार-विमर्श के अन्तर्गत उल्लेख किया गया है।)।

ध्यान देने के लिए दूसरा संदर्भ रोमियों 11:29 है, ''क्योंकि परमेश्वर अपने वरदानों से, और बुलाहट से कभी पीछे नहीं हटता।'' नि:संदेह, यहां वर्णित 'वरदानों' का संबन्ध 1 कुरिन्थियों 12 के आत्मिक वरदानों से नहीं है। इस भाव में, इस परिच्छेद का तात्कालिक संदर्भ उपरोक्त परिच्छेद से संबन्धित नहीं है। इसके अतिरिक्त, संचालन में मूल सिद्धान्त संबद्धता है। रोमियों 11:29 परमेश्वर के मनुष्य के साथ व्यवहार करने की विश्वासयोग्यता और अनुरूपता के बारे में बताता है। उसका (परमेश्वर का) अपरिवर्तनीय स्वभाव न केवल गैर-यहूदी इस्राएल को दी गई प्रतिज्ञाओं को रद्द करने से रोकता है, उसका स्वभाव उसे पूरे कलीसियाई युग में मनुष्य को आत्मा के वरदान प्रदान करने की प्रतिज्ञा को भी रद्द करने से रोकता है।

तीसरा परिच्छेद जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है वह है- प्रेरित. 2:39। इस प्रथम मसीही संदेश में, युगान्त विषय परिस्थिति में, पतरस ने घोषणा की कि पवित्र आत्मा देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा उस घटना क्रिया के साथ पूर्ण होती है जो परमेश्वर के मानव के साथ साथ रहने से है- ''तुम और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिये भी है जिसको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।'' पेंटिकोस्टल स्तर के लिए यह पद एक 'वर्गीकृत अधिकारिता' रहा है। संदर्भ बताता है कि कलीसियाई युग के आरम्भ पर, पवित्र आत्मा के आरम्भिक उण्डेले जाने पर और उसके द्वारा प्रेरित प्रगटीकरणों में, पतरस ने घोषित किया कि ये अनुभव समस्त कलीसियाई युग के लिए मानदण्ड होने चाहिए। विशिष्ट रूप से वर्णन करने के द्वारा, श्रृंखला में, वर्तमान पीढ़ी, अगली पीढ़ी, और सारी भावी पीढ़ियां- पतरस सभी पीढ़ियों के लिए इस प्रतिज्ञा के संबन्ध में विश्वास रखने के लिए एक सुस्पष्ट प्रेरितीय प्रमाण देता है।

एक चौथा परन्तु अधिक सस्पष्ट परिच्छेद है कि 1 कुरिन्थियों 1:7 के समान अन्य कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है। पौलुस ने ध्यान दिया कि कुरिन्थ के सदस्य 'सारे वचन और सारे ज्ञान में (परमेश्वर में) धनी किये गए' (1 कुरिन्थियों 1:5)। सुसमाचार के सत्य की 'पुष्टि' उनके बीच में चमत्कारिक रूप से हो रही थी ''यहां तक कि किसी वरदान की तुममें घटी नहीं'' (पद 6, 7)। हमें पद 7 के अन्त पर ध्यान देने की ज़रूरत है। पौलुस ने कहा कि कुरिन्थ के लोग धनी किये गए थे, उनके बीच सुसमाचार की चमत्कारिक रूप से पुष्टि की गई थी, और प्रत्येक आत्मिक वरदान का आनन्द लेते हुए—परन्तु एक विशिष्ट समय अवधि में—''जब कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोह रहे हो।'' उसी युगांत विषयक समय-सूची को देखते हुए पौलुस इफिसियों 4:13 और 1 कुरिन्थियों 13:10-12 को आगे रखता है। (संदर्भ का विचार-विमर्श नीचे है।) आत्मा के कैरिस्मैटिक वरदानों का अन्त होने पर है। यह अन्त प्रेरितों के युग का निष्कर्ष नहीं है या मानव इतिहास के किसी अन्य पाईंट पर। आत्मा के चमत्कारिक वरदानों का अवसान उस समय होगा जब समय अधिक न हो—जब राजा का लौटना होगा और वर्तमान सांसारिक व्यवस्था का अन्त होगा। इस समय पर, प्रचारीय प्रयास रुक जाएंगे। पाप और बिमारी का अन्त होगा। मनमौजी वरदानों की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि हमारी ईश्वरीयता के साथ—''आमने सामने''—तात्कालिक, अखण्ड सहभागिता होगी (1 कुरिन्थियों 13:12; तुलना करें 1 यूहन्ना 3:2)। यहां तक कि आलौकिक ज्ञान के वरदान इस आशीषित अवस्था में अपनी उपयोगिता को भी खो देंगे, क्योंकि मसीह की वापसी पर हम ''ऐसी पूरी रीति से पहचानेंगे जैसे हम पहचाने गए हैं'' (1 कुरिन्थियों 13:12)।

पौलुस का अन्तिम संदर्भ जिसकी संभवत: सबसे अधिक उपेक्षा की गई 2 कुरिन्थियों 3:3-11 में दिखाई देता है। इस परिच्छेद में, प्रेरित व्यवस्था के विस्तार की भव्यता की तुलना आत्मा के विस्तार के साथ कर रहा है। वह तर्क देता है, ''और यदि मृत्यु की वह वाचा जिस के अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे, यहां तक तेजोमय हुए, कि मूसा के मुंह पर के तेज के कारण जो घटता भी जाता था, इस्राएली उसके मुंह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे। तो आत्मा की वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी ?... क्योंकि जब वह जो घटता जाता था तेजोमय था, तो वह जो स्थिर रहेगा, और भी तेजोमय क्यों न होगा ?'' (2 कुरिन्थियों 3:7-9, 11)।

पौलुस दोनों विस्तारों के बीच कई रोचक समानताओं को लेकर आता है। तथापि, वर्तमान विचार-विमर्श का एकमात्र विषय व्यवस्था के अस्थायी या 'घटनेवाले' तेज की तुलना आत्मा के महान तेज से करना है। जिसके बारे में वह कहता है कि वह 'स्थायी' है। पुन: पौलुस युगांत विषय/आत्माशास्त्र का प्रमाण देता है जो आत्मा में बपतिस्मे को तथा इसके द्वारा लाए जाने वाले दानों को देखता है, मसीह के लौटने तक कलीसिया में एक स्थायी जुड़ी हुई वस्तु के रूप में।

पतरस और पौलुस के कथनों के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यदि कभी प्रेरितों का युग रहा था, तो कलीसिया का भी उसमें पाया जाना ज़रूरी है।

इस प्रकाश में, एक ऐसे दृश्य की कल्पना करना कठिन है जिसकी प्रेरितों के पुत्र की परिकल्पना में आवश्यकता हो। तीमुथियुस पर ध्यान दें। पौलुस ने तीमुथियुस पर इफिसुस की कलीसिया में याजक के रूप में कार्य करने का भार सौंपा (1 तीमुथियुस 1:3)। जब पौलुस और प्राचीनों ने तीमुथियुस पर हाथ रखे तो उसे परमेश्वर की ओर से विशिष्ट रूप से समर्थ किया गया था (1 तीमुथियुस 4:14; 2 तीमुथियुस 1:6)। तीमुथियुस के बारे में कल्पना करें कि वह अपने याजक संबन्धी कर्तव्यों को पूर्ण करने में व्यस्त है या किसी व्यक्ति की चंगाई के लिए प्रार्थना करते हुए और किसी एकमात्र बच्चे में से दुष्टात्मा को निकालते हुए। अब कल्पना करें

कि इफिसुस में (आरम्भिक कलीसिया की परम्परानुसार), उस क्षण पर, बूढ़ा प्रेरित यूहन्ना, जो भीतरी घेरे में अन्तिम था, उसने अपनी अन्तिम सांस ली और अपने स्वर्गीय प्रतिफल की ओर चला गया। क्या परमेश्वर उस अद्‌भुत कार्य करने वाली सामर्थ को रोक देगा जो उसने तीमुथियुस को दी थी या आगे प्रगति करने को चमत्कार पर रोक लगा देगा? क्या तीमुथियुस इस ज़रूरतमंद व्यक्ति को स्वीकार्य, बाइबल संबन्धी स्पष्टीकरण दे सकेगा कि पहले जिस व्यक्ति के लिए उसने प्रार्थना की थी वह क्यों चंगाई प्राप्त कर छुटकारा पा गया था परन्तु इस दूसरे व्यक्ति के साथ ऐसा क्यों नहीं हो सका? इससे स्थानीय कलीसिया की गवाही पर प्रभाव पड़ेगा? कल्पना करें कि परमेश्वर ने तीमुथियुस को जो सेवकाई सौंपी थी उस पर कितना नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। एक व्यक्तिगत स्तर पर, उसे ईश्वरीय प्रेरणा से जो आज्ञा दी गई थी वह आज्ञाकारिता के साथ अब उसकी प्रतिक्रिया देने के योग्य नहीं होगा "तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है चमका दे" (2 तीमुथियुस 1:6)।

नि:संदेह, यह दृश्य अ-तर्कसंगत है। यह परमेश्वर के स्वभाव के विरुद्ध जाता है जो अनुकूल, विश्वासयोग्य, अपरिवर्तनीय, तथा आवश्यकता में पड़े हुओं के लिए करूणामयी है। यह परमेश्वर के वचन के प्रतिकूल चलता है, जिसके बारे में हमने तर्क दिया है, कि वह 'निरन्तरता' को अपना समर्थन देता है, जबकि 'अवसान' का समर्थन करने को कोई चीज़ नहीं है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि कलीसिया अपनी सामर्थ के लिए एक प्रेरित की क्षणिक, क्षणभंगुर शारीरिक दशा पर निर्भर नहीं है, परन्तु अनन्त, पुनरुत्थित यीशु पर, जो "हमारे लिये विनती करने को सदैव जीवित है" (इब्रानियों 7:25)।

## प्रेरितों/अवसानवाद के युग का समर्थन करने के लिए नया-नियम विषय-वस्तु का प्रयोग अनुपयुक्त रूप से किया गया

अवसान थियोरी (परिकल्पना) के प्रस्तावक प्राय: 1 कुरिन्थियों 13:10 का उल्लेख करते हैं, "परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।" 'सर्वसिद्ध' नये नियम के बारे में नहीं बताता, जैसा कि वे दावा करते हैं, परन्तु यह यीशु की वापसी को बताता है जो पद 2 से स्पष्ट हो जाता है। इस संदर्भ पर अधिक तर्क करने की आवश्यकता नहीं है। तथापि, यह ध्यान देना रोचक है "सर्वसिद्ध" (टेलियन) का लिंग नपुंसक है, जबकि अनुवादित शब्द "अधिनियम" (दायथेके) अन्य स्थानों में स्त्रीलिंग है। क्या पौलुस का उद्देश्य पाठक को यह समझाना था कि इस विशेषण का संज्ञा के रूप में प्रयोग किया जाना नये नियम को प्रस्तुत करता है, उसने "सर्वसिद्ध" को भी उसी लिंग में रखा होगा-स्त्रीलिंग।

इसी तरह से, 1 कुरिन्थियों 15:8 "और सबके बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानों अधूरे दिनों का जन्मा हूँ," प्रकाशन के अन्त या धर्मविधान के अवसान की ओर संकेत नहीं करता। दमिश्क के मार्ग के अनुभव के पश्चात् भी पौलुस प्रकाशनों को प्राप्त करता रहा था। नये नियम में अन्यों ने यीशु के पौलुस पर प्रगट होने के पश्चात् प्रकाशनों को पाया था। इसके अतिरिक्त समस्त नया नियम पौलुस के दमिश्क के मार्ग पर यीशु से सामना होने के "पश्चात्" पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किया गया था। अत:, इस कथन का उल्लेख तब किसके लिए किया जाता है? पौलुस केवल इतना कह रहा है कि वे व्यक्ति जिनका उल्लेख प्रेरितों के रूप में किया गया था, वह उनमें से अन्तिम था जिसने पुनरुत्थित मसीह को देखा था।

इब्रानियों 1:1, 2 अवसानवादियों के लिए एक अन्य विख्यात प्रमाण संदर्भ है। तथापि, किसी को केवल यह संकेत देने की आवश्यकता है कि "दिन" "अन्तिम" हैं, न कि देह में यीशु का प्रकाशन। अन्यथा, लेखक स्वयं अपने नियम को मसीह के पार्थिव प्रकाशन के पश्चात्, प्रकाशन को संप्रेषित करने का प्रयास करते हुए तोड़ेगा।

प्रकाशितवाक्य 22:18,19 अवसानवादियों के प्रस्तावकों द्वारा प्रयोग किया गया अन्तिम प्रमाण संदर्भ है। इस पद में विश्वासियों को आज्ञा दी गयी है कि 'इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक' में न कुछ घटाया जाए और न कुछ बढ़ाया जाए। अवसानवादी तर्क देते हैं कि चूंकि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक धर्मवैधानिक प्रकाशन के अन्त पर आती है, अत: यह परिच्छेद अन्य किसी प्रकाशन को वर्जित करता है। इस स्पष्टीकरण के साथ कई समस्याएं हैं। सर्वप्रथम, लेखक हमें विशिष्ट रूप से बताता है कि यह वर्जित किया जाना किसके लिए है। वह सामान्य शब्दों में नहीं बोल रहा है, परन्तु केवल अपने ही शब्दों में कह रहा है- "यह भविष्यद्वाणी।" दूसरा, लेखक अपने मस्तिष्क में पूरा नया नियम नहीं रख सकता था, चूंकि इसे आकार लेना था। अत: इस पंक्ति में अधिकार का शासन दिखता है। तीसरा, अन्य पुस्तकों में इसी तरह से वर्जित किया जाना आता है। एक उदाहरण व्यवस्थाविवरण 12:32 है। क्या इस पद का अर्थ यह है कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के अलावा अन्य प्रकाशन अवैध हैं? आइये ऐसी आशा न करें।

## निष्कर्ष

इस लेख से तीन महत्वपूर्ण प्रासंगिकताओं को लिया जा सकता है। प्रथम, बाइबल में ऐसी कोई भी समीक्षा या परिच्छेद नहीं मिलता जो प्रेरितों के युग या चमत्कारों के समापन को समर्थन देने के लिए वैद्य तर्क दे। दूसरा, परमेश्वर का स्वभाव, पवित्रशास्त्र का एकीकृत संदेश और पतित मानव का निरन्तर रहनेवाला ज़रूरतमंद स्वभाव आज के संसार में चमत्कारों के लगातार होने का तर्क देता है। तीसरा, आज की कलीसिया दृढ़ बाइबल भूमि पर है जो पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और आत्मा के वरदानों द्वारा परमेश्वर के लिए प्रभावी सेवा करने हेतु समर्थ होने की खोज में रहती है। मार्गदर्शन, चंगाई, सुरक्षा और प्रबन्ध; प्रत्येक कारण से हमें परमेश्वर की खोज करनी है। इस पूर्ववर्ती आवश्यकता और अवसर के दिन में "उस वरदान को चमका दे जो तुझे मिला है" (2 तीमुथियुस 1:6)।■

**डब्ल्यू. ई. नुन्नेली**, *पीएच. डी. आरम्भिक यहूदीवाद और मसीही उद्‌भव के प्रोफेसर, इवेन्जिल विश्वविद्यालय, स्प्रिंगफील्ड मिसौरी।*